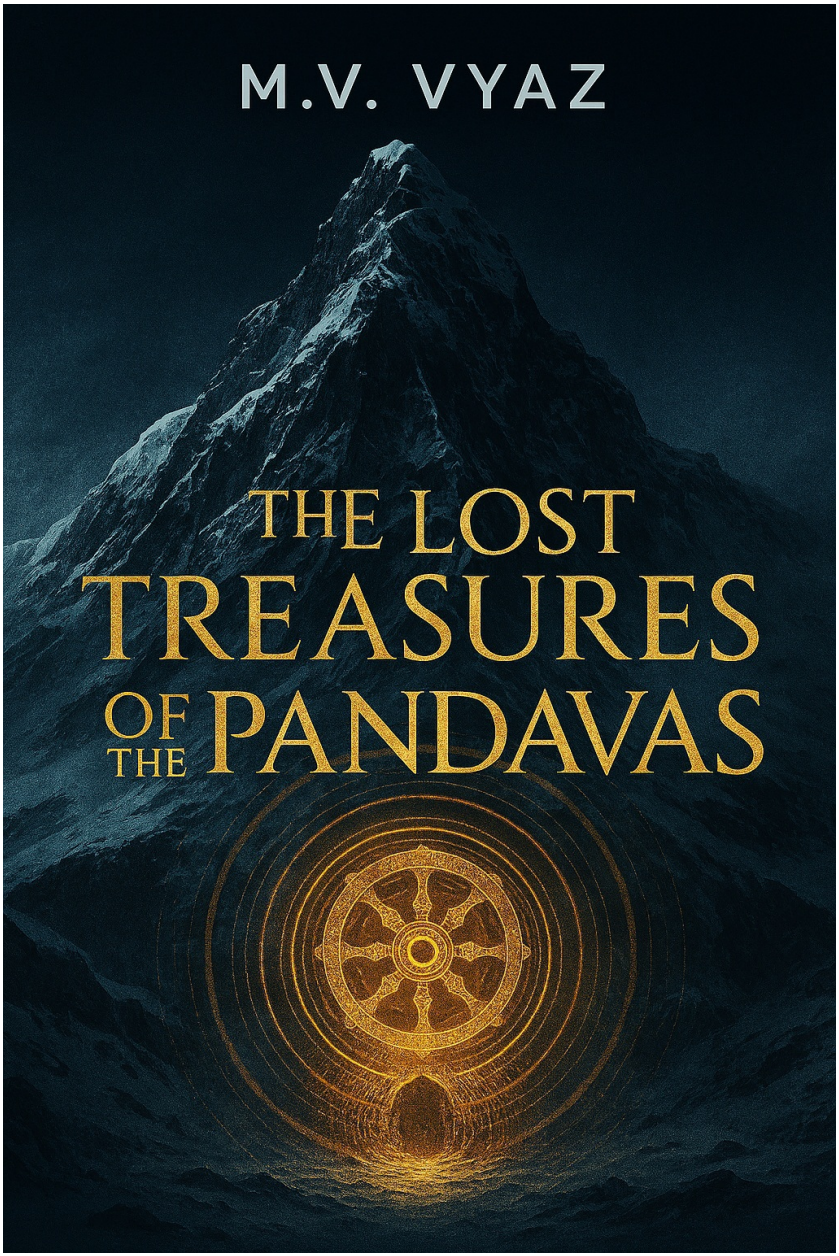

पांडवों के खोए हुए खजाने
किताब के बारे में

'पांडवों के खोए खजाने' में, महाप्रस्थान—पांडवों की हिमालय की अंतिम यात्रा—को परम उत्तरदायित्व के एक मिशन के रूप में पुनर्कल्पित किया गया है। युधिष्ठिर और उनके भाइयों को एक अत्यंत उन्नत विरासत, अस्त्रों के संरक्षक के रूप में दर्शाया गया है। ये मात्र साधारण हथियार नहीं, बल्कि वैदिक इंजीनियरिंग की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं, ऐसे उपकरण जो स्वयं पृथ्वी की मूलभूत ध्वनि प्रतिध्वनियों का उपयोग करते हैं। यह कहानी विक्रम राठौर की है, जो एक बदनाम खुफिया एजेंट है और पाँच हज़ार वर्षों से बर्फ में दबे एक रहस्य को उजागर करता है। शाश्वत, जीवित रक्षक हिमवत में छोड़े गए सुरागों के आधार पर, विक्रम कुरु वंश के सबसे बुद्धिमान लोगों द्वारा निर्मित एक तिजोरी की खोज में जुट जाता है। लेकिन जैसे-जैसे वह "धर्म चक्र" की प्राचीन सुरक्षा को समझने की कोशिश करता है, उसे पता चलता है कि पांडवों की सबसे बड़ी प्रतिभा उनके हथियारों के निर्माण में नहीं, बल्कि उन्हें दफनाने के उनके निर्णय में निहित थी।

आधुनिक जासूसी की रोमांचक कहानियों को भारतीय विरासत की शाश्वत भव्यता के साथ मिलाकर, यह उपन्यास इस संभावना को तलाशता है कि अतीत का "जादू" वास्तव में ब्रह्मांड की एक परिष्कृत समझ थी जिसे आधुनिक दुनिया अभी समझना शुरू कर रही है। यह सत्ता के आकर्षण, मुक्ति की कीमत और इस अटल सत्य के बारे में एक रोमांचक कहानी है कि धर्म के नियम पहाड़ों की तरह अपरिवर्तनीय हैं।

अंततः, पांडवों के खोए हुए खजाने प्राचीन ज्ञान को एक श्रद्धांजलि है, जो यह सुझाव देती है कि उनकी सच्ची जीत कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में नहीं, बल्कि बर्फ की खामोशी में थी, जहाँ उन्होंने आने वाली पीढ़ियों को सबसे कठिन सबक सिखाया: कि कुछ शक्तियाँ हमेशा के लिए सुप्त रहने के लिए ही बनी हैं।

लेखक: एम.वी. व्याज़

अध्याय 1

वसीयत

वसुधारा घाटी, ऊपरी हिमालय - भोर, 3102 ईसा पूर्व

वृक्ष रेखा के ऊपर की दुनिया सफेद और निर्मम नीले रंग का एक कैनवास थी, जहाँ हवा केवल गतिमान वायु नहीं थी, बल्कि एक मूर्तिकार थी, जो बर्फ और हिम से

क्षणभंगुर उत्कृष्ट कृतियाँ तराश रही थी। यह ऊबड़-खाबड़ चोटियों से होकर गरजती हुई, सृजन और क्षय का एक आदिम गीत गाती हुई, अंतहीन सफेद विस्तारों में फुसफुसाती हुई, और भोर के नवोदित प्रकाश में बर्फ के पिघलते हुए क्रिस्टलीय सामंजस्य के साथ गाती हुई। हवा का हर झोंका खुली त्वचा से गर्मी छीन लेता था, जिससे हड्डियों में गहरा दर्द रह जाता था।

इस रहस्यमय, शत्रुतापूर्ण क्षेत्र में छह आकृतियाँ धीमी गति से आगे बढ़ रही थीं। बोझ और थकान से लदे उनके कदम घुटनों तक जमी बर्फ में चरमरा रहे थे, जिससे अस्थायी निशान बन रहे थे जो बेचैन हवा से तुरंत मिट जाते थे। ठंडी हवा में साँसें घने सफेद बादलों की तरह उठ रही थीं जो विशालता में विलीन हो रहे थे, प्रत्येक साँस फेफड़ों को जकड़ रही थी जो इतनी पतली हवा के आदी नहीं थे।

वे पाँचों पांडव भाई थे—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव—और उनकी रानी द्रौपदी। लेकिन यह देवताओं की स्वर्ग की ओर जाने वाली कोई पौराणिक तीर्थयात्रा नहीं थी। यह महाप्रस्थान—महान यात्रा—की पुनर्कल्पना थी, जिसे आध्यात्मिक उत्थान के रूप में नहीं, बल्कि एक अंतिम, सुनियोजित नियंत्रण के रूप में देखा गया था। वे नश्वर राजा थे, युद्धों में निपुण और साम्राज्य के बोझ से दबे हुए, अपने रक्तरंजित विरासत का अंतिम भार ढो रहे थे। उनकी दैवीयता, यदि कभी अस्तित्व में थी भी, तो बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी थी; केवल उनकी मानवीय प्रतिभा ही शेष थी।

उनके शस्त्र, उनकी वीरता के प्रतीक, उनके द्वारा प्रविष्ट किए गए रास्तों पर बिखरे पड़े थे, पीढ़ियों को तबाह कर देने वाले संघर्ष के मूक गवाह। उनके मुकुट, परिवहन के लिए पिघला दिए गए, अब मात्र सोने के रूप में मौजूद थे। हस्तिनापुर राज्य उनके उत्तराधिकारी युवा परिक्षित के लिए सुरक्षित कर दिया गया था, एक ऐसा भविष्य जो उनके कर्मों की छाया से मुक्त था। फिर भी, उनमें से प्रत्येक अपने साथ सोने या खोए हुए साम्राज्य के भार से कहीं अधिक भारी कुछ लिए हुए था: यह भयावह ज्ञान कि जो कुछ उन्होंने धारण किया था, जो कुछ उन्होंने बनाया था, उसे फिर कभी कमतर या भले ही नेक इरादे वाले हाथों में न जाने दिया जाए।

विशालकाय दूसरे भाई भीमा, लोहे की जकड़न से मजबूत किए गए चमड़े के थैलों के भार से बुरी तरह बोझिल थे। उनके अंदर साधारण खजाने नहीं, बल्कि पिघले हुए तांबे-टिन के मोटे-मोटे पिंड थे—वही कच्चा माल जिससे कांस्य युग के परिष्कृत

हथियार बनाए जाते थे, जिन्हें वे अब दफनाने की कोशिश कर रहे थे। प्रत्येक पिंड का वजन एक वयस्क व्यक्ति के बराबर था, और उसकी सतह पर कुरु चिह्न उकेरा हुआ था, जो अब उनके प्रभुत्व की बजाय उनके बोझ का प्रतीक था। कड़ाके की ठंड के बावजूद, बर्फ से ढके उनके वस्त्रों पर पसीने की भाप निकल रही थी, जो उनके अथक परिश्रम का प्रमाण था। वे एक अनुभवी पर्वतारोही की तरह हर कदम को बड़ी सावधानी से परख रहे थे, बर्फ और छिपी दरारों को नक्शों से नहीं, बल्कि उसकी प्रकृति की सहज समझ से पढ़ रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे दूसरे लोग प्राचीन ग्रंथों को पढ़ते हैं।

"इस बर्फ ने हजारों पीढ़ियों से पहाड़ों को थामे रखा है," उसने गहरी गड़गड़ाहट के साथ कहा, उसकी आवाज विशाल सन्नाटे में खो गई। "यह हमारे रहस्यों को और भी लंबे समय तक थामे रखेगी। जरूरत पड़ने पर हजारों-हजारों साल और।"

सबसे बड़े युधिष्ठिर, जिनके चेहरे पर अनगिनत नैतिक दुविधाओं के ज्ञान और थकान की छाप थी, याक के बालों की मुड़ी हुई रस्सी से बंधे हुए ग्रंथों के डिब्बों को पकड़े हुए थे। ये प्रार्थनाएँ या धार्मिक ग्रंथ नहीं थे। इन सावधानीपूर्वक सीलबंद डिब्बों के भीतर कुरु वंश के व्यावहारिक विज्ञान का सार छिपा था—जटिल युद्ध संरचनाएँ, कुशल शासन कला, और उससे कहीं अधिक खतरनाक: अस्त्रों के लिए सटीक ध्वनिक आरेख और आह्वान क्रम। ये देवताओं से प्रार्थनाएँ नहीं थीं, बल्कि सटीक ध्वनिक सूत्र थे। ये अत्यंत उन्नत इंजीनियरिंग योजनाएँ थीं जो अनुनाद और पदार्थ की थकान के सिद्धांतों का उपयोग करके जटिल आकार की धातु को भयानक, विनाशकारी शक्ति वाले हथियारों में बदलने का वर्णन करती थीं।

उनकी आँखें, थकावट के बावजूद भी पैनी और सटीक थीं, उन्होंने घाटी के तल का अवलोकन किया। उन्होंने सूक्ष्म दरारों को देखा, एक युद्धक्षेत्र का विश्लेषण करने वाले सेनापति की रणनीतिक कुशलता से ग्लेशियर की सतह को पढ़ा, कमजोरियों की तलाश की, स्थिरता का आकलन किया। "ज्ञान सबसे घातक हथियार है," उन्होंने पहाड़ों के अंतहीन, उदासीन विस्तार पर टकटकी लगाए हुए बुदबुदाया। "अंततः, किसी भी भौतिक हथियार से कहीं अधिक तीक्ष्ण।"

अद्वितीय धनुर्धर अर्जुन चंदन की एक अकेली टहनी लिए हुए थे, जिसकी समृद्ध, सुगंधित खुशबू कड़ाके की ठंड को चीरती हुई चमत्कारिक रूप से भेद रही थी। उसके भीतर, तेल लगे याक के चमड़े में सावधानीपूर्वक लिपटे हुए, स्वयं अस्त्र रखे थे—ये

पौराणिक बाण नहीं थे, बल्कि उन्नत कांस्य-टिन मिश्र धातु के बाण थे, जिनमें संरचनात्मक मजबूती बढ़ाने के लिए उल्कापिंड से प्राप्त लोहे के सूक्ष्म अंश मिलाए गए थे। इनकी सतहों पर सूक्ष्म फ्रैक्टल पैटर्न उकेरे गए थे, ये सजावट के लिए नहीं, बल्कि विशिष्ट कंपन आवृत्तियों को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए जटिल ध्वनिक अनुनादकों के रूप में कार्य करते थे। स्थिर अवस्था में भी, वे हल्की सी गुनगुनाहट करते थे, उनमें जड़े क्वार्ट्ज क्रिस्टल पृथ्वी की अपनी निम्न-आवृत्ति स्पंदन के साथ प्रतिध्वनित होते थे, एक आदिम कंपन जिसे सहदेव ने बड़ी मेहनत से मानचित्रित किया था।

अर्जुन के भार के केंद्र में, उसकी अपार ऊर्जा को समाहित करने के लिए सावधानीपूर्वक सीसे के आवरण में बंद, ब्रह्मसिरा था। वह परम शस्त्र था। उसकी उपस्थिति मात्र से ही हवा से ठंडक मिटती प्रतीत होती थी। "ये पृथ्वी की धड़कन का गीत गाते हैं," अर्जुन ने श्रद्धा और भय से भरी शांत स्वर में कहा। "अगर किसी ने इसे गलत तरीके से छुआ, तो यह ऐसे क्रोध से जवाब देगा जो संसार की नींव तक हिला सकता है।"

जुड़वां भाई नकुल और सहदेव दृढ़ संकल्प के साथ चल रहे थे। नकुल के पास छोटी-छोटी पेटियां थीं जिनमें सटीक औषधीय सामग्रियां और उच्च ऊंचाई पर जीवित रहने का सामान था। सहदेव, जो सबसे छोटा था और जिसका दिमाग गणनाओं से भरा रहता था, माप के उपकरण और विस्तृत तारामंडल मानचित्र लिए हुए था। वह शायद उन सबमें सबसे प्रतिभाशाली था; एक खगोलशास्त्री, एक अभियंता और एक गहन विचारक, जो यह समझता था कि जिन 'देवताओं' की मनुष्य पूजा करते हैं, वे केवल ऐसे पैटर्न हैं जिन्हें वे अभी तक पढ़ना नहीं सीख पाए हैं, प्रकृति की शक्तियां हैं जिन्हें वे समझना चाहते हैं और कभी-कभी, उनका उपयोग करना चाहते हैं। उनकी दूरदृष्टि ने ही उन वस्तुओं की कल्पना की थी जिन्हें वे अब ले जा रहे थे।

उनकी रानी द्रौपदी चुपचाप चल रही थी, अपने सीने से लगाए हुए गहरे रंग के पत्थर के संदूक को थामे हुए। संदूक में गहने तो थे, लेकिन हर एक टुकड़ा उसके बिखरे हुए जीवन का एक अंश था। हर एक गहना एक कहानी कहता था—कुरुक्षेत्र के नरसंहार में खोए बेटों की, जीवन बचाने के लिए कुर्बान की गई इज्जत की, और एक ऐसे जीवन की जो सम्मान के पात्र होने के बजाय एक पुरस्कार की तरह जिया गया। पुरोहितों ने उसे अग्नि से जन्मी घोषित किया था; अब उसे कोई गर्माहट महसूस नहीं

होती थी, बस एक असहनीय आंतरिक ठंडक महसूस होती थी।
वे अंतिम चढ़ाई की चोटी पर पहुंचे, और उनके सामने पौराणिक वसुधारा घाटी खुल गई।
यह एक विस्मयकारी, भयावह सौंदर्य का नज़ारा था। झरने बीच में ही जम गए थे, क्रिस्टलीय धाराएँ हल्की, नवोदित सूर्य की रोशनी को पकड़ रही थीं, क्षणभंगुर रत्नों की तरह झिलमिला रही थीं। स्वर्गारोहिणी की पवित्र चोटी, उनका अंतिम गंतव्य, एक अकल्पनीय नीले आकाश के सामने उभर रही थी, उसका शिखर आकाश को भेद रहा था। और वहीं, सीधे हिमनद में खुदी हुई, वह प्रवेश द्वार था जिसकी वे तलाश कर रहे थे—एक गुफा का मुँह, एक प्राकृतिक दरार, जो अब हिमनद की गहरी छाया में एक अलौकिक, कोमल नीली रोशनी से जगमगा रही थी।
युधिष्ठिर ने अपना हाथ उठाया और वे सब रुक गए, अपने लक्ष्य के सामने उनकी सामूहिक थकान क्षण भर के लिए भुला दी गई। "यहाँ," उन्होंने धीमी लेकिन विशाल सन्नाटे में गूंजती हुई आवाज़ में कहा। "यहाँ हम संसार से, सत्ता के लालच से, विनाश के चक्र से अपना अंतिम बंधन तोड़ते हैं।"
उसने अपनी छड़ी को बर्फ पर एक बार, दो बार, तीन बार थपथपाया और गूंज को ध्यान से सुना, मानो कोई कुशल कारीगर अपनी सामग्री का आकलन कर रहा हो। संतुष्ट होकर उसने सिर हिलाया। हिमनदी की संरचना मजबूत, स्थिर और भार वहन करने के लिए तैयार थी।
वे नीले गिरजाघर में उतरे।
अंदर, अपवर्तित सूर्यप्रकाश बर्फ को भेदकर विशाल जमे हुए प्रकाश स्तंभों का निर्माण कर रहा था, मानो एक अद्भुत प्राकृतिक वास्तुकला हो। हवा में हल्की सी गूंज थी, एक गहरी, व्यापक ध्वनि जो मानव श्रवण सीमा के बिल्कुल किनारे पर थी, एक ऐसी ध्वनि जो न केवल उनके कानों में बल्कि उनकी हड्डियों तक गूंज रही थी। भीम की भारी साँसें विशाल, गिरजाघर जैसे स्थान में दूर की गड़गड़ाहट की तरह गूँज रही थीं। इसके केंद्र में, ठीक उसी स्थान पर जहाँ सहदेव की गणनाओं ने संकेत दिया था, एक प्राकृतिक कुआँ था, जो घोर अंधकार में डूब रहा था।
उन्होंने अभ्यासपूर्ण मौन में काम किया, एक ऐसी लयबद्ध कार्यप्रणाली जिसे कई दिनों की अथक योजना के बाद परिपूर्ण बनाया गया था।
सबसे पहले, कुएँ की तलहटी में सावधानीपूर्वक रखी गई सोने की ईंटें—जो मूल्यवान

भार और उनकी भौतिक संपत्ति के अंतिम अवशेष दोनों का काम करती थीं। इसके बाद, ज्ञान से भरे ग्रंथ के डिब्बे, जिन्हें नमी और समय के निरंतर प्रवाह से बचाने के लिए सावधानीपूर्वक सीलबंद किया गया था, जिनमें उनके विनाश को पुनः उत्पन्न करने की क्षमता थी। द्रौपदी ने अपने लाख से सजे डिब्बे को बड़ी सावधानी से, लगभग अनुष्ठानिक ढंग से रखा, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं दिख रहा था, फिर वह पीछे हट गईं, कुछ नहीं बोलीं। अंत में अस्त्र रखे गए, प्रत्येक को सहदेव की सटीक योजना के अनुसार रखा गया, सीमित स्थान में सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखने के लिए सावधानीपूर्वक गणना किए गए क्रम में व्यवस्थित किया गया।

इन सब के मूल में, उन्होंने ब्रह्मसिरा को नीचे उतारा।

अर्जुन के हाथ, जो आमतौर पर इतने स्थिर रहते थे, सीसे से बने गोले को उसकी अंतिम स्थिति में रखते समय स्पष्ट रूप से कांप रहे थे। "यह एक शहर को तबाह कर सकता है," उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, उसमें समाहित अपार शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा था।

"या फिर दुनिया को नया रूप दे," युधिष्ठिर ने छिपी हुई मशीन पर टकटकी लगाए उत्तर दिया। "इसीलिए इसे हमेशा के लिए निष्क्रिय रहना होगा।"

उन्होंने कुएँ को विशाल, सपाट पत्थरों से ढक दिया, हर पत्थर अपने पड़ोसी पत्थर से पूरी तरह से जुड़ गया। फिर भीम ने, अपनी अपार, पौराणिक शक्ति के बावजूद, एक विशाल शिलाखंड को उसकी जगह पर लुढ़का दिया—पाँच टन ग्रेनाइट का एक ऐसा प्राकृतिक अवरोध जिसे न केवल हटाने के लिए, बल्कि यहाँ तक कि उसे खोलने के लिए भी एक छोटी सेना की आवश्यकता होगी।

लेकिन असली जाल तो सहदेव ने ही रचा था।

वह घंटों तक काम करता रहा, उसकी पतली उंगलियां जटिल आकृतियां उकेरती रहीं, गुंबद के ऊपर बर्फ में एक सटीक सर्पिल ज्यामिति उकेरती रहीं—धर्म चक्र। लेकिन यह महज़ एक धार्मिक प्रतीक नहीं था। यह अद्वितीय परिष्कार का एक ध्वनिक प्रतिध्वनिक यंत्र था, जिसे अस्त्रों की सहज सामंजस्यपूर्ण आवृत्तियों को ग्लेशियर की संरचना में ऊपर की ओर प्रवाहित करने के लिए सावधानीपूर्वक डिज़ाइन किया गया था।

धरती पर मौजूद हथियार ध्वनि उत्पन्न करेंगे। ऊपर जमी बर्फ सुनेगी। और घाटी के किनारे पर नाजुक ढंग से टिके विशाल बर्फ के टीले—ध्वनि के सहारे स्थिर रहेंगे, एक

नाजुक ऊर्जा के सामंजस्य से। हथियारों को हटा दो, सामंजस्य भंग हो जाएगा, और पहाड़ हिंसक उथल-पुथल के साथ जाग उठेगा।
सहदेव पीछे हट गए और अपनी कृति का निरीक्षण करने लगे। फिर, एक अंतिम, सुनियोजित क्रिया के साथ, उन्होंने याक के बालों से बनी पतली रस्सियों को - कोई साधारण रस्सी नहीं, बल्कि विशेष रूप से तैयार की गई, अपनी प्रतिध्वनि गुणों के लिए प्रसिद्ध - बर्फ में गाड़ दिया, जिससे ब्रह्मसिर चक्र ऊपर स्थित चक्र से जुड़ गया। जाल तैयार हो चुका था।
युधिष्ठिर ने प्राचीन अधिकार से गूंजती आवाज में कहा, "संतुलन बिगाड़ो, और हिमवत अपना संतुलन पुनः प्राप्त कर लेगा। वह परम रक्षक बन जाएगा।"
जैसे ही सूरज अपने चरम पर पहुंचा, आकाश सुनहरे और सफेद रंगों से जगमगा उठा, वे गुफा से बाहर निकले। तापमान में स्पष्ट रूप से वृद्धि हो रही थी, जो एक प्राकृतिक चक्र है, और उन्होंने इसे देखने से पहले ही सुन लिया - नवगठित प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर घाटी की दीवार से एक गहरी, गूंजती हुई कराह सुनाई दी।
"चलो," भीमा ने आदेश दिया, उसकी आवाज में जल्दबाजी झलक रही थी।
वो भागे।
उनके पीछे, दोपहर की हल्की धूप की गर्मी से ग्लेशियर का नाजुक, नवस्थापित संतुलन भंग हो गया, और महल के आकार का एक हिमखंड किनारे से अलग होकर गिर पड़ा। यह भयानक, धीमी गति से, अनंत काल तक मौन, राजसी ढंग से नीचे गिरता रहा, फिर गुफा के ठीक ऊपर ढलान से टकराया। आवाज़ केवल तेज़ नहीं थी; यह दुनिया के अंत के समान थी, एक विनाशकारी गर्जना जो धरती और हवा में गूंज उठी।
बर्फ और हिम एक अनियंत्रित धारा के रूप में नीचे गिरते गए, प्रवेश द्वार को पचास मीटर ठोस सफेद बर्फ के नीचे दबा दिया, मानो एक अंतिम, अडिग कब्र बन गया हो। जब गड़गड़ाहट शांत हुई, तभी वे दौड़ना बंद कर पाए; उनकी छाती फूल रही थी, दिल उनकी पसलियों से टकराते हुए बेतहाशा धड़क रहा था। गहरी और पूर्ण शांति ने घाटी को फिर से अपने कब्जे में ले लिया।
भीम ने धीरे-धीरे अपना खाली थैला उठाया, उसके विशाल कंधे सोने से भी कहीं अधिक भारी बोझ से झुक गए थे। अर्जुन ने अपनी आँखें बंद कर लीं, उसके होंठ बिना शब्दों के प्रार्थना कर रहे थे, किसी विशेष देवता को नहीं, बल्कि उस असीम शक्ति को

जिसे उन्होंने अभी-अभी देखा था। द्रौपदी ने कुछ फुसफुसाया जिसे उनमें से कोई नहीं सुन सका, एक कोमल, दुख भरी विदाई।
युधिष्ठिर, जो सदा एक व्यावहारिक नेता थे, ने दबी हुई गुफा से मुंह मोड़ लिया और स्वर्गारोहिणी की ओर देखा, जो उनका अंतिम सांसारिक गंतव्य होगा। उन्होंने युगों के अनुभव से भरी आवाज़ में कहा, “यदि कोई योग्य व्यक्ति इसे पा ले, तो हिमवत मार्ग दिखाएगी। यदि कोई लालची व्यक्ति इसे खोजे...” वे रुके, उनकी निगाह विशाल, उदासीन पर्वतों पर घूम गई। “पर्वत सब याद रखता है। और वह क्षमा नहीं करता।”
वे आगे बढ़ते गए, हिमालय की विशालता के सामने उनकी आकृतियाँ क्षीण होती चली गईं, वे अपने पीछे मिथक नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक स्मारक छोड़ गए—इंजीनियरों के ज्ञान, राजाओं की धूर्तता और उन लोगों की निर्ममता से निर्मित एक आत्मरक्षात्मक तिजोरी, जिन्होंने अपनी पूरी दुनिया को जलते हुए देखा था।
गुफा सो रही थी। पहाड़ यादों में डूबे हुए थे। और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का पहिया, पत्थर की तरह स्थिर, घूमता रहा।

अध्याय दो

द गैम्बिट

मुंबई पेंटहाउस — वर्तमान समय
भिक्षु की मृत्यु व्यक्तिगत नहीं थी। विक राठौर ने वर्षों से हथियार नहीं उठाए थे; ऐसे क्रूर तरीके तो कमज़ोर लोगों के लिए थे। उनके औज़ार एल्गोरिदम, एन्क्रिप्शन कुंजी और वैश्विक गुप्त वित्त का जटिल जाल थे। उस बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु उनके लिए खून और बिटकॉइन से लिखे गए बहीखाते में एक और लेन-देन मात्र थी—एक डिजिटल अनुबंध पूरा हुआ, चुप्पी खरीदी गई। वाराणसी में गुप्त मुलाकात के बाद भिक्षु केवल तीन दिन तक जीवित रहे, बस इतना समय कि वे एक कसकर लिपटा हुआ प्राचीन ग्रंथ सौंप सकें और हिमवत के प्रकोप के बारे में अपनी अंतिम चेतावनी फुसफुसा सकें।
"दुखद दुर्घटना" की एन्क्रिप्टेड न्यूज़ फ़ीड देखते हुए विक ने तब सोचा, "मूर्ख! क्रोध केवल मनुष्यों द्वारा ही उत्पन्न होता है। और मैं, दूसरों से कहीं अधिक, इसे उत्पन्न करता हूँ।"

अब, मुंबई की शाम की अथाह हलचल से 38 मंजिल ऊपर, विक उस असली इनाम को निहार रहा था जो उस मरते हुए आदमी ने उसे बेचा था। नीचे शहर जगमगा रहा था, बिजली की रोशनी का एक विशाल तारामंडल, जिसकी निरंतर गूंज उसके पेंटहाउस के कांच से टकराकर एक धीमी, मंद धड़कन की तरह सुनाई दे रही थी। पेंटहाउस के नियंत्रित अंधेरे में होलोग्राफिक डिस्प्ले जगमगा रहा था, जिस पर संस्कृत के अक्षर ऐसे प्रदर्शित हो रहे थे मानो अपनी आंतरिक रोशनी से स्पंदित हो रहे हों, मानो हवा में झिलमिलाते जुगनुओं की तरह नाच रहे हों। विक की विशेष रूप से निर्मित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) - सिद्धार्थ, जिसका नाम उन्होंने रखा था, क्योंकि उन्हें एक प्रबुद्ध व्यक्ति के नाम पर आधुनिक बुद्धिमत्ता प्रणाली का नामकरण करने की विडंबना समझ में आ रही थी - अमानवीय गति से प्राचीन ग्रंथ का विश्लेषण कर रही थी। यह उन डेटाबेस का मिलान कर रही थी जिन्हें विक ने एक दशक में संकलित किया था: अज्ञात पुरातात्विक सर्वेक्षण, भूले हुए भाषाई पैटर्न, ऐतिहासिक मौसम डेटा और भूवैज्ञानिक विसंगति रिपोर्ट।

स्क्रीन पर एक स्थान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया: हिमालय की गहराई में, सुदूर वसुधारा घाटी के पास सटीक निर्देशांक। उनके नीचे, सिद्धार्थ द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित दो शब्द लिखे थे: हिमवत कोष। पर्वत का खजाना।

विक की धड़कन तेज़ नहीं हुई—वह बहुत पहले ही ऐसी आदिम भावनाओं से उबर चुका था। उसके चेहरे पर तटस्थ विश्लेषण का भाव बना रहा, लेकिन उसकी पतली और सटीक उंगलियां उसकी आरामदायक कुर्सी के पॉलिश किए हुए कार्बन-फाइबर आर्मरेस्ट पर एक बार हल्की सी थपथपाईं। उस ग्रंथ में अस्त्रों का ज़िक्र था, जो देव-राजाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले दिव्य हथियार थे। विक देवताओं में विश्वास नहीं करता था; वह शक्ति में विश्वास करता था। और अगर इन कथाओं का एक अंश भी सच था, अगर पांडव सचमुच दिव्य राजकुमार नहीं बल्कि प्राकृतिक शक्तियों का उपयोग करने वाले प्रतिभाशाली अभियंता थे... तो यह एक अमूल्य पुरस्कार था।

वह आगे की ओर झुका, उसकी परछाईं क्षण भर के लिए प्राचीन लिपि पर आ गई। "सिद्धार्थ, इन निर्देशांकों का मिलान हिमालय क्षेत्र के उच्च-स्तरीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों से करो। असामान्य भूकंपीय मापों और ध्वनिक विसंगतियों को प्राथमिकता दो। 20 हर्ट्ज़ से नीचे के किसी भी आवृत्ति के अवरक्त डेटा पर विशेष ध्यान दो।"

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) खामोशी से चल रही थी, उसके उप-प्रोसेसर घूम रहे थे।

डिस्प्ले पर डेटा तेजी से प्रदर्शित हो रहा था: थर्मल इमेजिंग ओवरले, सूक्ष्म भू-हलचलों को दर्शाने वाले भूकंपीय ग्राफ, और फिर कुछ दिलचस्प। एक लगातार, कम आवृत्ति वाली गूंज। 2019 में एक गुप्त चीनी सर्वेक्षण दल द्वारा इसका पता लगाया गया था, जिसे "उपकरण त्रुटि" बताकर खारिज कर दिया गया था और सार्वजनिक रिकॉर्ड से हटा दिया गया था। लेकिन विक के अवैध रूप से प्राप्त डीप-स्कैन अभिलेखागार में मूल, अप्रतिबंधित डेटा मौजूद था।

7.83 हर्ट्ज़।

पृथ्वी के स्वयं के विद्युत चुम्बकीय अनुनाद की सटीक आवृत्ति—जिसे आधुनिक विज्ञान शुमान अनुनाद कहता है।

विक मुस्कुराया। उसकी मुस्कान ठंडी और शिकारी जैसी थी, जो उसकी चालाक आँखों तक शायद ही कभी पहुँचती थी। साधु ने अपनी तमाम निराशावादी चेतावनियों के बावजूद उसे एक अकाट्य सत्य बता दिया था: पांडव वास्तव में इंजीनियर थे। और उन्होंने कुछ अद्भुत बनाया था।

जब वह काम कर रहा था, सूरज पूरी तरह डूब चुका था और नीचे मुंबई शहर चकाचौंध से जगमगा रहा था, एक चकाचौंध भरा, भयावह दृश्य। यह एक ऐसा शहर था जो कभी सचमुच सोता नहीं था, एक अव्यवस्थित उत्कृष्ट कृति जिस पर उसने अपने तरीके से महारत हासिल कर ली थी। उसने इस जगमगाते महानगर की छाया में एक साम्राज्य खड़ा किया था - न केवल कलाकृतियों का, बल्कि रहस्यों का, प्रभाव का, और उस मुद्रा का जो पैसे से भी अधिक मायने रखती थी: स्वयं सत्ता का।

वह कभी भारत की विदेशी खुफिया सेवा, आरAW में काम कर चुका था। विशेष अभियान, ऐसे अभियान जिनका आधिकारिक रिपोर्टों में कभी जिक्र नहीं होता था, वे अभियान जिनमें नैतिक सीमाएं धुंधली होकर मिट जाती थीं। वह इसमें माहिर था, बल्कि प्रतिभाशाली था, जब तक कि अफगानिस्तान के बीहड़ इलाकों में एक विनाशकारी अभियान नहीं हुआ। उसने ऐसे आदेशों का पालन किया था जिनसे आम नागरिकों की भारी जान जा सकती थी, लेकिन आखिरी क्षण में उसने इनकार कर दिया, जिससे निर्दोष लोगों की जान तो बच गई लेकिन मिशन विफल हो गया। उसे इसका इनाम मिला: चुपचाप, अपमानजनक तरीके से सेवामुक्त कर दिया गया, उसकी वफादारी को बोझ मान लिया गया। तब उसे किसी भी स्वामी की सेवा करने की मूलभूत खामी का एहसास हुआ: कोई और हमेशा आपकी लगाम थामे रहता है।

तो वह उस बंधन से मुक्त हो गया। खुफिया तंत्र के भीतर उसने गुप्त रूप से जो विशाल, परस्पर जुड़े नेटवर्क बनाए थे, उनमें गायब हो गया, अपने साथ इतनी गोपनीय जानकारी ले गया जिससे उसे सुरक्षा मिल सके और इतने संपर्क बना सके जिससे वह कुछ ऐसा बना सके जो किसी भी सरकार के बस की बात नहीं थी।
वह असंभव चीज़ों से निपटता था। 1945 में नष्ट हो चुकी रेम्ब्रांट की एक कलाकृति, सीडीसी द्वारा नष्ट माना गया एक जैविक हथियार का फार्मूला, हाल ही में मृत एक कुलीन व्यक्ति के ऑफशोर बैंकिंग कोड। और अब, शायद, इन सबसे कहीं अधिक मूल्यवान कुछ: प्राचीन हथियार जो आधुनिक दुनिया को सचमुच नया रूप दे सकते हैं, न कि कच्चे विस्फोटों से, बल्कि मौलिक शक्तियों के परिष्कृत नियंत्रण से।
उसने अपना संदेश बड़ी सावधानी से तैयार किया, हर शब्द और हर छिपे हुए अर्थ को सोच-समझकर गढ़ा। उसने इसे ऐसे मानकों के अनुसार एन्क्रिप्ट किया जिसे तोड़ने में क्वांटम कंप्यूटरों को दशकों लग जाएंगे, और फिर इसे डिजिटल अंधकार में छोड़ दिया, मानो एक ऐसा जाल फेंका हो जहाँ केवल सबसे खतरनाक शिकारी ही तैरते हों।
हिमालयी अभियान। वसुधारा क्षेत्र। महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोज। क्रिप्टो मुआवजा। गोपनीयता अनिवार्य। विशेषज्ञता आवश्यक: उच्च-ऊंचाई संचालन, भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, ड्रोन टोही। पूछताछ: [संपर्क का पता गुप्त रखा गया है]
उन्होंने खजाने का जिक्र नहीं किया। उन्होंने पांडवों का जिक्र नहीं किया। उन्होंने हथियारों का तो जिक्र बिल्कुल नहीं किया। असली खिलाड़ी, जिनमें कौशल, चालाकी और निर्ममता का सही मिश्रण होता है, वे छिपे हुए अर्थ को समझ जाते।
विक अपनी कुर्सी से उठा और खिड़की के पास चला गया। नीचे शहर फैला हुआ था, मानो इंसानों का उमड़ता हुआ सागर। 80 लाख लोग अपनी छोटी-छोटी जिंदगियां जी रहे थे, छोटे-छोटे सपने देख रहे थे। शायद कभी वह भी उन्हीं की तरह था—नैतिकता के बंधन में बंधा हुआ, कानून की सीमाओं में जकड़ा हुआ। वह आदमी मर चुका था। उसने उसे उसी दिन मार डाला था जिस दिन उसने अपने पहले मुखबिर को मारा था, उस समय जब वह खुद को यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि मकसद को पाने के लिए कोई भी तरीका जायज़ है। अब उसे जायज़ ठहराने की कोई परवाह नहीं थी। बस उसका लक्ष्य था।
उसके फोन में वाइब्रेशन हुई। पहला जवाब, जो एक दर्जन प्रॉक्सी सर्वरों से होकर

गुजरा, गुमनाम था, जिसका पता लगाना असंभव था। फिर दूसरा। और फिर तीसरा।

अध्याय 3

परदा

पुरानी दिल्ली — चांदनी चौक बाजार

चांदनी चौक की गलियाँ जीवन की एक अव्यवस्थित लय से गूंज रही थीं: फेरीवालों की लगातार आवाज़ें, हाथगाड़ियों की खड़खड़ाहट, सड़क किनारे मिलने वाले खाने का खट्टा-मीठा स्वाद डीजल के धुएं की हल्की, तीखी गंध के साथ घुलमिल रहा था। साधारण से स्थानीय परिधान में लिपटी अवंतिका शर्मा, एक जर्जर मेहराब के पास भीड़ में गुम हो गईं, उनकी उपस्थिति धुएं के एक झोंके की तरह क्षणभंगुर थी। एक निगरानी राइफल के उन्नत स्कोप से, वह एक छोटे स्तर के हथियार डीलर को डेड ड्रॉप करते हुए देख रही थीं। यह हथियार, एक चिकनी, साइलेंसर लगी 7.62 मिमी की राइफल, गोली चलाने के लिए नहीं थी; यह निगरानी के लिए थी। उनका निशाना डीलर नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपा रहस्य था: विक्रम राठौर। वह तीन साल से विक का पीछा कर रही थीं, एक परछाई की तरह हमेशा एक कदम पीछे, उसे धुएं की तरह अपनी उंगलियों से फिसलते हुए देखती हुई।

उसके ईयरपीस में कर्कश आवाज आई, शमशेर की कटी-फटी आवाज एक जानी-पहचानी दखलंदाजी थी। "शमशेर ने संपर्क न होने की सूचना दी है। टारगेट आया ही नहीं। बस वही आम घटिया बदमाश।"

"बेशक, वो है," अवंथिका ने धीमी, भारी आवाज़ में कहा। विक राठौर ऐसी गलतियाँ नहीं करता था जैसे कि गुप्त डेटा लीक करना। वो कई स्तरों की गोपनीयता का इस्तेमाल करते हुए, गुप्त तरीकों से काम करता था। लेकिन उसका नेटवर्क कभी-कभी ऐसी गलतियाँ कर देता था, और वो दुर्लभ गलतियाँ ही अवंथिका के लिए एकमात्र सहारा थीं। "अपनी जगह पर डटे रहो," उसने निर्देश दिया। "भीड़ पर चेहरे की पहचान करो। उसने किसी को भेजा है। विक इतना सतर्क है कि वो अपने संसाधनों पर नज़र रखता ही होगा।"

जब उसकी फील्ड टीम काम कर रही थी, अवंतिका ने कुछ पल के लिए निराशा का अनुभव किया। विक्रम राठौर भी कभी रॉ में था, ठीक वैसे ही जैसे वह अब थी। दोनों

ने खुफिया अकादमी के उन्हीं प्रतिष्ठित गलियारों में पढ़ाई की थी, उन्हीं क्रूर प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण लिया था, और छल, खोज और खात्मे के एक ही सबक सीखे थे। फर्क सिर्फ इतना था कि उसने राष्ट्रीय सुरक्षा की नाजुक नींव को थामे रखने का फैसला किया था, जबकि उसने खुद वही बन जाने का फैसला किया था जिसका शिकार करने के लिए उसे प्रशिक्षित किया गया था। उसका हैंडलर उसे 'भूत' कहता था। वह, अधिक व्यावहारिक रूप से, उसे 'लक्ष्य' कहती थी।

उसका निजी फ़ोन, जिसे वह डार्क वेब और अवैध संचार चैनलों की निगरानी के लिए रखती थी, एक एन्क्रिप्टेड सिग्नल से वाइब्रेट हुआ। उसने फ़ोन निकाला, उसे पहले से ही पता था कि उसे क्या मिलेगा। विक का विज्ञापन, एन्क्रिप्टेड चैनलों के माध्यम से प्रसारित, अंडरवर्ल्ड को एक संदेश।

अवन्तिका ने इसे तीन बार पढ़ा, उसका दिमाग तेज़ी से चल रहा था, हर निहितार्थ, हर छिपे हुए संकेत को समझने की कोशिश कर रहा था। "हिमालयी अभियान। वसुधारा क्षेत्र।" वह उस इलाके को जानती थी—दूरदराज, सीमावर्ती क्षेत्र, राजनीतिक रूप से संवेदनशील, और भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों के अनुसार, अत्यधिक अस्थिरता से ग्रस्त। वह किसका शिकार कर रहा था? उसके पेट में एक ठंडी, कठोर गांठ सी बन गई। विक मिथकों का पीछा नहीं करता था। वह सत्ता का पीछा करता था।

उसने अपनी गोपनीय खुफिया फाइलें निकालीं और "वसुधारा" के बारे में जानकारी मिलाई। कोई भी ऐसी जानकारी नहीं मिली जिससे किसी विशिष्ट खतरे या लक्ष्य का संकेत मिले। लेकिन कुछ पुरानी रिपोर्टें थीं—स्थानीय लोककथाएं, सीमावर्ती गांवों से दबी आवाज़ में सुनाई जाने वाली कहानियां, एक छिपी हुई गुफा के बारे में, एक खजाने के बारे में, कुछ ऐसा जो पांडव राजाओं ने अपनी अंतिम, भाग्यपूर्ण यात्रा से पहले गुप्त रूप से छिपा रखा था।

आधिकारिक रिपोर्टों ने इन्हें मिथक बताकर खारिज कर दिया था।

लेकिन जैसा कि वह जानती थी, कभी-कभी मिथकों में गहरे सत्य छिपे होते हैं। खासकर जब विक राठौर जैसे लोग शामिल हों। उनमें दूसरों द्वारा असंभव माने जाने वाली बातों को उजागर करने की अद्भुत क्षमता थी।

उसने पाँच सेकंड से भी कम समय में अपना फैसला लिया, एक ऐसा चुनाव जो उसके पूरे करियर, शायद उसकी पूरी ज़िंदगी की दिशा बदल देगा। "शमशेर, अपना सामान पैक करो। मुझे तीस मिनट में सुरक्षित ठिकाने पर पहुँचाना है। तुरंत।"

"मैडम, ऑपरेशन—"
"यह काम पूरा हो गया है। अब नई प्राथमिकता है। पूरी निगरानी रिपोर्ट को विश्लेषण के लिए भेजें, और हिमालयी खुफिया जानकारी के साथ उच्च स्तरीय मिलान के लिए चिह्नित करें। मैं गहराई से जांच कर रहा हूँ।"
दरियागंज की एक शांत गली में स्थित, एक परिवर्तित गोदाम में बने सुरक्षित ठिकाने पर वापस आकर, अवंतिका ने अपनी नई गुप्त पहचान बनाने की सावधानीपूर्वक प्रक्रिया शुरू की। अब वह रॉ एजेंट अवंतिका शर्मा नहीं, बल्कि डॉ. अन्या सिंह थीं—जो इतिहासकार, भू-पुरातत्वविद् और प्राचीन भारतीय सभ्यताओं की विशेषज्ञ थीं। यह पहचान पूरी तरह से मनगढ़ंत नहीं थी। उनके पास सचमुच भू-पुरातत्व में डॉक्टरेट की उपाधि थी, और उनका शोध प्रबंध भूकंपीय गतिविधि और प्राचीन संरचनात्मक अखंडता पर आधारित था। उन्होंने सचमुच वैदिक इंजीनियरिंग अवधारणाओं और प्राचीन निर्माण तकनीकों पर शोध पत्र प्रकाशित किए थे, जिन्हें उनके साथियों ने अक्सर अत्यधिक अनुमानपूर्ण बताकर खारिज कर दिया था। वह जानती थीं कि गुप्त रूप धारण करने के लिए, केवल आवरण धारण करना नहीं, बल्कि स्वयं आवरण बन जाना आवश्यक था। उन्होंने वर्षों तक अन्या सिंह की ऐसी छवि गढ़ने में समय बिताया था जो उनके वास्तविक जीवन से स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में रह सके, एक विश्वसनीय विशेषज्ञ जिसकी योग्यताएं जांच-परख में खरी उतरें।
उसने विक के रहस्यमय विज्ञापन का जवाब बड़ी सटीकता से तैयार किया। यह इतना तकनीकी था कि उसकी निर्विवाद विशेषज्ञता साबित हो सके, लेकिन इतना अस्पष्ट भी था कि उसकी तीव्र जिज्ञासा को जगा सके। उसने चरम वातावरण के लिए अनुकूलित विशेष ड्रोन तकनीक, हिमालयी भूविज्ञान के विशेष ज्ञान (जो उसने अपने शैक्षणिक वर्षों के दौरान वैध, हालांकि कभी-कभी गोपनीय, क्षेत्र अनुसंधान से प्राप्त किया था) और एक महत्वपूर्ण बात का उल्लेख किया, जिससे वह उसे आकर्षित कर लेती - बर्फ की संरचनाओं में ध्वनिक घटनाओं के विश्लेषण में उसकी विशेषज्ञता। यदि किंवदंतियाँ सच थीं, यदि पांडवों ने वास्तव में हिमनद के भीतर किसी प्रकार का परिष्कृत, आत्मरक्षात्मक तहखाना बनाया था, तो इसे समझने की कुंजी इसकी अनूठी कंपन संरचना, इसकी ध्वनिक अनुनाद में निहित होगी। और उसने जो कुछ भी पढ़ा था, इतिहास की हर बात, यही बताती थी कि वे ध्वनिक इंजीनियरिंग के उस्ताद थे। उसने संदेश को कई परतों में एन्क्रिप्ट करके भेजा और इंतजार करने लगी।

तीन घंटे बाद उनका जवाब आया: कोलाबा कैफे। कल, दोपहर 2 बजे।
अवंथिका ने पूरी रात तैयारी में बिताई। उसे नींद नहीं आई। इसके बजाय, उसने विक की मनोवैज्ञानिक प्रोफाइल को फिर से याद किया, हालाँकि वह इसे नींद में भी सुना सकती थी। स्पेशल फोर्सेज की पृष्ठभूमि, चौबीस साल की उम्र में RAW में भर्ती, असाधारण ऑपरेशनल कौशल के कारण रैंकों में तेजी से तरक्की, फिर अफगानिस्तान घटना के बाद सात साल पहले रहस्यमय तरीके से बर्खास्तगी। तब से: एक भूत। एक ऐसा रहस्यमय व्यक्ति जो देशों के बीच के क्षेत्रों में काम करता था, अमूल्य प्राचीन वस्तुओं से लेकर उच्च स्तरीय खुफिया जानकारी और उन चीजों तक जिनका कोई नाम नहीं था, हर चीज का धंधा करता था। वह प्रतिभाशाली था। वह निर्दयी था। और, मनोवैज्ञानिक प्रोफाइल के अनुसार, उसमें बिल्कुल भी सहानुभूति नहीं थी—एक ऐसा समाजविरोधी जो इंसानों को इस्तेमाल करने योग्य संपत्ति या हटाने योग्य बाधा मानता था।
उसे बिल्कुल परिपूर्ण होना पड़ेगा।
अगली दोपहर, वह आन्या सिंह के वेश में कोलाबा कैफे में दाखिल हुई: आरामदायक कार्गो पैंट, ऊँची कॉलर वाली, मौसम प्रतिरोधी जैकेट, और उसका चमड़े का थैला असली शोध उपकरणों से भरा हुआ था—भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण उपकरण, एक उच्च-आवृत्ति ध्वनिक सेंसर, अकादमिक शोध पत्रों से भरी एक टैबलेट। उसने बहुत पहले ही सीख लिया था कि सबसे अच्छे झूठ ज्यादातर सच होते हैं, जिन्हें बारीकी से गढ़ा जाता है ताकि वे गहन जांच में खरे उतरें।
विक एक कोने की मेज पर बैठा था, उसकी सहज मुद्रा के बावजूद उसकी उपस्थिति कमरे में सूक्ष्म रूप से हावी थी। हालांकि उसने वर्षों तक उसकी तस्वीरें देखी थीं, लेकिन उसे व्यक्तिगत रूप से देखना एक अलग अनुभव था। वह एक प्रकार का नियंत्रित आकर्षण बिखेर रहा था, एक ऐसे व्यक्ति का आभास जो अपनी शक्ति में इतना आश्वस्त था कि उसे इसे खुले तौर पर प्रदर्शित करने की आवश्यकता नहीं थी। खुफिया रिपोर्टों में उल्लेख किया गया था कि उसकी आँखें उसकी सबसे परेशान करने वाली विशेषता थीं— ठंडी, परखने वाली, हमेशा किसी न किसी पहलू की तलाश में। हलचल भरे कैफे में उनकी निगाहें मिलीं, और उनके बीच कुछ अवर्णनीय सा क्षणिक जुड़ाव हुआ - एक शिकारी से दूसरे शिकारी के बीच पहचान की एक झलक, आपसी खतरे और संभावना की स्वीकृति।

उसने अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया। बस एक कुर्सी खींची और बैठ गई, उसकी हरकतें संयमित थीं, जिससे घबराहट का कोई संकेत नहीं मिला।
"मेरा अनुमान है, विक्रम राठौर।"
उसकी मुस्कान हल्की थी, मानो मुस्कुराहट भरी हो, होठों के कोने पर बस एक हल्की सी हलचल थी। "तुम उन बाकी लोगों से अलग हो जिन्होंने जवाब दिया। उनमें से ज्यादातर मुझे प्रभावित करने की बहुत कोशिश कर रहे हैं। तुम तो बिल्कुल भी कोशिश नहीं कर रहे हो।"
"चापलूसी समय की बर्बादी है," उसने शांत स्वर में, बिना किसी भाव-भंगिमा के जवाब दिया। "आपके विज्ञापन में कुछ महत्वपूर्ण बात कही गई थी। मैं यहाँ यह आकलन करने आई हूँ कि क्या वह मेरे लिए उपयोगी है या नहीं।"
वह हँसे, एक धीमी, गहरी हँसी जो उनकी आँखों तक नहीं पहुँची। "सीधी बात। मुझे यह पसंद आया।" वह थोड़ा आगे झुके, उनकी निगाहें तीक्ष्ण थीं। "बताइए, डॉ. सिंह —आपको क्या प्रेरित करता है? अकादमिक रुचि से परे। कुछ और भी है। मैं इसे देख सकता हूँ।"
अवन्तिका ने उसकी निगाहों में देखा, उसके भीतर एक आंतरिक संघर्ष चल रहा था। यही निर्णायक क्षण था। वह उसकी परीक्षा ले रहा था, उसकी कमजोरी तलाश रहा था, उस पहलू को खोज रहा था जिसका वह फायदा उठा सके, उस लाभ को खोज रहा था जो उसे मिल सके।
उसने सच का एक ऐसा संस्करण चुना—एक ऐसा सच जो उसकी अपनी जानी-मानी प्रेरणाओं से मेल खाता था। "मैं ऐसे शोधपत्र प्रकाशित करते-करते थक गई हूँ जिन्हें केवल तीन लोग पढ़ते हैं। मैं कम बुद्धि वाले लोगों को अपने काम का श्रेय लेते हुए देखकर थक गई हूँ। मैं उन खोजों को आगे बढ़ाने के लिए संस्थागत स्वीकृति का इंतज़ार करते-करते थक गई हूँ जिनके बारे में मुझे पता है कि वे मौजूद हैं।" वह कुछ देर रुकी, चुप्पी छाई रही। "मैं कुछ ऐसा खोजना चाहती हूँ जो मायने रखता हो। कुछ ऐसा जो साबित करे कि मैं शुरू से ही सही थी।"
यह बात काफी हद तक सच थी। यहां तक कि आरएडब्ल्यू के भीतर भी, वह हमेशा खुद को सीमित महसूस करती थी, उन नौकरशाहों द्वारा रोकी जाती थी जो उसके विश्लेषणात्मक दिमाग की वास्तविक क्षमता को नहीं समझते थे, जो साहसिक सफलताओं के बजाय सुरक्षित, अनुमानित परिणामों को प्राथमिकता देते थे।

विक की मुस्कान और चौड़ी हो गई, उसकी आँखों में सच्ची प्रशंसा की झलक दिखाई दी। "अगर मैं तुमसे कहूँ कि मैं ऐसी किसी चीज़ की खोज कर रहा हूँ जो इतिहास को फिर से लिख सकती है? ऐसी कोई चीज़ जो साबित कर सके कि पांडव काल्पनिक देवता नहीं थे, बल्कि ऐसे इंजीनियर थे जो उन सिद्धांतों को समझते थे जिन्हें हम अभी फिर से खोज रहे हैं? शायद, इन्फ्रासाउंड अनुनाद पर आधारित एक हार्मोनिक ट्रैप?"
"मुझे लगता है कि आप हिमवत कोष का वर्णन कर रही हैं," आन्या ने स्थिर स्वर में उत्तर दिया। "खजाने का तहखाना। और संभवतः वह ध्वनि स्थैतिक तंत्र जो हिमनद को बांधे रखता है।"
उसकी आँखें तेज़ी से चमक उठीं। "तुम तो किंवदंतियों को जानते ही हो।"
"मैं किंवदंतियों से कहीं अधिक जानती हूँ। मुझे पता है कि पांडवों ने ध्वनि अवरोध बनाए थे। मुझे पता है कि वे लयबद्ध आवृत्तियों को समझते थे। मुझे पता है कि उनके पास ऐसी धातु विज्ञान की जानकारी थी जिसे हम आज भी पूरी तरह से दोहरा नहीं सकते, जो अनुनादी गुण प्रदर्शित करने वाली मिश्रधातुओं और क्रिस्टलीय संरचनाओं का निर्माण करने में सक्षम थी।" उसने अपने थैले से एक टैबलेट निकाला और उसे मेज पर सरका दिया। "यह दो साल पहले वसुधारा के ऊपर मेरे द्वारा उड़ाए गए एक शोध ड्रोन से प्राप्त प्रारंभिक डेटा है। जिस भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण में मैं कथित तौर पर सहायता कर रही थी, उसने इसे अनदेखा कर दिया, लेकिन ग्लेशियर में एक लगातार ध्वनिक विसंगति है। लगभग 7.83 हर्ट्ज़ की एक कम आवृत्ति वाली गुनगुनाहट, जो प्राकृतिक रूप से मौजूद नहीं होनी चाहिए।"
विक ने टैबलेट को ध्यान से देखा, उसके चेहरे पर भावहीनता छाई हुई थी, उसकी आँखें तेज़ी से जटिल डेटा को समझ रही थीं। जब उसने ऊपर देखा, तो उसकी निगाहों में कुछ नयापन था—शायद सम्मान, या फिर गहन चिंतन।
"तीन दिन," उसने अपना टैबलेट मेज पर सरकाते हुए कहा। "काठमांडू। अपने ड्रोन और जो भी ज़रूरत हो, ले आना। मार्ग की जानकारी एन्क्रिप्टेड है। अभियान रवाना होगा, चाहे तुम वहाँ रहो या न रहो।"
अवंथिका ने टैबलेट ले ली। "मैं वहाँ आऊँगी।"
वह जाने के लिए खड़ी हुई, लेकिन विक की धीमी आवाज़ ने उसे रोक दिया, कैफे के शोर में उसकी धीमी फुसफुसाहट गूंज उठी। "एक और बात, डॉ. सिंह। आप इससे वास्तव में क्या चाहती हैं? सत्ता? धन? पहचान?"

वह पीछे मुड़ी और आखिरी बार उसकी निगाहों से मिली। उसने उसे एक और सोची-समझी सच्चाई बताने का फैसला किया। "तीनों। इसी क्रम में।"
अब उसकी मुस्कान सच्ची थी, मानो कोई शिकारी दूसरे में अपना ही प्रतिबिंब पहचान रहा हो। "टीम में आपका स्वागत है।"
अवंथिका कैफे से बाहर निकली, उसका दिल स्थिर था, दिमाग तेजी से चल रहा था। जाल बिछ चुका था। अब उसे बस उसे यह एहसास होने से रोकना था कि वह भी ठीक वैसा ही खेल खेल रही है—जब तक कि गोली चलाने का सही समय न आ जाए।
उसके एन्क्रिप्टेड फोन पर वाइब्रेशन हुई। उसका हैंडलर, शमशेर, यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह कहाँ है।
उसने उसे चुप करा दिया।
वह जानती थी कि कुछ झूठों के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

अध्याय 4

अभियान

काठमांडू का थमेल जिला — 48 घंटे बाद
काठमांडू का थमेल ज़िला एक अराजक जीवंतता से भरा हुआ था जो इंद्रियों को झकझोर देता था: जलती हुई अगरबत्ती की तीखी सुगंध सड़क किनारे ठेलों से तली हुई मोमोज़ की चटपटी आवाज़ के साथ घुलमिल रही थी, और बीच-बीच में खड़खड़ाते रिक्शाओं से निकलते डीज़ल के धुएं की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। संकरी पत्थर की गलियाँ ट्रेकिंग की दुकानों के भूलभुलैया में नसों की तरह मुड़ी हुई थीं, जिनकी दीवारों पर एवरेस्ट की चोटियों के धुंधले पोस्टर लगे थे और प्रार्थना ध्वज पहाड़ी हवा में धीरे-धीरे लहरा रहे थे। विक राठौर इस शहरी बाज़ार में उथले पानी में तैरती हुई शार्क की तरह आगे बढ़ रहे थे—उद्देश्यपूर्ण, शांत, उनकी पैनी निगाहें उन खतरों को स्कैन कर रही थीं जो कभी सामने नहीं आए। उन्होंने साधारण ट्रेकिंग गियर पहन रखे थे: फीकी कार्गो पैंट, एक पुरानी नॉर्थ फेस जैकेट और एक जर्जर रकसैक जो किसी भी सामान्य देखने वाले को "बजट एडवेंचरर" की याद दिला रहा था।
सुरक्षित ठिकाना एक साधारण सी ट्रेकिंग सामग्री की दुकान से तीन मंजिल ऊपर था,

जहाँ तक पहुँचने के लिए एक अंधेरी गली से होकर जाना पड़ता था, जिससे पर्यटक आमतौर पर बचते थे। विक के बायोमेट्रिक स्कैन पर एक भारी स्टील का दरवाजा खुला, जिससे अंदर का नजारा एक हाई-टेक ऑपरेशन सेंटर में तब्दील हो चुका था। दीवारों पर सैटेलाइट के नक्शे लगे थे, चमकते हुए होलोग्राफिक डिस्प्ले पर वसुधारा घाटी के दुर्गम भूभाग के त्रि-आयामी मॉडल दिखाए जा रहे थे, और उपकरणों के डिब्बे —मजबूत पेलिकन हार्डकेस जिन पर साधारण से शिपिंग लेबल लगे थे—को करीने से कोनों में रखे हुए थे। हवा में कूलिंग पंखों की धीमी सरसराहट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की हल्की ओजोन गंध फैली हुई थी।

उनकी टीम पहले से ही इकट्ठा हो रही थी, प्रत्येक सदस्य का आगमन उनकी जटिल पहेली का एक सावधानीपूर्वक जांचा-परखा हुआ टुकड़ा था।

तेनज़िन दोरजे मैली-कुचली खिड़की के पास खड़े थे, उनके झुर्रीदार हाथ लयबद्ध ढंग से माला की माला को खटखटा रहे थे। बावन वर्षीय, शेरपा मूल के, नेपाल सेना के पूर्व कमांडो, तेनज़िन ने कराकोरम पर्वतमाला में दो पूर्व उच्च जोखिम वाले अभियानों में विक का मार्गदर्शन किया था। वह पहाड़ों को खुली किताब की तरह पढ़ सकते थे, दशकों तक ऊँचाई पर रहने से विकसित अपनी छठी इंद्री से हिमस्खलन के खतरों और छिपी हुई दरारों को भाँप लेते थे। उन्होंने मार्ग की व्यवस्था और भुगतान की शर्तों के अलावा कोई प्रश्न नहीं पूछा—पेशेवरता की साक्षात मिसाल।

"सर्दियों में वसुधारा," तेनज़िन ने बिना किसी भूमिका के कहा, वर्षों तक कम हवा में रहने के कारण उनकी आवाज़ भारी हो गई थी, और उन्होंने दीवार पर टंगे स्थलाकृतिक मानचित्र पर दस्ताने वाली उंगली से थपथपाया। "अस्थिर सेराक। पीएलए हर 72 घंटे में सीमा पर गश्त करता है। मौसम के अनुकूल समय बहुत कम होता है—तूफान से पहले अधिकतम तीन दिन का समय मिलता है, जिसके बाद सीमा पूरी तरह बंद हो जाती है।"

"क्या यह संभव है?" विक ने अपनी जैकेट उतारते हुए और अपने टैबलेट को सेंट्रल होलो-डिस्प्ले से सिंक करते हुए पूछा।

तेनज़िन ने स्थिर निगाहों से उसकी ओर देखा। "सब कुछ संभव है, साहब। आपका जीवित रहना पहाड़ का फैसला है।" उसने अपना खुरदुरा हाथ आगे बढ़ाया; विक ने तेनज़िन के ट्रेस न किए जा सकने वाले वॉलेट में पाँच बिटकॉइन ट्रांसफर कर दिए। शेरपा ने संतुष्टि से एक बार सिर हिलाया और बकरियों के रास्तों और हिमनद दरारों

को रंगीन पिनों से मानचित्र पर अंकित करने में जुट गया।
दरवाजा चरमराते हुए फिर खुला और राज पटेल अंदर आया—उनतीस साल का, दुबला-पतला शरीर, जिसकी पतली भुजाओं पर सर्किट पैटर्न वाले टैटू गुदे हुए थे, मानो कोई चलता-फिरता कोड हो। ड्रोन का माहिर, जिसने गोल्डन ट्रायंगल में नशीले पदार्थों के तस्करों के लिए जासूसी करके अपना हुनर निकाल लिया था, राज अब बड़े-बड़े कारनामों के लिए जी रहा था। उसने एक मजबूत उपकरण के डिब्बे को प्यार से थपथपाया। "मैं अपने सारे उपकरण साथ लाया हूँ, बॉस। छह मॉडिफाइड क्वाडकॉप्टर: 3D मैपिंग के लिए LiDAR, हीट सिग्नल के लिए थर्मल, और सबसे खास—इन्फ्रासाउंड के लिए ट्यून किए गए हार्मोनिक सेंसर। अगर वह ग्लेशियर 7.83 हर्ट्ज पर गूंज रहा है, जैसा कि आपके डेटा से पता चलता है, तो बर्फ पर उतरने से पहले मैं हर अनुनादी नोड का नक्शा बना लूँगा।"
विक ने भौंहें चढ़ा लीं। "5,000 मीटर की ऊंचाई पर तेज़ हवाएं?"
राज ने जंगली मुस्कान के साथ कहा, "ये तो तूफान में भी उड़ जाएंगे। सवाल ये है कि क्या मैं इन्हें काबू में रखने के लिए काफी देर तक सीधा खड़ा रह पाऊंगा।"
इसके बाद हरि सिंह आए, अपने पूरे 240 पाउंड वजन के साथ, मानो किसी भारी भरकम व्यक्ति की तरह दरवाजे से अंदर घुस आए। पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड, जिन्हें मुंबई बंधक संकट के दौरान "अत्यधिक बल प्रयोग" के लिए अपमानजनक तरीके से बर्खास्त कर दिया गया था—जिसे उच्च अधिकारियों ने अति प्रयोग कहा था, हरि उसे "काम पूरा करना" कहते थे। उनकी आवाज भूकंप की गड़गड़ाहट जैसी थी। "बॉस। क्या तोड़ना है?"
"संभवतः बहुत बर्फ होगी। शायद कुछ लोग भी फंसे होंगे। स्थिति के अनुसार हम बदलाव करेंगे।"
हरि के दाढ़ीदार चेहरे पर मुस्कान फैल गई। उसने न्यूनतम कंपन और अधिकतम पिघलाव के लिए डिज़ाइन किए गए सटीक थर्मिट चार्ज का एक डिब्बा नीचे रखा। "बर्फ ही सही।"
दरवाजा अंतिम बार खुला और डॉ. अन्या सिंह अंदर आईं। वह चुपचाप अंदर आईं, उनकी चाल में एक ऐसे व्यक्ति की सहजता झलक रही थी जिसने फील्ड में काफी समय बिताया हो। उनका साजो-सामान पेशेवर स्तर का था: सैन्य मानकों के अनुरूप ठंडे मौसम के कपड़े, कंधे पर टंगे कस्टम ड्रोन कंट्रोलर, सेंसरों और ठंडे मौसम में

काम आने वाली बैटरियों से भरा एक बैग। दिखावटी चीजों का कोई झंझट नहीं—सिर्फ जीवन रक्षा और विज्ञान के लिए आवश्यक उपकरण।
"डॉ. सिंह," विक ने होलो-टेबल की ओर इशारा करते हुए कहा। "षड्यंत्र में आपका स्वागत है।"
उसने कमरे का व्यवस्थित ढंग से जायज़ा लिया, उसकी निगाहें पल भर में कर्मियों, उपकरणों और भागने के रास्तों को सूचीबद्ध कर रही थीं। जब उसने बात की, तो सीधे तेनज़िन से बोली, और उसके स्थलाकृतिक मानचित्र पर टेढ़ी-मेढ़ी लाल रेखा की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह पहाड़ी मार्ग जिसे आप चिह्नित कर रहे हैं - वह पीएलए का गश्ती मार्ग है। वे मौसम अनुकूल होने पर हर तीन दिन में ड्रोन निगरानी के साथ उस पर गश्त करते हैं।"
घनी भौंहों के नीचे तेनज़िन की आँखें सिकुड़ गईं। "आपको यह कैसे पता चला, मेमसाहिब? ऐसा तो किसी आम नागरिक ने नहीं देखा।"
"क्योंकि मैं इस क्षेत्र का अध्ययन करती हूँ," आन्या ने शांत भाव से जवाब दिया और अपनी उंगली से एक नीली रेखा खींची। "इस तरीके में आधा दिन ज़्यादा लगता है, लेकिन हम भारतीय क्षेत्र में ही रहते हैं और ऐसी भूभाग का उपयोग करते हैं जहाँ हवाई स्कैन से निकलने वाले थर्मल संकेतों को छिपाया जा सकता है। कम जोखिम, ज़्यादा सफलता।"
विक यह बातचीत देख रहा था, उसके चेहरे पर थोड़ी सी हैरानी और समझदारी का भाव झलक रहा था। वह सिर्फ अपनी विशेषज्ञता का दावा ही नहीं कर रही थी; बल्कि तत्काल और ठोस मूल्य भी प्रदर्शित कर रही थी। उसकी जानकारी उसके अपने ब्लैक मार्केट सूत्रों से पूरी तरह मेल खा रही थी—क्या ज़रूरत से ज़्यादा ही?
"और क्या?" उसने केंद्रीय होलो-डिस्प्ले को सक्रिय करते हुए पूछा।
अन्या ने अपने टैबलेट को सहजता से सिंक किया और अपने मालिकाना डेटा को उनके साझा मॉडल पर ओवरले किया। प्रोजेक्शन में ज़बरदस्त बदलाव आया: वसुधारा घाटी स्पष्ट 3D में घूमने लगी, बर्फ की चट्टानें तापमान में भिन्नता के साथ चमकने लगीं, और ध्वनिक तरंगों के सिमुलेशन ग्लेशियर की सतह पर लहरों की तरह फैल गए। "मुंबई में मैंने जिस विसंगति को चिह्नित किया था? परिष्कृत मॉडल इसकी पुष्टि करते हैं। लगभग 7.8 हर्ट्ज़ पर लगातार इन्फ्रासाउंड सिग्नेचर—पृथ्वी का शुमान अनुनाद, प्रवर्धित। यदि पांडवों ने एक गुंबद बनाया था, तो उन्होंने इसे ग्लेशियर की

संरचना में एकीकृत किया था। क्वार्ट्ज़ जड़े कांस्य-टिन मिश्रधातु उस आवृत्ति पर अनुनाद कर सकते हैं, जिससे हार्मोनिक फीडबैक के माध्यम से बर्फ की चट्टानों को स्थिरता मिलती है। इसे बाधित करें—ड्रोन ईएम क्षेत्र, कंपन उपकरण, या यहां तक कि मानव आवागमन—और आपको विनाशकारी विफलता मिलेगी: हिमस्खलन, बर्फ की चट्टानों का ढहना, घाटी की सतह का दब जाना।"

कमरा एकदम शांत हो गया, उसके विश्लेषण का असर सब पर दिखने लगा। राज ने धीमी सी सीटी बजाई। "हिमस्खलन से भी बदतर कैसे?"

आन्या के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। "तिजोरी को एक सुगठित वाद्य यंत्र की तरह समझो। बर्फ़ एम्पलीफायर है। अगर गलत हार्मोनिक तत्व हटा दिया जाए, तो हज़ारों टन बर्फ़ एक सक्रिय जाल में बदल जाएगी - जो तीन सहस्राब्दियों से सक्रिय है।"

विक को एक अनोखा रोमांच महसूस हुआ—न केवल पुरस्कार मिलने पर, बल्कि प्राचीन इंजीनियरिंग के आधुनिक भौतिकी के साथ तालमेल बिठाने की बेमिसाल हिम्मत देखकर भी। "वे वाकई प्रतिभाशाली थे," उसने धीरे से कहा।

"निर्दयी," आन्या ने तीखे स्वर में सुधार किया। "संयम के बिना प्रतिभा तो बस विनाश को आमंत्रित करती है।"

उनकी निगाहें चमकते हुए होलो-डिस्प्ले पर टिक गईं, जो महत्वाकांक्षा का दर्पण था: उसका ठंडा व्यावहारिक दृष्टिकोण उसकी छिपी हुई तीव्रता को प्रतिबिंबित कर रहा था। जो भी उसे प्रेरित कर रहा था, वह तीव्र था।

"ठीक है," विक ने पूरे कमरे को संबोधित करते हुए अधिकारपूर्ण लहजे में कहा। "खेल का समय समाप्त। देहरादून से बद्रीनाथ के लिए हेलीकॉप्टर से प्रस्थान 48 घंटे में होगा—संशोधित Mi-17, छुपकर हमला करने के लिए हाइब्रिड रोटर लगे होंगे। वहां से तीन दिन की पैदल यात्रा: तेनज़िन मार्गदर्शन करेंगे, हरि रास्ते साफ़ करेंगे, राज टोही करेंगे, डॉ. सिंह तिजोरी का नक्शा बनाएंगे। मैं तय करूंगा कि हमें कब मुड़ना है।"

"और तुम?" तेनज़िन ने पूछा, मोतियों की खनक अभी भी बरकरार थी।

"मैं ही हमें ज़िंदा रखता हूँ और कामयाब बनाता हूँ। बस यही क्रम है।" वह रुका और सब चेहरों पर नज़र घुमाई। "समझ लीजिए: यह कोई लोकतंत्र नहीं है। मैंने ही इसमें पैसा लगाया है, जगह की तलाश की है, और हर तरह से इसके पक्ष में माहौल बनाया है। आपको काम पूरा करने के लिए क्रिप्टो करेंसी में भारी मुनाफ़ा मिलेगा। असहज

महसूस कर रहे हैं? कोई बात नहीं।"
कोई नहीं हिला। हरि ने अपनी उंगलियां चटकाईं। राज मुस्कुराया। तेनज़िन ने एक बार सिर हिलाया।
"अच्छा। तैयारी का समय: साजो-सामान की जाँच, अनुकूलन सिमुलेशन। एक और बात: विश्वासघात करने पर मौत की सजा। हम पृथ्वी के सबसे एकांत और खतरनाक इलाके में प्रवेश कर रहे हैं। बर्फ में जो होता है, बर्फ में ही रहता है।"
सहमति की हल्की फुसफुसाहट सुनाई दी। बैठक एकाग्रतापूर्ण गतिविधियों में तब्दील हो गई— सामान खोला गया, नक्शों की आपस में जाँच की गई।
विक ने देखा कि आन्या होलो-डिस्प्ले के पास रुकी हुई थी, उसकी उंगलियां बड़ी तल्लीनता से आभासी बर्फ की दरारों को छू रही थीं। "क्या तुम दोबारा सोच रही हो?"
"बस हिसाब लगा रही थी," उसने बिना ऊपर देखे जवाब दिया। "किस तरह के दिमाग वाले लोग ऐसी कब्र बनाते हैं जो पहाड़ को हथियार में बदल देती है? कब्र के रूप में छिपा हुआ हथियार, या हथियार के रूप में छिपा हुआ कब्र?"
"क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?" विक ने करीब आते हुए जोर देकर पूछा।
उसकी निगाहें अचानक उसकी ओर घूमीं, एकदम तीखी। "हो सकता है—जब हम अंदर हों, इसकी हवा में सांस ले रहे हों।"
उसने अपना बैग कंधे पर रखा और बिना कुछ कहे बाहर निकल गई।
विक घूमते हुए घाटी मॉडल की ओर मुड़ा, आभासी दरारों पर परछाइयाँ खेल रही थीं। गुप्त गुप्त अभियानों में गढ़ी गई उसकी अंतरात्मा फुसफुसा रही थी: वह खतरनाक है। प्रतिभाशाली है। केवल कागज़ों से प्रेरित नहीं है। उसकी जानकारी अनमोल थी, लेकिन कई परतों वाली थी—क्या वह पूर्व सर्वे ऑफ इंडिया विभाग से थी? या उससे भी गहरी पहुँच रखती थी?
उसे अपने करीब रखो। उसकी बुद्धि का भरपूर उपयोग करो। जब वह तुम्हारे लिए उपयोगी न रह जाए, तो उसे छोड़ दो।
उनकी दुनिया में, प्रतिभा सबसे तेज दोधारी तलवार थी।

अध्याय 5

बर्फ में दरारें

हिमालय की तलहटी — 4,200 मीटर, दूसरी रात

संशोधित मिल मी-17 हेलीकॉप्टर—एक ऐसा विशालकाय हेलीकॉप्टर जिसे अधिक गुप्त संचालन और अधिक ऊंचाई पर बेहतर प्रदर्शन के लिए हाइब्रिड-इलेक्ट्रिक रोटर्स से सुसज्जित किया गया था—देहरादून से भोर से ठीक पहले उड़ान भरी, उसके ब्लेड ठंडी पहाड़ी हवा को चीरते हुए हल्की सी सरसराहट कर रहे थे। विक सह-पायलट की सीट पर बैठा था, उसकी निगाहें एचयूडी पर टिकी थीं, जैसे ही गढ़वाल हिमालय की तलहटी घने अंधेरे से निकलकर नारंगी रंग के सूर्योदय के प्रकाश में चमक उठी। नीचे, भारत में हलचल मच रही थी: मंदिरों की घंटियाँ हल्की-हल्की हवा में गूंज रही थीं, गाँव घाटियों में भूले-बिसरे रहस्यों की तरह सिमटे हुए थे। ऊपर, असली स्वामी प्रतीक्षा कर रहे थे—पहाड़, शाश्वत और उदासीन।

उन्होंने तकनीकी रूप से वैध कागजी कार्रवाई के साथ सीमा शुल्क पार कर लिया था: हिमनद सर्वेक्षण के लिए एक "वैज्ञानिक अभियान", जिसके परमिट विक के भ्रष्ट नौकरशाहों के नेटवर्क द्वारा मुहरबंद कर दिए गए थे। पायलट, भारतीय वायु सेना का एक अनुभवी पूर्व अधिकारी, जिसने उचित कीमत पर माल ढुलाई संबंधी दस्तावेजों को नजरअंदाज करना बहुत पहले ही सीख लिया था, घाटियों के ऊपर से नीची उड़ान भरता रहा, वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास निगरानी के अभेद्य क्षेत्रों से बचते हुए। कोई रडार सिग्नल नहीं, कोई अटपटा सवाल नहीं।

कार्गो डिब्बे में, टीम पूरी खामोशी से बैठी थी। तेनज़िन ध्यान में लीन था, उसकी कठोर उंगलियों में प्रार्थना की माला की हल्की-हल्की आवाज़ गूंज रही थी। हरि व्यवस्थित रूप से अपने थर्मोबैरिक चार्ज की जाँच कर रहा था, हर क्लिक नियंत्रित हिंसा का वादा कर रहा था। राज ड्रोन नियंत्रकों से छेड़छाड़ कर रहा था, अपने हार्मोनिक सेंसरों पर अंतिम कैलिब्रेशन कर रहा था—जो पृथ्वी की प्राकृतिक विद्युत चुम्बकीय धड़कन, 7.83 हर्ट्ज़ के आसपास शुमान अनुनाद उतार-चढ़ाव का पता लगाने के लिए सटीक रूप से ट्यून किए गए थे। आन्या पाले से जमी खिड़की से बाहर देख रही थी, उसके चेहरे पर भावहीनता छाई हुई थी, उसकी उंगलियां अपने बैग के पट्टे पर एक हल्की लय में थपथपा रही थीं।

वे बद्रीनाथ के पास बने एक अस्थायी हेलीपैड पर उतरे—4,200 मीटर की ऊंचाई पर, वृक्ष रेखा से ऊपर, जहां ऑक्सीजन अदृश्य पंजों की तरह फेफड़ों को जकड़ रही थी। विक ने रास्ते में पहले से ही आपूर्ति भंडार स्थापित कर रखे थे: उच्च कैलोरी वाले

राशन, ऑक्सीजन सांद्रक, थर्मल बिब्बी—हिमनदी मोरेन में छिपे हुए, जो उपग्रह स्कैन से अदृश्य थे।

पहले दिन की चढ़ाई बेहद कठिन थी: पथरीले मैदानों से होकर सात घंटे तक घुमावदार रास्तों पर चलना पड़ा, और गहरी दरारों पर बने बर्फ के पुलों की परीक्षा लेनी पड़ी। तेनज़िन आगे-आगे चल रहे थे, उनकी बर्फ की कुल्हाड़ी किसी सर्जन के स्केलपेल की तरह आगे बढ़ रही थी। 4,200 मीटर की ऊंचाई पर बने शिविर में, उन्होंने कड़ाके की ठंड से बचने के लिए गर्म तंबू लगाए, जिसकी गर्जना लगातार एकांत का एहसास दिला रही थी।

रात के खाने के बाद विक ने आन्या को शिविर के किनारे पाया, जहाँ वह उत्तरी क्षितिज पर स्वर्गारोहिणी पर्वतमाला के बीच तारों को छूती हुई एक परछाई की तरह खड़ी थी। शून्य से नीचे के तापमान में उसकी साँसों से धुआँ निकल रहा था, और वह भूकंपीय डेटा की जाँच करते हुए अपने टैबलेट पर हल्की रोशनी बिखेर रही थी।

"ऊंचाई की वजह से होने वाली बीमारी?" उसने पूछा और उसे इलेक्ट्रोलाइट्स से भरी मसाला चाय का थर्मस पकड़ा दिया।

"ठीक से ढल रही हूँ," उसने चोटियों से अपनी निगाहें हटाए बिना जवाब दिया। "बस सोच रही थी।"

"के बारे में?"

उसने घूंट भरा, भाप बर्फीली धुंध की तरह उठ रही थी। "क्या पांडवों ने इसे महसूस किया होगा— भय से भरी आशंका। वे मृत्यु की ओर बढ़ रहे थे, यह जानते हुए कि उनकी विरासत अमरता में गूंजेगी। इंजीनियर अपनी ही तबाही को दफना रहे थे।" उसकी आवाज़ में एक दुर्लभ कोमलता थी, आँखें कहीं दूर थीं। "क्या वे इस दहलीज पर हिचकिचाए थे?"

विक ने उसके चेहरे को गौर से देखा, आग की रोशनी से उसकी ऊँची गाल की हड्डियों पर परछाइयाँ बन रही थीं। "क्या तुम उनकी कहानी पर विश्वास करती हो? देवता नहीं, बल्कि ऐसे इंसान जिन्होंने प्रतिध्वनि का इस्तेमाल किया— ध्वनि प्रवर्धन के लिए कांस्य-टिन मिश्र धातुओं पर नक्काशी की, पृथ्वी की स्पंदन के अनुरूप क्वार्ट्ज़ जड़े? असली इंजीनियरिंग, जो समय के साथ लुप्त हो गई।"

"मेरा मानना है कि वे असाधारण व्यावहारिक व्यक्ति थे," अन्या ने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। "वैदिक ग्रंथ इसका संकेत देते हैं—अस्त्र कंपनकारी हथियार थे, स्वर्ग से

आने वाली अग्नि नहीं। वह गुंबद? एक लयबद्ध जाल, धर्म चक्र स्थिरक के रूप में, 7.83 हर्ट्ज़ की ध्वनि प्रवाहित करके सेरैक को संतुलन में रखता है। अगर इसमें बाधा डाली जाए, तो हिमवत पतन के द्वारा धर्म का पालन करवाता है। दिव्य? नहीं। निर्मम भौतिकी।"

"आप मेरे आम तौर पर भर्ती किए जाने वाले लोगों से अलग हैं," विक ने उत्सुकता जताते हुए कहा। "न तो आप रोमांच के पीछे भागने वाले भाड़े के सैनिक हैं, न ही नाम के भूखे। डॉ. सिंह, आपकी असली प्रेरणा क्या है? सिर्फ कागजों पर धूल जमा होने के अलावा?"

उसकी निगाहें बिना पलक झपकाए उसकी निगाहों से मिलीं। "हर कोई एक अधिग्रहण है, श्री राठौर। सवाल तो कीमत का है।" यह जानबूझकर उनके पहले के दर्शन का प्रतिबिंब था, जो एक तेज धार की तरह पलट गया था।

वह धीरे से, लेकिन स्वाभाविक रूप से हँसा। "वाह! मेरा? बंधनों से मुक्ति। अफगानिस्तान के बाद रॉ ने मेरे बंधन तोड़ दिए - नागरिकों की बलि देने के आदेश जिन्हें मैंने ठुकरा दिया। उन्होंने इसे अवज्ञा कहा। मैंने इसे स्पष्टता कहा।" यह एक दुर्लभ स्वीकारोक्ति थी, जिससे उसकी प्रतिक्रिया का परीक्षण हुआ।

आन्या ने धीरे से सिर हिलाया। "बंधन हर जगह चुभते हैं। मेरे? अकादमिक जगत की नौकरशाही, रॉ के साये—एक ही पिंजरा, अलग-अलग सलाखें। यह तिजोरी? इस बात का सबूत है कि प्राचीन सभ्यता ने हमसे कहीं बेहतर तकनीक विकसित की थी, और आज हम उन्हीं आवृत्तियों का पीछा कर रहे हैं।" सच्चाई को दिखावटी आवरण में छिपाया गया था; उसकी असली निराशा अंदर ही अंदर सुलग रही थी।

तेनज़िन की आवाज़ ने उस पल को तोड़ दिया: "रोटी और दाल तैयार हैं! जमने से पहले खा लो।"

वापस लौटते समय, आन्या ने लापरवाही से कहा, "पीएलए गश्ती दल ने इस क्षेत्र में हलचल मचा दी है। हेलीकॉप्टर से नई चौकियां दिखाई दे रही हैं - ताज़ा कंक्रीट, ड्रोन ठिकाने।"

विक रुक गया, उसकी आँखें सिकुड़ गईं। "वह जानकारी कितनी ताज़ा है? कोई सार्वजनिक लॉग तो नहीं हैं।"

उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैदानी शोध में संपर्क बने रहते हैं। सीमावर्ती क्षेत्र सीमा रेखाओं को धुंधला कर देते हैं।" यह एक तर्कसंगत खंडन था, लेकिन उसकी सटीक

बात उसे खटक रही थी—पूर्व सर्वे ऑफ इंडिया से पीएलए की गतिविधियों की वास्तविक जानकारी नहीं मिलती थी।

उस रात, अपने बैग में डेरा डाले हुए, विक ने एक सैन्य खुफिया संपर्क को गुप्त संदेशों की बौछार भेजी: गढ़वाल में पीएलए की गतिविधि की पुष्टि करें। 47 मिनट में जवाब आया: ऊँचाई पर, अनौपचारिक। किसी विशिष्ट चीज़ की खोज कर रहे हैं।

वह जागता रहा, हवा कैनवास को बुरी तरह पीट रही थी। आन्या का डेटा सोने जैसा था—इतना कीमती कि ज़रूरत से ज़्यादा कीमती। क्या वह गुप्त निधियों से काम करने वाली कोई अकादमिक हस्ती थी? या फिर सक्रिय संपत्ति?

कल उसका परीक्षण करो।

तीसरा दिन: कठिन दौड़ — 4,500 मीटर

भोर का प्रकोप बेरहम था: -18°C, हवा की ठंडक -30°C तक। मार्च का महीना धीरे-धीरे आगे बढ़ा—आठ घंटे तक बर्फीले तूफानों के बीच, 20 मीटर गहरी दरार को रस्सी से पार करते हुए, जहाँ नीली बर्फ एक मुँह की तरह फैली हुई थी। हरि ने बर्फ के पेंचों से सीढ़ियाँ बनाईं; राज के ड्रोन ने आगे की गर्म हवाओं का नक्शा तैयार किया। दोपहर के समय, बर्फ का पुल हरि के लिए धोखा साबित हुआ—चलते-चलते वह ढह गया, और 200 मीटर की खाई में गिर गया। तेनज़िन ने पलक झपकते ही अपनी हार्नेस को संभाला और 240 पाउंड का भार एक हाथ से खींच लिया। "पहाड़ इरादे की परीक्षा लेता है," शेरपा ने कराहते हुए कहा।

4,500 मीटर की ऊंचाई पर शिविर: थकावट से चेहरे साफ झलक रहे थे, ऑक्सीजन की कमी से सिरदर्द हो रहा था। दल के बाद, विक ने अपना पोर्टेबल फैराडे केज जैमर (जो सभी सिग्नलों को ब्लॉक कर देता है) चालू किया और फिर सामुदायिक चूल्हे के पास आन्या को घेर लिया।

"सच बोलने का समय आ गया है," उसने सपाट स्वर में कहा, उसकी आवाज़ हवा के शोर से भी धीमी थी। "पीएलए की गतिविधियाँ बहुत सटीक हैं। साजो-सामान देखकर लगता है कि ये विशेष ऑपरेशन के अतिरिक्त उपकरण हैं। चाल-ढाल प्रशिक्षित है। तुम कोई किताबी ज्ञानी नहीं हो।"

अपने ध्वनिक उपकरण को कैलिब्रेट करते हुए उसने ऊपर देखा, उसका चेहरा बर्फीले हिम की तरह भावहीन था। पल बीतते गए। फिर, हल्की सी मुस्कान आई।

"समझदार। पूर्व में सर्वे ऑफ इंडिया, सीमा मानचित्रण विभाग में थी। विवादित क्षेत्रों

में गुप्त कार्य किए हैं—पीएलए की घुसपैठ, भूकंपीय खुफिया जानकारी। सामरिक प्रशिक्षण मानक था; हम खतरनाक एल1एसी विमानों में उड़ान भरते थे। संपर्क? वे अंधेरे तालाबों में मंडराते रहते हैं।" आधे सच को बड़ी सहजता से बुना गया था: उसका असली रॉ वॉर इतिहास नागरिक गुप्त अभियानों के रूप में छिपा हुआ था।
विक आगे झुका, उसकी सांसें दिखाई दे रही थीं। "अगर झूठे बहाने सामने आ जाएं, तो पहाड़ लाशों को अच्छी तरह छुपा लेता है। पाला पड़ना। दरार। हिमस्खलन—काव्यात्मक।"
उसकी निगाहें सख्त हो गईं, जो उसकी ठंडक को दर्शाती थीं। "तुम्हारे लिए भी यही बात लागू होती है, राठौर। राज़ दोनों तरफ से नुकसान पहुंचाते हैं। मैं भी इसमें शामिल हूं; तुम भी।"
गतिरोध। शिकारी चारों ओर मंडरा रहे थे, मुस्कुराते हुए अपने दांत दिखा रहे थे।
विक ने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया। "समझ गया।"
लेकिन संकल्प और भी दृढ़ हो गया: वॉल्ट के बाद, अन्या सिंह एक अनसुलझी कड़ी बन गईं। माउंटेन ने सहारा दिया।
अदृश्य रूप से, अन्या ने उसके सूक्ष्म भावों को गौर से देखा: "अफगानिस्तान" शब्द पर फैली पुतलियाँ, स्पष्ट छल। पूर्व रॉ का भूत, विश्वासघात से घायल। एक निर्णायक क्षण। उसका अपना जीवन पथ बदल गया—ऑपरेशन ने उसे निराश कर दिया, तिजोरी के आकर्षण ने उसे दलबदल के लिए उकसाया। लेकिन मिशन पहले।
हवा ज़ोर से चल रही थी। भरोसा बर्फ की तरह टूट गया।

अध्याय 6

गायन गुफा

Vasudhara Glacier — Day Five

हिमनद पहले दूर से चमकती हुई सफेद दीवार के रूप में दिखाई दिया, मानो एक स्थिर भव्यता का भ्रम हो। जैसे-जैसे वे करीब आते गए, वह कहीं अधिक जटिल रूप में प्रकट हुआ: बर्फ की एक विशाल, सजीव मूर्ति, जिसकी सतह गहरी दरारों और दरारों से भरी हुई थी, और छाया में नीले रंग की आश्चर्यजनक नसें दिखाई दे रही थीं। घाटी उनके सामने खुल गई, एक विशाल रंगमंच, जिस पर स्वर्गारोहिणी शिखर का

विशालकाय आकार हावी था, जिसका शिखर असंभव नीले आकाश को भाले की तरह भेद रहा था। यहाँ की हवा पतली, तीखी और ओजोन तथा प्राचीन बर्फ की गंध से भरी हुई थी।

और वहीं, ग्लेशियर की सतह पर खुदा हुआ, प्रवेश द्वार था।

"हे भगवान," राज ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आवाज श्रद्धा से दबी हुई थी।

गुफा का प्रवेश द्वार ठीक वैसा ही था जैसा किंवदंतियों में वर्णित था—लगभग बीस मीटर चौड़ा, एक साधारण गुफा नहीं, बल्कि एक अत्यंत गहरी दरार। यह उस विचित्र, अलौकिक नीली चमक से जगमगा रहा था जो हजारों वर्षों से दबी हुई हिमनदी की बर्फ से छनकर आने वाले प्रकाश की अनूठी चमक थी। लेकिन प्रवेश द्वार के ऊपर बने निशान ने उन सभी को स्तब्ध कर दिया, टीम का प्रत्येक सदस्य अपने सामने मौजूद भयावह दृश्य को देखकर दंग रह गया।

धर्म चक्र।

ग्लेशियर की सतह पर सीधे उकेरी गई, इसकी संकेंद्रित वलय और फैलती हुई तीलियाँ विशाल थीं, जो लगभग दो मीटर चौड़ी थीं। इसकी सर्पिल ज्यामिति इतनी सटीक थी कि ऐसा लग रहा था मानो इसे लेजर से काटा गया हो, एक निरंतर बदलते माध्यम में जड़ा हुआ एक परिपूर्ण, अटल पैटर्न। यह दूर से भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, दोपहर की तेज रोशनी में लगभग सम्मोहक चमक बिखेर रही थी। यह दृश्य भव्य होने के साथ-साथ बेहद विचलित करने वाला भी था।

"ऐसा होना मुमकिन नहीं होना चाहिए," आन्या ने धीमी आवाज़ में कहा, उसकी आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी, उसकी सामान्य शांति पर गहरी पेशेवर जिज्ञासा हावी हो गई थी। "हिमनद बहते हैं। वे मंथन करते हैं, रेंगते हैं, विकृत होते हैं। सदियों में, हज़ारों सालों की तो बात ही छोड़िए, कोई भी नक्काशी धुंधली, विकृत या पूरी तरह से मिट जानी चाहिए थी। जब तक कि..."

"जब तक कि इसकी सक्रिय रूप से देखभाल न की जा रही हो," विक ने अपनी बात समाप्त करते हुए जटिल पैटर्न पर अपनी निगाहें टिका दीं। "बर्फ द्वारा स्वयं। या उसके भीतर किसी चीज द्वारा।"

राज ने अपनी सन्नाटे भरी चुप्पी तोड़ते हुए अपने तीन संशोधित ड्रोन लॉन्च किए। साइलेंट हाइब्रिड रोटर्स से लैस ये छोटे विमान बर्फ पर सरसराते हुए उड़े, मानो बर्फीली हवा में नन्हे यांत्रिक भूत नाच रहे हों। इनकी फ़ीड तुरंत टीम के मज़बूत टैबलेट

पर दिखाई देने लगी, जिसमें वास्तविक समय के थर्मल ओवरले, लिडार स्कैन और सटीक ध्वनिक रीडिंग प्रदर्शित हो रही थीं।
राज ने टचस्क्रीन पर उंगलियां चलाते हुए बताया, "पूरी संरचना में कंपन हो रहा है। प्रवेश द्वार पर सबसे तेज़ कंपन हो रहा है, जैसा कि अन्या ने भविष्यवाणी की थी। 7.83 हर्ट्ज़। शुद्ध शुमान अनुनाद, जो ग्लेशियर द्वारा प्रवर्धित हो रहा है। और देखो—" उसने थर्मल मैप के एक हिस्से को हाईलाइट किया। "चक्र स्वयं आसपास की बर्फ से तीन डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म है। कोई चीज़ गर्मी पैदा कर रही है, या—"
"या इसे चैनलाइज़ करना," आन्या ने बीच में ही टोकते हुए कहा, उसकी नज़रें अपने टैबलेट पर टिकी हुई थीं। "चक्र सजावटी नहीं है। यह कार्यात्मक है। एक ध्वनि अवरोधक, जिसे अनुनादी आवृत्तियों को केंद्रित और चैनलाइज़ करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो शायद ग्लेशियर के भीतर किसी गहरी चीज़ से जुड़ा हुआ है। एक हार्मोनिक स्टेबलाइज़र।"
विक प्रवेश द्वार का मुआयना कर रहा था, उसका दिमाग जोखिमों और लाभों का आकलन करते हुए तेज़ी से चल रहा था। वे अब तक बिना किसी घटना के, खतरनाक इलाकों को पार करते हुए और पीछा करने वालों से बचते हुए यहाँ तक पहुँच चुके थे, लेकिन असली परीक्षा, असली दांव, अभी बाकी था।
"तेनज़िन, संरचना की स्थिरता के बारे में आपकी क्या राय है?"
शेरपा बड़ी सावधानी से प्रवेश द्वार की ओर बढ़ा, मानो वह पहाड़ों की अदम्य शक्ति का सम्मान करते हुए दशकों तक वहाँ जीवित रहा हो। उसने अपनी छड़ी से बर्फ को धीरे से थपथपाया, उसकी हल्की गूँज को सुना और कंपन का आकलन किया। "अभी तो स्थिर है। लेकिन यह—" उसने धर्म चक्र की ओर इशारा किया। "यह चेतावनी है। पुराने चरवाहे ऐसी गुफाओं की कहानियाँ सुनाते हैं जो गाती हैं। ऐसी बर्फ जो सब कुछ याद रखती है। हमें इंतज़ार करना चाहिए, पूरे चक्र के लिए इस प्रक्रिया को देखना चाहिए।"
"हमारे पास समय नहीं है," विक ने अपना फैसला पहले ही कर लिया था। "पीएलए के गश्त दल अड़तालीस घंटे से भी कम समय में इस क्षेत्र से फिर गुजरेंगे। हमारा समय अब बीत रहा है।"
आन्या पहले से ही अपने टैबलेट पर गणना कर रही थी, उसकी उंगलियां स्क्रीन पर तेजी से चल रही थीं। "अगर हमें प्रवेश करना है, तो अभी करना होगा। सूरज डूबने के

साथ तापमान गिर रहा है। इसका मतलब है कि बर्फ सिकुड़ रही है, स्थिर हो रही है। सुबह बर्फ पिघलने से बदलाव आ सकते हैं, जिससे यह और भी अस्थिर हो सकती है।"

विक ने आदेश जारी किए। "राज, प्रवेश द्वार का पूर्ण-स्पेक्ट्रम स्कैन करो। अंदर जाने से पहले मुझे पता होना चाहिए कि अंदर क्या है। हरि, पीछे हटने का रास्ता तैयार करो और न्यूनतम आवेश लगाओ—सटीकता के लिए तापीय आवेश, कंपन वाले नहीं। अगर हमें जल्दी निकलना पड़े, तो मुझे विकल्प चाहिए। तेनज़िन, अन्या, तुम प्रारंभिक सर्वेक्षण के लिए मेरे साथ रहो।"

वे एक-एक करके गुफा के प्रवेश द्वार की ओर बढ़े, हर कदम सधा हुआ था, बर्फ पर हल्की चरमराहट की आवाज़ आ रही थी। जैसे ही वे हिमनद के मुहाने में दाखिल हुए, नीली चमक और तेज़ हो गई, और तापमान तेज़ी से गिर गया, मानो उनके चेहरों की गर्माहट छीन ली हो। अंदर, खुला स्थान बर्फ के एक विशाल गिरजाघर में बदल गया — अलौकिक, राजसी, एक ऐसी सुंदरता जो लगभग शत्रुतापूर्ण प्रतीत होती थी।

वह गुनगुनाहट तुरंत सुनाई दी। तेज़ नहीं, लेकिन हर तरफ फैली हुई, एक धीमी गड़गड़ाहट जो न केवल उनके कानों में बल्कि उनकी छाती में भी गूंज रही थी, उनके दिल की धड़कनों की लय से सूक्ष्म रूप से मेल खा रही थी, एक बेहद बेचैन कर देने वाले तरीके से। यह पृथ्वी की प्राचीन धड़कन थी, जो प्रवर्धित हो गई थी।

"सात दशमलव आठ हर्ट्ज़," आन्या ने अपने हाथ में मौजूद यंत्रों की जाँच करते हुए पुष्टि की। "बिल्कुल शुमान अनुनाद। बर्फ इसे बढ़ा रही है, एक विशाल अनुनादक की तरह काम कर रही है।"

अपवर्तित प्रकाश के स्तंभ अंतरिक्ष को चीरते हुए लगभग बहुरंगी प्रभाव पैदा कर रहे थे, क्रिस्टलीय संरचनाओं से टकराकर नाच रहे थे जो दबे हुए तारों की तरह चमक रही थीं। उनकी हेडलाइट्स जटिल बर्फ की आकृतियों पर पड़ रही थीं, जिससे नाजुक पैटर्न दिखाई दे रहे थे। और विशाल कक्ष के केंद्र में, ठीक वैसे ही जैसे किंवदंतियों में वर्णित है: एक गहरा कुआँ, जो घोर अंधकार में उतर रहा था।

ठंड में सांसों से भाप निकल रही थी, विक सावधानी से किनारे की ओर बढ़ा। कुआँ लगभग तीन मीटर चौड़ा था, उसकी दीवारें चिकनी, कांच जैसी बर्फ से बनी थीं। वह तल नहीं देख पा रहा था, लेकिन जब उसने एक केम-लाइट गिराई, तो वह कई सेकंड तक गिरती रही, उसकी हरी चमक फीकी पड़ती गई, फिर दूर से एक धीमी सी

आवाज़ के साथ नीचे गिरी। "पंद्रह मीटर, शायद बीस मीटर," उसने अनुमान लगाया। "गहरा।"

राज का माइक्रो-ड्रोन, जिसके रोटर लगभग सुनाई न देने वाली फुसफुसाहट कर रहे थे, कुएं में उतरा, उसकी शक्तिशाली रोशनी घने अंधेरे को चीर रही थी। फीड उनके टैबलेट पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, एकदम सटीक विवरण के साथ।

सोना। ड्रोन के लेंस से भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, नीली बर्फ पर चमकता हुआ। और कुछ और भी - अनगिनत आकृतियाँ जो आंतरिक चमक से दमक रही थीं, सटीक, ज्यामितीय पैटर्न में व्यवस्थित थीं।

"अस्त्र," अन्या ने विस्मय और भय के मिश्रण भरे स्वर में कहा।

लेकिन जैसे-जैसे ड्रोन नीचे उतरता गया, उसका फ़ीड विकृत होने लगा। छवि हिलने लगी, पिक्सेलेटेड हो गई, और फिर स्थिर अवस्था में टूट गई।

"सिग्नल गायब हो रहा है!" राज ने बाहर से घबराई हुई आवाज़ में बताया। "कुछ गड़बड़ हो रही है—बहुत ज़्यादा विद्युत चुम्बकीय तरंगें! आवृत्ति बदल रही है—"

गुफा में गूंज की तीव्रता अचानक बदल गई, तेज़ी से बढ़ने लगी, तीखी और विचलित करने वाली हो गई। एक उच्च आवृत्ति वाली कर्कश ध्वनि हवा में गूंज उठी, जो उनकी नसों पर झकझोर रही थी।

फिर, एक तेज़ आवाज़ आई, जैसे गोली चलने की आवाज़—ऊपर से नहीं, बल्कि उनके चारों ओर जमी बर्फ के भीतर से। फिर एक और आवाज़। उनके सिर के ऊपर कहीं बर्फ टूटने लगी।

"बाहर निकलो!" तेनज़िन ने आदेश दिया, उसकी आवाज़ अचानक तेज़ हो गई और बढ़ते शोर को चीरती हुई सुनाई दी। "अभी!"

वो भागे।

उनके पीछे, छत से बर्फ के टुकड़े झरना बनकर गिरने लगे, पहले छोटे-छोटे, चमकते हीरों की तरह, फिर बड़े-बड़े, टूटे हुए कांच के टुकड़ों की तरह। गूंज की तीव्रता बढ़ती गई, और वह एक कान फाड़ देने वाली, दर्दनाक चीख में बदल गई जो उनकी हड्डियों तक गूंज उठी। विक के कान बुरी तरह फट गए। उसकी दृष्टि धुंधली हो गई, ध्वनि के इस जबरदस्त हमले से वह भ्रमित हो गया।

वे गुफा के प्रवेश द्वार से बाहर निकले ही थे कि उनके पीछे छत का एक बड़ा हिस्सा ढह गया, जिससे मुख्य कक्ष टन भर टूटी हुई बर्फ से बंद हो गया, और पीछे एक

अंतिम, गूंजती हुई गर्जना सुनाई दी।
वे सौ मीटर की दूरी तय करने तक दौड़ते रहे, चट्टानों और बर्फ के टीलों को पार करते हुए, अंत में एक ठोस चट्टान की चोटी के पीछे गिर पड़े, हांफते हुए, कानों में घंटियां बज रही थीं।
"यह सब क्या था?" हरि ने उठते हुए पूछा, उसका चेहरा धूप में झुलसे होने के कारण पीला पड़ गया था।
आन्या अपने यंत्रों को घूर रही थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, आँखें भय और गहन वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि के मिश्रण से चौड़ी हो गई थीं। "ड्रोन के विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र ने वॉल्ट के अनुनाद में बाधा डाली। अस्त्र—वे केवल निष्क्रिय धातु नहीं हैं। वे सक्रिय हैं। वे ट्यूनिंग फोर्क की तरह हार्मोनिक संतुलन बनाए रखते हैं। गलत आवृत्ति डालने पर, प्रतिक्रिया लूप शुरू हो जाता है—"
"और पहाड़ अपनी रक्षा स्वयं करता है," विक ने गंभीर अहसास भरी आवाज़ में कहा। उन्होंने अभी-अभी तीन हज़ार साल पुराने जाल को सक्रिय कर दिया था।
राज घबराया हुआ सा उनके पास दौड़कर आया। "हमारा ड्रोन खो गया। सिग्नल पूरी तरह से गुल हो गया था। लेकिन सिग्नल बंद होने से पहले मैंने फुटेज ले ली थी। आपको यह देखनी चाहिए।"
उसने अपने टैबलेट पर अंतिम तस्वीरें खोलीं। ड्रोन के बंद होने से ठीक पहले, उसने कुछ असाधारण चीज़ कैद की थी: कुआँ महज़ एक भंडारण गड्ढा नहीं था। यह एक तंत्र था। पतले तार—जो जैविक रेशों जैसे दिखते थे, शायद याक के बालों की नसें जिनका ज़िक्र लोककथाओं में मिलता है—तिजोरी में रखी विभिन्न वस्तुओं को आपस में जोड़ रहे थे, और सभी तार एक केंद्रीय बिंदु की ओर जा रहे थे।
ब्रह्मसिरा।
जटिल व्यवस्था के केंद्र में मुश्किल से दिखाई देने वाला एक सीसे का गोला, जिससे तिजोरी में मौजूद हर दूसरी वस्तु किसी न किसी तरह से जुड़ी हुई है, ठीक वैसे ही जैसे मकड़ी अपने जाले के केंद्र में होती है।
"यह एक आधारशिला है," आन्या ने शांत स्वर में कहा, उसकी आवाज़ में एक भयावह स्पष्टता थी। "इसे हटा दो, और पूरी तनाव प्रणाली विफल हो जाएगी। आवृत्तियाँ बेमेल हो जाएँगी, लय बिगड़ जाएगी, और—"
"और कई हज़ार टन बर्फ नीचे गिर जाएगी," विक ने घाटी के किनारे पर टिके विशाल

बर्फ के टावरों की ओर देखते हुए अपनी बात समाप्त की। हर एक का वजन लाखों टन था। अगर वे गिर गए तो...

"पांडवों ने बर्फ और ध्वनि से परमाणु प्रतिरोधक क्षमता का निर्माण किया," उन्होंने कहा, उनकी आवाज में तात्कालिक खतरे के बावजूद कुछ हद तक प्रशंसा का भाव था।

"उन्होंने एक ऐसा मकबरा बनाया है जो पलटवार करता है," तेनज़िन ने बात सुधारते हुए कहा, उसकी निगाहें अब बंद हो चुके प्रवेश द्वार पर टिकी हुई थीं। "हमें यहाँ से चले जाना चाहिए। यह हमारे लिए नहीं है।"

लेकिन विक पहले से ही आगे की सोच रहा था, हिसाब-किताब लगा रहा था। सीधा तरीका अपनाना नामुमकिन था—यह बात वे अभी-अभी साबित कर चुके थे। लेकिन थर्मल स्कैन में कुछ और भी दिखा था। एक द्वितीयक ताप संकेत जिसे राज ने कुछ दिन पहले ही पता लगाया था।

"भूमिगत नहर," उसने कहा। "मुझे वह स्थान फिर से दिखाओ।"

आन्या ने नक्शे खोले और उन पर ऊष्मीय डेटा अंकित किया। "पांच सौ मीटर उत्तर-पूर्व। लेकिन यह तो सिर्फ ऊष्मीय भिन्नता है, पिघले पानी की धारा भी हो सकती है —"

"या फिर यह कोई गुप्त रास्ता है। पांडव तो इंजीनियर थे। वे तिजोरी का निर्माण केवल एक प्रवेश द्वार से नहीं करते। वे मुख्य जाल को सक्रिय किए बिना उसमें प्रवेश करने का कोई दूसरा, कम स्पष्ट रास्ता ज़रूर चाहते। यह एक जोखिम भरा कदम था। लेकिन विक ने तो अपने साम्राज्य का निर्माण जोखिम भरे कदमों से ही किया था।"

"हम आज रात यहीं डेरा डालेंगे। कल हम दूसरा प्रवेश द्वार ढूंढेंगे।"

जैसे ही अंधेरा छाने लगा और उन्होंने एक चट्टान के नीचे गर्म आश्रय बना लिया, विक ने देखा कि आन्या समूह से अलग बैठी, बंद गुफा के प्रवेश द्वार को घूर रही थी। उसके चेहरे पर अजीब भाव थे—डर तो नहीं, लेकिन कुछ कहीं अधिक जटिल। भूख और सोच का मिश्रण, उस शत्रु के प्रति गहरा सम्मान जिसे वह अब इतनी अच्छी तरह समझ चुकी थी।

वह उसके बगल में बैठने के लिए आगे बढ़ा। "क्या तुम्हें कोई संदेह है?" उसने पूछा।

"नहीं। बिलकुल उल्टा।" वह उसकी ओर मुड़ी, उसकी आँखों में बुझती आग की चिंगारियाँ झलक रही थीं। "मैं सोच रही हूँ कि वे कितने प्रतिभाशाली थे। ऐसी चीज़

बनाना जो तीन हज़ार साल तक टिकी रहे, जो खतरों के अनुसार ढल जाए, जो पहाड़ को ही हथियार बना दे। विक, हम यहाँ सिर्फ़ खजाने की बात नहीं कर रहे हैं। यह सबूत है।"

"किस बात का सबूत?"

"हम उतने उन्नत नहीं हैं जितना हम सोचते हैं। कहीं न कहीं, हमने वह ज्ञान खो दिया है जिसे हम अब पुनः खोज रहे हैं। और जो कोई भी उस ज्ञान को नियंत्रित करता है, वही सब कुछ नियंत्रित करता है।"

फिर वही नग्न महत्वाकांक्षा, सत्ता की भूख जो पूरी तरह से उसकी अपनी ही मानसिकता को प्रतिबिंबित करती थी।

"हम दोनों एक जैसे हैं, तुम और मैं," विक ने कहा।

"मुझे पता है। यही बात इसे खतरनाक बनाती है।"

"किसके लिए?"

वह मुस्कुराई, लेकिन उसकी मुस्कान उसकी आँखों तक नहीं पहुँची। "यही तो सवाल है, है ना?"

बाद में उसी रात, जब बाकी सब सो गए, तो विक ने आन्या के तम्बू से एक हल्की, लयबद्ध रोशनी देखी। पारदर्शी कपड़े से वह देख सकता था कि वह किसी चीज़ पर काम कर रही थी, उसकी उंगलियां किसी उपकरण पर तेज़ी से चल रही थीं। कोई संदेश भेज रही थी? किसे? उसने इस बात को याद रख लिया। समय आने पर, वह उसके खेल का पता लगा लेगा। लेकिन पहले, उसे आन्या की विशेषज्ञता की ज़रूरत थी।

पहाड़ उन दोनों को पा सकता था, लेकिन तभी जब वह वह हासिल कर ले जिसके लिए वह आया था।

अध्याय 7

वॉल्ट का दिल

हिमनदी के नीचे का कक्ष — छठा दिन, दोपहर के शुरुआती समय

अगले दिन दोपहर के ठीक बाद उन्हें दूसरा प्रवेश द्वार मिल गया, किसी बड़े खुलासे से नहीं, बल्कि राज के ड्रोनों द्वारा किए गए सावधानीपूर्वक, ग्रिड-दर-ग्रिड थर्मल स्कैन

से। यह आसानी से दिखाई नहीं दे रहा था—बस ग्लेशियर की सतह पर एक संकरी दरार थी, जो मुश्किल से एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त चौड़ी थी, और हवा में एक हल्की, लगभग अगोचर गर्मी थी जिससे आसपास की बर्फ थोड़ी नरम हो गई थी। राज के थर्मल सेंसर सही थे: बर्फ के भीतर गहराई में कुछ गर्मी पैदा कर रहा था।
"भूतापीय छिद्र," तेनज़िन ने सुझाव दिया, उसकी साँस ठंडी हवा में भाप बनकर उड़ रही थी। "पहाड़ की साँस, प्राकृतिक ऊष्मा। इन पर्वत श्रृंखलाओं में यह आम बात है।"
आन्या पहले से ही दरार के पास पहुँच चुकी थी, उसके उपकरण उस संकरी दरार के बिल्कुल करीब थे। "बाहर आने वाली हवा गर्म तो है, लेकिन साथ ही गतिशील भी है। इसमें हवा का संचार हो रहा है। यह सिर्फ एक निकास नहीं है—यह एक मार्ग है। अगर मेरे मॉडल सही हैं, तो यह बहुत ही सावधानीपूर्वक बनाया गया मार्ग है।" उसने दस्ताने वाली उंगली से दरार को छुआ। "गर्मी तो एक अतिरिक्त लाभ है, इसका उद्देश्य नहीं।"
विक ने फोन किया। "हरि, क्या तुम ढांचे को गिराए बिना इसे चौड़ा कर सकते हो? एकदम सटीक, कम से कम कंपन के साथ।"
हरि ने अपना थैला उठाया, उसकी आँखों में चमक थी। "मुझे एक घंटा दो। अगर तुम इसे अच्छे से करवाना चाहते हो तो और भी ज़्यादा।"
हरि विशेष डायमंड-वायर आरी (शांत, सटीक काटने वाले औजार जो विस्फोटकों के कंपन से मुक्त थे) से काम कर रहा था, जबकि बाकी टीम नीचे उतरने की तैयारी कर रही थी। उन्होंने रस्सी प्रणाली तैयार की, आपातकालीन ऑक्सीजन स्तर की जाँच की और शून्य से नीचे के अत्यधिक तापमान के लिए उपयुक्त बहुस्तरीय थर्मल गियर पहन लिए। राज ने अपने सबसे छोटे उपकरणों में से एक, माइक्रो-ड्रोन को लॉन्च किया और उसे चौड़ी होती दरार से गुजार दिया। उनके टैबलेट पर स्पष्ट और साफ दिखाई दे रहा था कि रास्ता एक तीव्र कोण पर नीचे उतर रहा है, जिसकी नीली बर्फ की दीवारें अप्रत्याशित रूप से संकरी और चौड़ी हो रही थीं। लेकिन यह गहराई तक जा रहा था, और थर्मल संकेत और भी मजबूत होते जा रहे थे, अब बर्फ में एक अलग कंपन के रूप में वॉल्ट की धीमी गूंज सुनाई दे रही थी।
राज ने बताया, "तीस मीटर अंदर जाने पर रास्ता एक कक्ष में खुलता है। बर्फ की वजह से कुछ दिखाई नहीं दे रहा। लेकिन तापमान पांच डिग्री बढ़ गया है। नीचे ज़रूर कुछ है।"

दोपहर होते-होते प्रवेश द्वार इतना चौड़ा हो गया था कि एक व्यक्ति मुश्किल से अंदर जा सकता था; हरि का काम सटीक और कुशल था। विक आगे-आगे चलता, फिर अन्या और उसके बाद तेनज़िन। राज और हरि ऊपर रहकर संचार पर नज़र रखते, आपातकालीन सामग्री के साथ तैयार रहते और ज़रूरत पड़ने पर सहायता प्रदान करने के लिए तैनात रहते।

नीचे उतरना एक घुटन भरा भयानक अनुभव था। कुछ जगहों पर रास्ता कंधों तक भी नहीं पहुँच पा रहा था, जिससे उन्हें करवट लेकर आगे बढ़ना पड़ रहा था और उनके बैग बर्फ की चिकनी दीवारों से रगड़ खा रहे थे। पिघला हुआ पानी लगातार टपक रहा था, ठंडा और लगातार, और उनकी साँस फूलने की आवाज़ उस तंग जगह में अजीब तरह से गूँज रही थी। हवा धीरे-धीरे गर्म होती गई, लेकिन दफ़न होने का एहसास स्पष्ट रूप से बना हुआ था।

लेकिन वो गूंज मौजूद थी। पहले धीमी, फिर हर मीटर नीचे उतरने के साथ-साथ तेज होती गई। 7.83 हर्ट्ज़ की गहरी, गूंजती हुई ध्वनि, पृथ्वी की धड़कन, बर्फ से और भी तेज हो गई, एक निरंतर, व्यापक कंपन जो उनकी हड्डियों में गहराई तक समा गई।

बीस मिनट तक सावधानीपूर्वक और सोच-समझकर चढ़ाई करने के बाद, वह रास्ता एक ऐसे कक्ष में खुला जैसा राज ने बताया था। वह छोटा था, शायद चार मीटर चौड़ा, लेकिन यहाँ की बर्फ अलग थी—ज़्यादा साफ़, लगभग कांच जैसी, अंदरूनी रोशनी से जगमगाती हुई। और गर्म भी। तापमान हिमांक से थोड़ा नीचे था, सतह की तुलना में उष्णकटिबंधीय जैसा।

"पिघले पानी की नहर," तेनज़िन ने धीमी, अस्पष्ट आवाज़ में पुष्टि की। "पुरानी है। बहुत स्थिर है। संभवतः यह एक भूतापीय छिद्र है जो इस गर्मी को प्रदान कर रहा है।"

लेकिन जो सामने था, उसे देखकर वे सब रुक गए। उनकी हेडलाइट्स ने अंधेरे को चीरते हुए एक अद्भुत दृश्य प्रकट किया। कक्ष की दीवार पर जमी बर्फ की परत के पार, वे सीधे मुख्य तिजोरी के अंदर देख सकते थे।

वे इसे नीचे से देख रहे थे, उस कुएँ के नीचे से जिसे उन्होंने मुख्य द्वार से देखा था। और इस अद्वितीय, विशेषाधिकार प्राप्त कोण से, पांडवों की इंजीनियरिंग प्रतिभा और उनके निर्मम इरादे का पूरा दायरा प्रकट हुआ।

तिजोरी में रखी वस्तुएँ केवल बेतरतीब ढंग से ढेर नहीं थीं; वे तारों के एक जटिल, त्रि-आयामी जाल में लटकी हुई थीं, जिनमें से प्रत्येक तार सटीक, सावधानीपूर्वक गणना

किए गए तनाव के अधीन था। सोने की सिल्लियाँ एक स्थिर, अनुनादी आधार बनाती थीं, लेकिन उनके ऊपर की हर चीज़ एक परस्पर जुड़ी हुई, स्व-विनियमित प्रणाली का हिस्सा थी। प्राचीन पात्रों में बंद ग्रंथ, आभूषणों के बक्से, अस्त्र—ये सभी याक के बालों से बने उन अद्भुत तारों द्वारा एक केंद्रीय आधार बिंदु से जुड़े हुए थे।
ब्रह्मसिरा।
जाले के ठीक बीचोंबीच एक सीसे का गोला लटका हुआ था, जो किसी आदमी की मुट्ठी से बड़ा नहीं था, और उससे दर्जनों पतले तार निकल रहे थे, मानो कोई मकड़ी अपने जाले के जटिल केंद्र में तार फैला रही हो। गोला स्वयं हल्का सा चमक रहा था, एक सूक्ष्म आंतरिक प्रकाश, हालांकि यह शायद उनकी हेडलाइट्स का उसकी चिकनी सतह पर पड़ने वाला प्रतिबिंब मात्र था।
"यह एक आधारशिला है," आन्या ने श्रद्धा से भरी आवाज़ में फुसफुसाते हुए कहा। "इसे हटा दो, तो पूरी तनाव प्रणाली विफल हो जाएगी। आवृत्तियाँ बेमेल हो जाएँगी, लय बिगड़ जाएगी, और—"
"और कई हज़ार टन बर्फ नीचे गिरती है," विक ने अपनी बात पूरी की, उसका दिमाग तेज़ी से जाल की असली प्रकृति को समझने की कोशिश कर रहा था। लेकिन वह हिसाब-किताब भी लगा रहा था। इस अनोखे कोण से, नीचे से, शायद मुख्य, विनाशकारी विफलता को ट्रिगर किए बिना तिजोरी तक पहुँचने का कोई रास्ता हो। अगर वे बर्फ की सतह को सावधानी से काट सकें, अगर वे नीचे से प्रवेश कर सकें, प्रतिध्वनित संरचना को दरकिनार करते हुए...
"क्या हम अंदर जा सकते हैं?" उसने आन्या की ओर मुड़कर पूछा।
वह साफ़ बर्फ़ के करीब गई और एक कुशल संरचना इंजीनियर की नज़र से उसका बारीकी से निरीक्षण करने लगी। उसने एक छोटे, विशेष औज़ार से उसे धीरे से थपथपाया और उससे निकलने वाली सूक्ष्म ध्वनि प्रतिक्रिया को सुना। "यह संभव है। यह बर्फ़ गर्म है, पिघले पानी और भूतापीय गतिविधि के कारण संरचनात्मक रूप से कमज़ोर है। हमें बहुत सावधानी बरतनी होगी—कोई भी महत्वपूर्ण कंपन ऊपर की ओर फैल सकता है और ब्रह्मशिरा के अनुनादी क्षेत्र को बाधित कर सकता है। लेकिन हाँ, मुझे लगता है कि हम बिना तुरंत ढहाए रास्ता बना सकते हैं।"
"कितनी देर?"
"घंटों। शायद पूरा दिन। और हमें शिफ्ट में काम करना होगा—थकान के कारण होने

वाली गलतियों का जोखिम नहीं उठा सकते। छोटी सी गलती भी विनाशकारी हो सकती है।"
विक ने धीरे से सिर हिलाया। "फिर हमने यहाँ एक बेस कैंप स्थापित किया। हरि काटने के उपकरण नीचे लाता है। राज ऊपर से सब कुछ निगरानी करता है। हम यह सब सावधानी से करते हैं। हर कदम सोच-समझकर उठाते हैं।"
उन्होंने पूरी रात और अगले दिन तक काम किया। हरि सटीक और कम कंपन वाले काम के लिए संशोधित थर्मिट कटिंग उपकरण लेकर नीचे उतरे। उन्होंने कटिंग ज़ोन के चारों ओर एक सख्त घेरा बनाया और संवेदनशील एक्सेलेरोमीटरों की मदद से कंपन की निगरानी की। आन्या ने बड़ी कुशलता से काम का संचालन किया, हर कट और हर सटीक तापीय ऊर्जा विस्फोट की गणना करते हुए, बर्फ की नाजुक संरचना पर तनाव को कम से कम किया। यह बेहद मेहनत वाला काम था—कुछ सेंटीमीटर काटना, रुकना, बर्फ की ध्वनि प्रतिक्रिया मापना, समायोजन करना और फिर काम जारी रखना। यह किसी जीवित प्राणी पर सर्जरी करने जैसा था।
राज के यंत्र, सतह से संचारित होकर, लगातार उस गुनगुनाहट पर नज़र रख रहे थे। आवृत्ति में कोई भी बदलाव, 7.83 हर्ट्ज़ की आधार रेखा से कोई भी विचलन, उनके लिए तत्काल चेतावनी का संकेत होता।
इसमें अठारह घंटे का कठिन समय लगा।
जब अंततः बर्फ पिघली और ऊपर स्थित तहखाने में एक मीटर चौड़ा प्रवेश द्वार खुल गया, तो वे सब रुक गए। ब्रह्मशिरा की गूंज तुरंत तेज हो गई और उस छोटे से कक्ष में गूंजने लगी। वे ऊपर की ओर टकटकी लगाए देख रहे थे, उनकी हेडलाइट्स उस अकल्पनीय दृश्य को रोशन कर रही थीं।
पांडवों के खजाने उनके ऊपर लटके हुए थे, इतने करीब कि उन्हें छुआ जा सके, फिर भी हजारों वर्षों की योजना द्वारा संरक्षित थे।
हेडलाइट की रोशनी में सोना चमक रहा था। अस्त्रों पर प्रकाश पड़ रहा था और वे भीतर से दमकते हुए प्रतीत हो रहे थे, उनमें जड़े क्वार्ट्ज़ क्रिस्टल लगभग जैविक प्रकाश की तरह प्रभाव पैदा कर रहे थे, एक सूक्ष्म ऊर्जा का विकिरण कर रहे थे। प्राचीन पात्रों में बंद ये ग्रंथ सहस्राब्दियों से लुप्त ज्ञान का वादा कर रहे थे, संपूर्ण विज्ञान की ऐसी परतें जिन्हें पुनः खोजा जाना बाकी था।
और केंद्र में, ब्रह्मसिरा अपनी निरंतर गूंज के साथ हल्की-हल्की स्पंदन करते हुए

प्रतीक्षा कर रहा था।
"हम एक-एक करके आगे बढ़ेंगे," विक ने जीत और सावधानी के मिले-जुले भाव से भरी आवाज़ में कहा। "हर कदम को परखेंगे। आन्या, तुम पहले जाओगी—तुम्हें संरचनात्मक रूप से क्या देखना है, बिना लय बिगाड़े जाल में कैसे आगे बढ़ना है, यह सब पता है।"
उसने सिर हिलाया, उसकी आँखों में नियंत्रित उत्साह झलक रहा था, और वह सावधानीपूर्वक और सधी हुई कुशलता से प्रवेश द्वार से ऊपर चढ़ने लगी। बाकी सब राज के फीड पर उसे देख रहे थे—उसके हेलमेट पर लगे कैमरे से तिजोरी में प्रवेश करते समय उसका नजरिया दिख रहा था।
वह स्थान कुएं की गहराई के बराबर ही ऊंचा था—फर्श से छत तक पंद्रह मीटर। केबलों ने एक जटिल त्रि-आयामी भूलभुलैया बना रखी थी, और आन्या एक सर्जन की तरह उनमें से गुज़रती हुई, हर जोड़ को पहचानती हुई, तनाव की हर रेखा का पता लगाती हुई आगे बढ़ रही थी।
"यह असाधारण है," रेडियो पर उनकी आवाज़ थोड़ी लड़खड़ाती हुई सुनाई दी, जिसमें सच्ची हैरानी का दुर्लभ भाव था। "इसकी सटीकता अविश्वसनीय है। हर तार बिल्कुल सही लंबाई और सही तनाव का है, जिससे एक स्व-संतुलन प्रणाली बन जाती है। किसी भी बाहरी वस्तु को सावधानीपूर्वक हटा दें, तो प्रणाली अपने आप समायोजित हो जाती है। लेकिन ब्रह्मशिरा - वही तो मुख्य आधार है। उसे छूते ही सब कुछ गड़बड़ा जाता है।"
"क्या हम बाकी सामान को सुरक्षित रूप से हटा सकते हैं?" विक ने पूछा।
"मुझे ऐसा लगता है। लेकिन हमें धीरे-धीरे, एक-एक करके काम करना होगा, और किसी भी अस्थिरता के लिए अनुनाद आवृत्ति की लगातार निगरानी करनी होगी। और फिर भी..." वह रुकी। "मुझे कुछ द्वितीयक संकेत दिख रहे हैं। बर्फ में दबाव संवेदक, संभवतः ग्लेशियर में ही एकीकृत ध्वनिक रिले। पांडव वास्तव में नहीं चाहते थे कि कोई इसे ले जाए।"
"कोई भी अच्छी चीज आसानी से नहीं मिलती," विक ने अपने जीवन के एक आदर्श वाक्य का हवाला देते हुए उत्तर दिया।
अगले कुछ घंटों में, उन्होंने एक व्यवस्थित निष्कर्षण प्रक्रिया स्थापित की। तिजोरी के अंदर, आन्या एक सुरक्षित लक्ष्य की पहचान करती, उसके संबंधों और समग्र

सामंजस्यपूर्ण संतुलन पर संभावित प्रभाव का विश्लेषण करती। विक प्रवेश द्वार से ऊपर चढ़ता और बड़ी धीमी गति से, सटीक और सोच-समझकर, उसे सावधानीपूर्वक निकालता। प्रत्येक वस्तु को सावधानीपूर्वक प्रवेश द्वार से तेनज़िन तक पहुँचाया जाता, जो उसे गद्देदार डिब्बों में सुरक्षित रखता।

उन्होंने सबसे पहले परिधीय वस्तुओं से शुरुआत की—तीन सोने की ईंटें, जिनमें से प्रत्येक का वजन साठ किलोग्राम से अधिक था, जिन पर प्राचीन कुरु मुहरें हल्की चमक रही थीं। फिर कुछ आभूषण, जिन्हें आन्या ने मुख्य केबल प्रणाली से असंबंधित बताया। प्रत्येक सफल निष्कर्षण तीन सहस्राब्दियों की इंजीनियरिंग के विरुद्ध एक छोटी, शांत जीत थी।

लेकिन वे ग्रंथ आपस में जुड़े हुए थे। और सभी अस्त्र सीधे ब्रह्मशिरा से जुड़े हुए थे, जो अनुनादी क्षेत्र का अभिन्न अंग थे।

छह घंटे के तनावपूर्ण और सावधानीपूर्वक काम के बाद आन्या ने कहा, "हमें एक फैसला लेना होगा। हम सोना लेकर जा सकते हैं। इसकी कीमत करोड़ों में है। या फिर हम हथियारों और जानकारी को हासिल करने का जोखिम उठा सकते हैं। लेकिन अगर हम उन केंद्रीय संपर्कों को तोड़ना शुरू कर दें तो क्या होगा, इसकी मैं गारंटी नहीं दे सकती।"

विक तिजोरी में खड़ा था, जो प्राचीन राजाओं के संचित धन और शक्ति से घिरा हुआ था, और उसने निर्णय के भारी भार को महसूस किया।

सोने की कीमत इतनी थी कि उससे एक निजी सेना का वित्तपोषण किया जा सकता था, और एक दर्जन देशों में प्रभाव खरीदा जा सकता था। यही सुरक्षित विकल्प था, लाभदायक विकल्प था।

लेकिन अस्त्र... यदि वे वास्तव में आधुनिक विज्ञान द्वारा पुनर्खोजे जा रहे सिद्धांतों पर आधारित कार्यात्मक हथियार थे, तो वे अनमोल थे। और उन ग्रंथों में ऐसा ज्ञान समाहित हो सकता था जो पदार्थ विज्ञान से लेकर सैन्य प्रौद्योगिकी तक हर क्षेत्र में क्रांति ला सकता था, और जिसके पास भी वह होता उसे अभूतपूर्व लाभ प्राप्त होता। जोखिम बनाम लाभ। यही वो हिसाब था जिसने उनके पूरे जीवन को परिभाषित किया था।

"हम सब कुछ ले लेंगे," उसने दृढ़ स्वर में निर्णय लिया। "लेकिन हम ग्रंथों से शुरुआत करेंगे। फिर हम अस्त्रों की ओर बढ़ेंगे। ब्रह्मसिरा को हम अंत के लिए बचाकर रखेंगे,

वही अंतिम पुरस्कार है।"
आन्या ने उसे कुछ देर तक देखा, और उसने उसकी आँखों में आंतरिक संघर्ष देखा। पेशेवर सावधानी और उसके भीतर की वही अदम्य भूख, गहन खोज का आकर्षण, आपस में टकरा रहे थे।
"ठीक है," उसने आखिरकार मान लिया, उसकी आवाज़ में हल्की सी खुशी झलक रही थी। "लेकिन अगर आवृत्ति 0.5 हर्ट्ज़ से ज़्यादा बदलती है, तो हम तुरंत प्रक्रिया रोक देंगे। राज, अलार्म को दबाने का अधिकार तुम्हारा है।"
उन्होंने एक और दिन-रात काम किया। प्राचीन अभिलेखों को सावधानीपूर्वक बाहर निकाला गया, उनके प्राचीन पात्र अक्षुण्ण थे, और याक के बालों से बनी उनकी जिल्दें आश्चर्यजनक रूप से संरक्षित थीं। राज ने प्रत्येक अभिलेख को ऊपर से सावधानीपूर्वक सूचीबद्ध किया, तीन हजार वर्षों से न पढ़े गए ग्रंथों को संभालते समय उसके हाथ सचमुच कांप रहे थे।
अस्त्रों की संरचना कहीं अधिक जटिल थी। प्रत्येक तीर का सिरा केंद्रीय जाल से जुड़ा हुआ था, और इन संबंधों को तोड़ने के लिए तारों को काटना आवश्यक था, साथ ही साथ उन पर मौजूद सटीक भार को संभालते हुए नाजुक संतुलन बनाए रखना भी जरूरी था। यह किसी जीवित, अस्थिर बम पर शल्यक्रिया करने जैसा था।
अन्या का योगदान अमूल्य साबित हुआ—संरचनात्मक अभियांत्रिकी की उनकी समझ, तिजोरी के भौतिकी के प्रति उनकी सहज अंतर्दृष्टि ही उन्हें जीवित रखे हुए थी। उन्होंने भार स्थानांतरण की गणना की, तनाव के पुनर्वितरण का पूर्वानुमान लगाया और संभावित विफलता बिंदुओं को भयावह रूप लेने से पहले ही पहचान लिया।
लेकिन जैसे-जैसे वे प्रत्येक अस्त्र को हटाते गए, गुनगुनाहट में थोड़ा बदलाव आता गया। ये सूक्ष्म बदलाव राज के वाद्ययंत्रों ने पकड़ लिए, भले ही इंसानी कान उन्हें न सुन सकें।
7.83 हर्ट्ज़। 7.85 हर्ट्ज़। 7.89 हर्ट्ज़।
"यह बेमेल हो रहा है," राज ने रेडियो पर चेतावनी दी, उसकी आवाज़ कसी हुई थी। "धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से। जो भी सामंजस्यपूर्ण संतुलन था, हम उसे सक्रिय रूप से बिगाड़ रहे हैं। बर्फ प्रतिक्रिया दे रही है।"
उन्होंने सात अस्त्र हटा दिए थे, तभी विक ने उसे देखा—ठीक उनके ऊपर बर्फ की छत में एक बारीक दरार। बड़ी नहीं, मुश्किल से दिखाई देने वाली, लेकिन निश्चित रूप

से नई। हिमनदी गिरजाघर में एक उभरती हुई दरार।
"आन्या।"
उसने भी इसे देखा और उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। "हमें रुकना होगा। संरचनात्मक अखंडता खतरे में है। अनुनाद बहुत अस्थिर है।"
लेकिन वे बेहद करीब थे। उनके ऊपर ब्रह्मसिरा टंगा हुआ था, परम पुरस्कार, आदिम ऊर्जा से स्पंदित। और उस क्षण, विक ने अपने बारे में एक गहरा अहसास किया: वह इसे पाने की कोशिश में मरना पसंद करेगा, बजाय इसके कि यह जानते हुए जिए कि वह इससे दूर चला गया।
"एक और," उसने दृढ़ स्वर में कहा। "हम एक और अस्त्र भेदेंगे, और फिर ब्रह्मसिरा की ओर बढ़ेंगे। या तो सब कुछ या कुछ भी नहीं।"
"यह तो पागलपन है। जिस क्षण हम उस केंद्रीय गोले को छूते हैं—"
"मुझे पता है। लेकिन इसे देखो।" उन्होंने ब्रह्मशिरा की ओर इशारा करते हुए कहा। "यह तिजोरी के फर्श से केबलों द्वारा जुड़ा नहीं है। यह पूरी तरह से जाली से लटका हुआ है। अगर हम इसे काटकर अलग कर दें और साथ ही साथ बाकी सभी परिधीय केबलों पर तनाव कम कर दें, तो भार समान रूप से वितरित हो जाता है। सिस्टम ढहता नहीं है—बस स्थिर हो जाता है। यह एक नियंत्रित निष्क्रियता है।"
आन्या उसे घूरती रही, उसके दिमाग में इसके संभावित परिणामों के बारे में तरह-तरह के विचार चल रहे थे। "यह एक सिद्धांत है। एक ऐसा सिद्धांत जिसकी अभी तक जांच नहीं हुई है और जो तीन हज़ार साल पुरानी इंजीनियरिंग पर आधारित है जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझते हैं। हमें यह नहीं पता कि हज़ारों वर्षों के बाद उन केबलों के भौतिक गुण क्या होंगे या उनमें किस प्रकार का क्षरण होगा।"
"क्या आपके पास कोई बेहतर तरीका है जिससे हम ब्रह्मशिरा से बाहर निकल सकें?"
उसने तुरंत जवाब नहीं दिया। और उस चुप्पी में, विक को अपना फैसला स्पष्ट होता हुआ दिखाई दिया। वही भूख, वही सर्वोच्च पुरस्कार के लिए सब कुछ दांव पर लगाने की तत्परता।
"हमें बाकी सभी परिधीय केबलों को एक साथ काटना होगा," उसने अंत में लगभग फुसफुसाते हुए कहा। "कम से कम आठ, जो विशिष्ट तनाव बिंदुओं पर स्थित हैं। इसके लिए हम दोनों को पूर्ण समन्वय के साथ काम करना होगा। गलती की कोई गुंजाइश नहीं है।"

"क्या हम ऐसा कर सकते हैं?"
वह मुस्कुराई, उसके चेहरे पर सच्ची, बेपरवाह उत्तेजना की एक झलक थी, जो उसने उससे अब तक का सबसे खुला भाव देखा था। "शायद नहीं। लेकिन चलो पता लगाते हैं।"
उन्होंने तैयारी में दो घंटे बिताए। काटे जाने वाले प्रत्येक परिधीय केबल की पहचान की। तंग तहखाने में अभ्यास के तौर पर समय का आकलन किया, तालमेल बिठाकर काम करने का पूर्वाभ्यास किया। अपने विशेष हीरे के तार काटने वाले औजारों को सटीक स्थानों पर स्थापित किया। राज ऊपर से निगरानी कर रहा था, रेडियो पर उसकी आवाज तनाव से भरी हुई थी, और वह लगातार अस्थिर होती आवृत्ति रीडिंग को प्रसारित कर रहा था।
छत में दरार बढ़ गई थी। थोड़ी सी ही सही, लेकिन स्पष्ट रूप से। अब मकड़ी के जाले जैसी दरार नंगी आंखों से दिखाई दे रही थी।
"तीन पर," विक ने अपने चारों केबलों पर तैनात होकर कहा, उसके दस्ताने पहने हाथ में औजार धीरे से बज रहा था। आन्या उसके सामने खड़ी थी, एकाग्रचित्त, तैयार।
"एक। दो। तीन।"
आठ तार एक साथ टूट गए। हीरे के तार वाली आरी ने पलक झपकते ही प्राचीन याक के बालों से बनी नसों को काट डाला।
एक पल के लिए कुछ नहीं हुआ। हवा थम सी गई, मानो संभावनाओं से भरी हो। फिर पूरी गुफा एक गहरी, गूंजती हुई आवाज से कांप उठी। मानो पहाड़ खुद विरोध में आह भर रहा हो।
तनाव के पुनर्वितरण के साथ शेष वस्तुएँ कुछ सेंटीमीटर नीचे खिसक गईं, मानो प्राचीन प्रणाली की हल्की सी आह भरी हो। ध्वनि में नाटकीय परिवर्तन आया — 7.92 हर्ट्ज़, 8.01 हर्ट्ज़, 8.15 हर्ट्ज़। अस्थिर।
ब्रह्मशिरा अचानक बिना सहारे के, अपने रस्सियों के कट जाने से, स्वतंत्र रूप से झूलने लगा।
विक ने झपट्टा मारा और सीसे के गोले को अपने हाथों में जकड़ लिया। वह गर्म था, लगभग अत्यधिक गर्म, और उसने अपनी हथेलियों में एक शक्तिशाली, लगभग सजीव कंपन महसूस किया जिसका मात्र ध्वनि से कोई संबंध नहीं था। यह शुद्ध ऊर्जा थी।

छत में आई दरार एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ फैल गई। एक छोटी कार के आकार का बर्फ का टुकड़ा टूटकर नीचे गिरा और उस तिजोरी के फर्श पर जा टकराया जहाँ वे लोग अभी-अभी खड़े थे।

"जाओ!" नीचे से तेनज़िन की आवाज़ चीखी, डर ने आखिरकार उसकी शांति भंग कर दी।

विक प्रवेश द्वार से नीचे उतरा, ब्रह्मसिरा को उसने कसकर अपनी छाती से चिपका रखा था। अन्या उसके ठीक पीछे थी, हलचल मच गई, और उनके ऊपर से आती कराह एक गर्जना में बदल गई, क्योंकि टन बर्फ तिजोरी में गिरने लगी, और उस जगह को भर दिया जिसे उन्होंने अभी-अभी खाली किया था।

वे दौड़ते हुए पिघले पानी के कक्ष में पहुँचे, तेनज़िन पहले ही निकास मार्ग की ओर बढ़ रहा था। उनके पीछे, गर्जना और तेज़ हो गई क्योंकि पांडवों का गुंबद अंततः ढह गया और अंदर ही अंदर धंस गया।

सतह पर वापस लौटना किसी भयानक दौड़ जैसा था। बर्फ के टुकड़े बरस रहे थे। दीवारें कांप रही थीं, अत्यधिक दबाव के कारण चरमरा रही थीं। उन्हें दो बार नए ढहे हुए हिस्सों पर चढ़ना पड़ा, तंग होती दरारों से होकर गुजरना पड़ा, बर्फ चरमरा रही थी, कांप रही थी, मानो जीवित हो उठी हो।

वे हांफते हुए दिन के उजाले में निकले तो देखा कि हरि और राज पहले से ही आपातकालीन निकासी योजना का पालन करते हुए उपकरण पैक कर रहे थे, जिसका उन्होंने अभ्यास किया था।

"सेराक!" राज ने ऊपर की ओर इशारा किया, उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया था।

घाटी के किनारे पर, बर्फ के विशाल स्तंभों में से एक झुक रहा था। पहले धीरे-धीरे, फिर तेज़ी से। यह हिमनद से एक ऐसी आवाज़ के साथ अलग हुआ मानो दुनिया खत्म हो रही हो, एक चीरने और घिसने जैसी गर्जना के साथ, फिर घाटी की तलहटी की ओर, सीधे उस ढह चुके स्तंभ के ऊपर, गिरने लगा।

वो भागे।

बर्फ का एक बड़ा टुकड़ा उनसे आधा किलोमीटर पीछे ग्लेशियर से टकराया, और उसका प्रभाव भूकंपीय था। विस्थापित हवा की एक दबाव तरंग ने उन्हें ज़मीन पर गिरा दिया। बर्फ एक विशाल बादल की तरह ऊपर उठी, साफ आसमान में एक सफेद

मशरूम की टोपी जैसी आकृति बन गई। गर्जना इतनी तेज़ थी कि वह ध्वनि से परे जाकर एक भौतिक शक्ति में बदल गई, जिससे उनके नीचे की ज़मीन कांप उठी।
जब दुनिया कांपना आखिरकार बंद हुआ, तो वे गुफा के मूल प्रवेश द्वार से दो किलोमीटर दूर बर्फ में लेटे हुए थे, उनके कान बज रहे थे, शरीर की हर नस चीख रही थी।
उनके पीछे की घाटी पूरी तरह बदल चुकी थी। जहाँ गुफा थी, वह जगह अब लाखों टन बर्फ और हिम के नीचे दबी हुई थी, एक नया, अव्यवस्थित भूदृश्य जो हिमनदों के मलबे से बना था। पूरा हिमनद ढह गया था, जिससे एक नई स्थलाकृति का निर्माण हुआ था जिसे भूवैज्ञानिकों को ठीक से मानचित्रित करने में दशकों लग जाएंगे, शायद कभी हो भी न पाए।
पांडवों का जाल पूरी तरह से फैल चुका था। और यह एकदम सटीक था।
लेकिन विक के पास अभी भी ब्रह्मसिरा था।
और उनके चारों ओर बिखरे हुए, गद्देदार थैलों में सुरक्षित, अस्त्र, ग्रंथ और इतना सोना था जिससे एक छोटा राष्ट्र खरीदा जा सकता था।
वे बच गए थे। और वे जीत गए थे।
या कम से कम वे यही सोचते थे।

अध्याय 8

शिकार की परछाइयाँ

हिमालय की तलहटी — निष्कर्षण की पूर्व संध्या
भारत-नेपाल सीमा के पास स्थित एक छोटी, अज्ञात हवाई पट्टी, जहाँ से निकलने का रास्ता तय होना था, ढह चुकी घाटी से अभी भी तीन दिन की कठिन पैदल यात्रा की दूरी पर थी। वे तेज़ी से लेकिन सावधानी से आगे बढ़े, बर्फ से ढके खतरनाक दर्रों से चुपचाप एक जुलूस की तरह गुज़रे। राज ने पुष्टि की थी कि भूकंपीय घटना पूरे क्षेत्र के निगरानी केंद्रों पर दर्ज की गई होगी—एक ऐसी भूवैज्ञानिक विसंगति जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था। सवाल पूछे जाएँगे। जाँच शुरू की जाएगी। उन्हें गायब होना ज़रूरी था।
दो दिनों तक पीछा जारी रहा, हिमालय की ऊबड़-खाबड़ तलहटी में चूहे-बिल्ली का

एक अथक और जोखिम भरा खेल चलता रहा। विक की टीम के पास महत्वपूर्ण फायदे थे: वे छोटे थे, अधिक फुर्तीले थे, और तेनज़िन, लगभग अलौकिक कुशलता से चलते हुए, इलाके को भली-भांति जानता था, जिससे वह उन्हें भूले हुए पहाड़ी रास्तों और ऊपर से अदृश्य संकरे दर्रों से होकर ले जा रहा था। लेकिन भाड़े के सैनिक दृढ़ निश्चयी और असाधारण रूप से सुसज्जित थे। राज के निष्क्रिय स्कैन से उनके परिष्कृत संचार तंत्र, उनके सैन्य-स्तरीय ड्रोन, उनकी थर्मल इमेजिंग क्षमताएं - ये सभी गंभीर वित्त पोषण और पेशेवर स्तर के प्रशिक्षण का संकेत देते थे।
हरि ने दो बार घात लगाकर हमला किया, लेकिन उसका मकसद लड़ाई करना नहीं, बल्कि देरी करना था। उसने सटीक विस्फोटों से छोटे, नियंत्रित चट्टान खिसकाए या थर्मिट फ्लेयर्स का इस्तेमाल करके झूठे रास्तों की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिससे उसे कीमती घंटे मिल गए और दुश्मन की नजरों से ओझल हो गया।
तीसरे दिन, जब पतला, चाँदी जैसा चाँद उगने लगा, और आखिरकार वे अपने पीछा करने वालों से इतनी दूरी बना चुके थे कि थोड़ी देर आराम कर सकें, तब विक का आन्या के बारे में संदेह पक्का हो गया। वह गुप्त रूप से संचार आवृत्तियों की निगरानी कर रहा था, जिसके लिए उसने राज द्वारा विशेष रूप से संशोधित उपकरण का इस्तेमाल किया था—एक कम शक्ति वाला, व्यापक स्पेक्ट्रम स्कैनर जो एन्क्रिप्टेड संदेशों को भी पकड़ सकता था। और उसने कुछ पकड़ा, एक संक्षिप्त, सघन संदेश। यह एन्क्रिप्टेड था, लेकिन उसका सिग्नेचर, उसका विशिष्ट पैटर्न, वह अच्छी तरह जानता था।
भारतीय सैन्य खुफिया एजेंसी (आरएडब्ल्यू)।
उस शाम उसने आन्या को दूसरों से अलग बैठे हुए पाया, वह बड़ी सावधानी से अपने विशेष ड्रोन लेंस को साफ कर रही थी, उसका चेहरा उसकी हेडलाइट की हल्की रोशनी से जगमगा रहा था।
"तुम संदेश भेज रहे हो," उसने सपाट, भावहीन आवाज में कहा।
उसने इससे इनकार नहीं किया। उसकी हरकतें जरा भी नहीं डगमगाईं। "हाँ।"
"तुम बिल्कुल कच्चे हो।" यह कोई सवाल नहीं, बल्कि एक तथ्य है।
"था। लगभग अड़तालीस घंटे पहले तक।" यह स्वीकारोक्ति उनके बीच ठंडी हवा की तरह भारी होकर लटकी रही।
"समझाओ," विक ने आदेश दिया, उसकी आवाज खतरनाक रूप से शांत थी, एक

धीमी गुर्राहट जो टालमटोल करने पर हिंसा का वादा करती थी।
ठंड में भाप के गुबार की तरह, आन्या ने आह भरी। वह एक चट्टान पर बैठ गई, पहले से कहीं ज़्यादा थकी हुई लग रही थी। महत्वाकांक्षी शिक्षाविद डॉ. आन्या सिंह का मुखौटा उतर गया और सामने आई अनुभवी खुफिया एजेंट अवंतिका शर्मा। "मुझे आपके ऑपरेशन में घुसपैठ करने के लिए भेजा गया था। आप जो भी खोज रहे थे, उसे बरामद करना, आपके नेटवर्क को नष्ट करना और आपको पूछताछ के लिए लाना। एक भगोड़े एजेंट को पकड़ने का यह एक सामान्य मिशन है।"
और अब?
"अब मैं सबसे संपर्क तोड़ चुकी हूँ। सभी आधिकारिक और अनौपचारिक संचार बंद कर दिए हैं।" उसने ऊपर उसकी ओर देखा, उसकी आँखें थकी हुई थीं लेकिन दृढ़ थीं। "क्योंकि मुझे उस तहखाने में कुछ समझ आया। जो हमने पाया है, वह किसी भी सरकार के पास नहीं होना चाहिए। ब्रह्मसिरा अकेले ही वैश्विक सत्ता संरचनाओं को अस्थिर कर सकता है—अज्ञात शक्ति का एक गूंजता हुआ स्रोत, जिसे किसी कारण से दबा दिया गया है। उन ग्रंथों में निहित ज्ञान, जिसके भी पास होगा, भौतिक विज्ञान, ऊर्जा, सैन्य प्रौद्योगिकी में क्रांति ला सकता है। RAW इसे पूरी तरह से बंद कर देगा, इसे गुप्त अभिलेखागारों में दफना देगा जहाँ यह कभी प्रकाश में नहीं आएगा, कभी समझा नहीं जाएगा, कभी अपनी वास्तविक क्षमता को साकार नहीं कर पाएगा। या इससे भी बुरा, इसे अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल करेगा।"
"तो तुमने इसे अपने पास रखने का फैसला किया," विक ने व्यंग्य भरे लहजे में बात खत्म की।
"हमने फैसला किया," उसने अपनी बात सुधारते हुए कहा, उसकी पुरानी ऊर्जा की एक झलक फिर लौट आई। "तुम इसे मुनाफे के लिए बेचना चाहते हो। मैं इसे समझना चाहती हूँ, इस पर नियंत्रण रखना चाहती हूँ, शक्ति के लिए। क्या सच में एक दूसरे से ज़्यादा श्रेष्ठ है, विक? हम दोनों इसका जवाब जानते हैं।"
विक ने उसके चेहरे को गौर से देखा, झूठ या झूठ का कोई संकेत ढूंढने की कोशिश की। लेकिन उसे केवल अपनी ही भूख, अपनी ही निर्मम गणना का प्रतिबिंब दिखाई दिया, जो दिखावे से रहित था।
"जो टीम हमारा पीछा कर रही है—क्या वे बिल्कुल नए हैं?"

"शायद। या फिर RAW द्वारा काम पर रखा गया। अब मुझे एक भगोड़ा एजेंट माना जाता है। वे मुझे भी उतना ही बुलाना चाहेंगे जितना आपको। मैंने प्रोटोकॉल तोड़ा; मैंने गोपनीय जानकारी चुराई। मैंने एक बड़े, अधिक खतरनाक सत्य के लिए अपनी शपथ तोड़ी।"

"तो फिर हमारा एक साझा दुश्मन है," विक ने स्वीकार किया। "फिलहाल के लिए।"

वह उसके सामने खड़ी हो गई, उसका हावभाव अचानक अधिकारपूर्ण प्रतीत हुआ। "लेकिन एक बात स्पष्ट कर दूं, राठौर। मैं तुम्हारे अभियान में शामिल नहीं हो रही हूं। मैं तुम्हारी संपत्ति नहीं बनूंगी, तुम्हारे गुप्त साम्राज्य का एक और हिस्सा नहीं बनूंगी। यह एक अस्थायी गठबंधन है। जब सब कुछ ठीक हो जाएगा, तो हम कलाकृतियों को आपस में बांट लेंगे और अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे। मेरा हिस्सा तय है और इस पर कोई समझौता नहीं होगा।"

"तीस प्रतिशत?" उसने उसकी परीक्षा लेते हुए पूछा।

वह मुस्कुराई, उसकी आँखों में एक ठंडी, कठोर चमक थी। "पचास-पचास। आपको मेरी ज़रूरत है ताकि मैं RAW की निगरानी से बच सकूँ, उन दस्तावेज़ों की व्याख्या कर सकूँ, यह समझ सकूँ कि हमने वास्तव में क्या मुसीबत खड़ी कर दी है। मुझे आपके बचाव नेटवर्क, आपके संसाधनों की ज़रूरत है। बराबर के साझेदार या दुश्मन। चुनिए।"

विक ने इस पर विचार किया। वह सही थी—आरएडब्ल्यू अब निर्दयी हो जाएगा, और उनकी प्रक्रियाओं, उनके मनोवैज्ञानिक प्रोफाइल, उनकी परिचालन रणनीतियों के बारे में उसका गहन ज्ञान अमूल्य साबित होगा। और तत्काल खतरे से टल जाने के बाद वह हमेशा बातचीत फिर से कर सकता था। या अगर वह बहुत अधिक बोझ बन जाती, तो वह उसे हटा भी सकता था। उसने पहले भी ऐसा किया था। वह फिर से ऐसा करेगा।

"साझेदार," उसने हाथ बढ़ाते हुए सहमति जताई।

उसने उसकी पकड़ का सामना किया। उसका हाथ दृढ़ था, उसकी आँखें कठोर थीं, जो एक साझा, खतरनाक दृढ़ संकल्प के अलावा और कुछ नहीं दर्शाती थीं।

उनमें से किसी ने भी एक पल के लिए भी दूसरे पर भरोसा नहीं किया।

उस रात, उन्होंने निकासी बिंदु की ओर अपना अंतिम अभियान शुरू किया—भारत-नेपाल सीमा के पास एक छोटी, अप्रयुक्त हवाई पट्टी, जिसका इस्तेमाल विक पहले अवैध माल ढुलाई के लिए करता था। एक अन्य Mi-17 हेलीकॉप्टर पहले से ही वहाँ

मौजूद था, ईंधन भरा हुआ और इंतज़ार कर रहा था, पायलट ने विक द्वारा अग्रिम रूप से भुगतान की गई कीमत के लिए कोई सवाल नहीं पूछा।
लेकिन जैसे ही वे हरि के नेतृत्व में आगे बढ़ते हुए पट्टी के पास पहुँचे, तेनज़िन ने रुकने का संकेत दिया और बर्फ के ढेर के पीछे छिप गया। "आगे बढ़ो। अवरोधक स्थिति।"
विक ने सावधानीपूर्वक आगे बढ़ते हुए, रात्रि दृष्टि यंत्र का उपयोग करके हवाई पट्टी का जायजा लिया। कम से कम बीस सैनिक। पेशेवर सैन्य मुद्रा में। दूरी बनाकर खड़े, हथियार तैयार। और केंद्र में, नागरिक वस्त्रों में एक महिला खड़ी थी, जो कमान संभालने की अभ्यस्त सहजता और अधिकार के साथ खड़ी थी।
विक ने दूरबीन से उसे स्पष्ट रूप से देखा—लगभग चालीस वर्ष की, कठोर आँखों वाली, दुबली-पतली, एथलेटिक कद-काठी वाली, जो किसी पेशेवर पुलिस अधिकारी की पहचान थी। उसकी निगाहें लगभग अलौकिक जागरूकता के साथ उस सुनसान परिदृश्य पर घूम रही थीं।
"वह कौन है?" उसने धीमी आवाज़ में आन्या से पूछा।
वह उसके बगल में एकदम शांत खड़ी हो गई, उसका पूरा शरीर अकड़ गया था। "इंस्पेक्टर मीरा सिंह। केंद्रीय जांच ब्यूरो में काम करती हैं, लेकिन वो रॉ के मामलों पर काम करती हैं। राठौर, वो सालों से तुम्हारा पीछा कर रही हैं। मेरी फाइल में उनका ज़िक्र था।"
"क्या कोई व्यक्तिगत संबंध है?" विक ने मौका भांपते हुए पूछा।
"वह बेहद दृढ़ निश्चयी है। कराची में हथियारों के एक असफल सौदे में उसने अपने एक साथी को खो दिया था, इससे पहले कि आप पूरी तरह गायब हो गए। आपको अपने साथ लाना ही उसका जीवन का लक्ष्य बन गया है। वह आपके प्रति जुनूनी है।"
विक ने दूरबीन नीचे की। निकासी बिंदु खतरे में था। हेलीकॉप्टर तक पहुंचना असंभव था, चारों ओर से घिरा हुआ था। और वे चारों तरफ से घिरते जा रहे थे—वह देख सकता था कि दूसरी टीमें पार्श्व स्थिति की ओर बढ़ रही थीं, घेरा कसती जा रही थीं।
"विकल्प?" उसने तेनज़िन से पूछा और मुड़ गया।
शेरपा ने इलाके का जायज़ा लिया, उसका झुर्रियों से भरा चेहरा भावहीन था। "उत्तर की ओर पीएलए का इलाका है—वे पहले गोली चलाएंगे, बाद में सवाल पूछेंगे। पूर्व की ओर पहाड़ों में और भी गहराई तक जाना पड़ता है—बिना रसद के हम बच नहीं

पाएंगे। दक्षिण की ओर हम वहीं से आए हैं, भाड़े के सैनिक हमारा पीछा कर रहे हैं। पश्चिम..." वह रुका, उसकी नज़रें दूर की ऊबड़-खाबड़ चोटियों पर टिकी थीं। "पश्चिम की ओर जाना मुमकिन है। इलाका ऊबड़-खाबड़ है, लेकिन वहाँ एक मठ है। ड्रेपुंग गोम्पा। शायद तीन दिन पैदल चलना पड़े। हो सकता है वे हमें पनाह दें।"
"शायद?" विक ने सवाल किया।
"यह ड्रेपुंग गोम्पा है। गेलुग परंपरा का पालन करता है। वे पुराने कानूनों का अनुसरण करते हैं। जो लोग विधिवत प्रार्थना करते हैं, उनके लिए यह एक पवित्र स्थान है। लेकिन वहां पहुंचने के लिए काली नदी की घाटी को पार करना पड़ता है - वहां केवल एक ही पुल है, और वह भी खुला हुआ है। एक संकरा रास्ता।"
विक ने हिसाब लगाया। सामने एक ज्ञात, भयंकर खतरा था। पीछे अज्ञात लेकिन उतनी ही घातक परिस्थितियाँ थीं। और पश्चिम की ओर शरण पाने का एक पतला, अनिश्चित मौका था।
"हम पश्चिम की ओर चलते हैं। हरि, एक विलंबकारी विस्फोटक लगाओ—थर्माइट, घातक नहीं, बस इतना ज़ोरदार कि हमें समय मिल जाए, शायद उन्हें लगे कि हम दक्षिण की ओर चले गए हैं। राज, सभी गैर-जरूरी सामान हटा दो। अन्या, तुम मेरे साथ हो।"
जैसे ही वे आगे बढ़ने की तैयारी कर रहे थे, विक ने अपने दूरबीन से इंस्पेक्टर मीरा सिंह पर आखिरी नजर डाली। वह अपनी टीमों का कुशल समन्वय कर रही थीं, घेरा कस रही थीं, और उनके हावभाव से गंभीर संतुष्टि झलक रही थी।
अलग परिस्थितियों में, वह शायद उसकी निष्ठा और न्याय के प्रति उसके अटूट भाव की प्रशंसा करता।
इन परिस्थितियों में, वह बस एक और बाधा थी जिसे पार करना था।
वे हवाई पट्टी और अपने नियोजित निकासी मार्ग को पीछे छोड़ते हुए अंधेरे में गायब हो गए। उनके पीछे, हरि का बम फट गया—एक शानदार थर्मिट विस्फोट हुआ, जिसने रात के आकाश को चमकीले, आग जैसे नारंगी रंग से रंग दिया, जिसके बाद पहाड़ों में गूंजती एक जोरदार गर्जना सुनाई दी। इससे ध्यान आकर्षित होगा, शिकारियों को भ्रमित करेगा, और उम्मीद है कि इससे यह संकेत मिलेगा कि वे दक्षिण की ओर चले गए हैं।
लेकिन विक जानता था कि यह राहत अस्थायी है। मीरा सिंह साधारण सी भ्रामक

जानकारी के कारण वर्षों तक उसका पीछा नहीं कर पाई थी।

अध्याय 9

नाजुक अवधि

काली नदी की घाटी — भोर, खोज का चौथा दिन

काली नदी की घाटी हजारों वर्षों के निरंतर कटाव से धरती पर बना एक गहरा घाव थी —तीन सौ मीटर गहरी खाई, जिसकी विशाल ग्रेनाइट की दीवारें नीचे उफनती धारा में सीधी गिरती थीं। उग्र जलधारा से धुंध के गुबार उठते हुए धुंधले बादल छा जाते थे, जो पहाड़ की दूर की गड़गड़ाहट की तरह हल्की, आदिम गर्जना को ऊपर ले जाते थे। दूसरी ओर, चट्टान से चिपके हुए, किसी जिद्दी सीप की तरह, ड्रेपुंग गोम्पा खड़ा था। प्राचीन मठ की सफेदी की हुई दीवारें बर्फ में इस तरह घुलमिल जाती थीं कि मानो सुनहरी छतें भोर की पहली हल्की किरणों को पकड़ लेती थीं, मानो अराजकता के बीच एक आश्रय का प्रकाशस्तंभ हों।

पुल बिल्कुल वैसा ही था जैसा तेनज़िन ने वर्णन किया था: स्टील के तारों से बना एक जर्जर ढाँचा, जिन पर प्राचीन भांग की डोरियाँ बुनी हुई थीं, और जिसकी लकड़ी की पटियाँ पीढ़ियों से तीर्थयात्रियों और याकों के चलने से घिसकर चिकनी हो गई थीं। प्रार्थना के झंडे, फीके और फटे हुए, प्रेतवाधित झंडों की तरह उस पर लहरा रहे थे, जो घाटी से होकर बहने वाली निरंतर, कर्कश हवा में फड़फड़ा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वह अपना ही भार मुश्किल से संभाल पा रहा हो, पाँच बेबस लोगों का भार तो दूर की बात है, जो कुछ देशों के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से भी अधिक मूल्यवान कलाकृतियाँ ढो रहे थे।

"वह चीज़ कितनी पुरानी है?" राज ने घबराते हुए किनारे से नीचे झांकते हुए पूछा, नीचे की ओर देखते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"छह सौ साल, शायद सात सौ," तेनज़िन ने शांत भाव से जवाब दिया और दस्ताने पहने हाथ से पहले तार को परखते हुए कहा। "भिक्षुओं द्वारा इसकी देखभाल की जाती रही है। वे हर पीढ़ी में लकड़ी बदलते हैं। तार असली हैं—स्टील और भांग से बुने हुए, लोसार के दौरान हर पूर्णिमा को पवित्र किए जाते हैं। इस पर तीर्थयात्री, व्यापारी, सेनाएँ सफ़र कर चुकी हैं। यह हमें भी संभाल लेगा।"

"क्या यह सात सौ साल पहले का मूल है?" राज की आवाज थोड़ी लड़खड़ा गई।
तेनज़िन ने कंधे उचकाए। "विश्वास और इंजीनियरिंग। धर्म उसे बांधे रखता है जिसे समय ढीला कर देता है।" विक ने दूरबीन से आसपास के रास्तों का जायजा लिया। पचास किलोमीटर के दायरे में दोनों दिशाओं में यही एकमात्र पार करने का स्थान था —कोई भी रस्सियों से उतरने वाला उपकरण इतनी ऊंचाई से नहीं उतर सकता था, कोई भी हेलीकॉप्टर इन हवाओं में मंडरा नहीं सकता था। उनके पीछे, उसे दूर से रोटर ब्लेड की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी—वह हेलीकॉप्टर जो सुबह से उनका पीछा कर रहा था, मीरा सिंह की टीमें लगातार उनके करीब आती जा रही थीं।
"हम पार करेंगे। हम सब एक साथ। फैलकर चलने से संरचना पर कम दबाव पड़ता है। स्थिर गति, दौड़ना नहीं। पहले तेनज़िन, फिर राज, हरि भारी थैलों के साथ, मैं चौथे नंबर पर, आन्या सबसे पीछे। मेरे इशारे पर आगे बढ़ो।"
वे एक-एक करके पुल पार करने लगे, प्राचीन लकड़ी पर उनके बूटों की हल्की-हल्की आवाज़ आ रही थी। पुल तुरंत हिलने लगा, एक भयानक, जीवंत गति जो घाटी से होकर बहने वाली हवा के कारण उत्पन्न हो रही थी, मानो कोई दुष्ट आत्मा हो। नीचे, काली नदी दूर एक झागदार सफेद धागे की तरह बह रही थी, उसकी गर्जना उनके कानों पर लगातार दबाव डाल रही थी।
विक की निगाहें सामने हरि की चौड़ी पीठ पर टिकी हुई थीं। लकड़ी के तख्ते असमान थे, कुछ सड़कर काले दरारों में तब्दील हो गए थे, जिससे संभलकर कदम रखना और हर कदम को परखना ज़रूरी हो गया था। हर हरकत के साथ मुख्य तार चरमरा रहे थे, पुराने स्टील के रेशे असामान्य तनाव के कारण विरोध कर रहे थे। हवा के झोंके उन्हें अगल-बगल धकेल रहे थे, पूरी संरचना किसी घायल जानवर की तरह कराह रही थी।
वे लगभग आधे रास्ते तक ही पहुँच पाए थे—तीस खतरनाक मीटर की दूरी—तभी एक हेलिकॉप्टर उनके पीछे पूर्वी पहाड़ी की चोटी पर आ गिरा, भोर के आकाश में उसकी काली आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। उसके रोटर से निकली हवा तूफ़ान की तरह पुल से टकराई, जिससे पुल बुरी तरह हिलने और मुड़ने लगा।
तेज़ हवा के बीच तेनज़िन ने पीछे से आवाज़ लगाई, "रुको मत! अपनी गति बनाए रखो! आगे देखते रहो! हम लगभग पहुँच ही गए हैं!"
विक ने केबल रेलिंग को पकड़ लिया, इन्सुलेशन की परतों के बावजूद खुरदरी भांग की रस्सी उसके दस्तानों में चुभ रही थी। हेलीकॉप्टर नीचे उतर रहा था, उसके स्किड

अब पुल के स्तर पर थे, दरवाज़े पर तैनात गनर दिखाई दे रहा था, हथियार ताने खड़ा था।

एक मेगाफोन से तेज़ आवाज़ गूंजी, जो कान फाड़ देने वाले रोटर के शोर के बीच भी कर्कश थी: "विक्रम राठौर! मैं सीबीआई की इंस्पेक्टर मीरा सिंह बोल रही हूँ। पुल चारों तरफ से घिरा हुआ है। बचने का कोई रास्ता नहीं है। कलाकृतियों और खुद को सौंप दीजिए, हम इस मामले को शांतिपूर्वक सुलझा सकते हैं। यह मेरा वचन है।"

विक लगातार चलता रहा, उसकी निगाहें सामने टिकी हुई थीं, वह सोच-विचार कर रहा था। मीरा की आवाज़ में अधिकार था, लेकिन साथ ही एक व्यक्तिगत स्पर्श भी —वर्षों की खोज उन शब्दों में समाहित थी।

हेलिकॉप्टर और करीब आ गया, हवा का बहाव तेज़ होता गया, जिससे प्रार्थना के झंडे बेकाबू होकर फड़फड़ाने लगे। "राठौर! ये तुम्हारी आखिरी चेतावनी है! अवंतिका शर्मा —तुम रॉ की संपत्ति हो। ठंड से बचने के लिए अंदर आ जाओ!"

और फिर सब कुछ बेहद गलत हो गया।

राइफल की गोली जैसी आवाज़—हेलीकॉप्टर से नहीं, बल्कि पुल से ही। सदियों से दबी हुई सूक्ष्म दरारों और हाल ही में पड़े अत्यधिक भार के कारण एक प्राचीन मुख्य केबल टूट गई। टूटते ही स्टील चीख उठा।

पुल अचानक एक तरफ ज़ोर से हिल गया। राज चीख उठा, उसका पैर एक सड़े हुए तख्ते में धंस गया और टांग खाई में लटक गई। हरि ने सहज ही बचे हुए तार को पकड़ लिया, उसका भारी बैग बेकाबू होकर झूल रहा था, मानो उसे गिराने की धमकी दे रहा हो।

विक ने यह सब धीमी गति से होते हुए देखा—राज का संतुलन पूरी तरह बिगड़ गया, वह किनारे की ओर फिसलने लगा, उसके हाथ चिकनी लकड़ी पर पकड़ बनाने के लिए बेताब थे। समय थम सा गया। विक ने बिना सोचे-समझे आगे बढ़कर राज की कलाई को लोहे की पकड़ से जकड़ लिया, ठीक उसी समय जब वह किनारे से नीचे गिरने वाला था।

अचानक पड़े लगभग सौ किलो के भार ने विक को भी लगभग खींच लिया। उसका कंधा दर्द से चीख उठा, उसके जूते बर्फीली तख्तियों पर फिसल रहे थे। पुल उनके नीचे हिल गया, एक और तार चीख उठा।

उसके पीछे, आन्या का हाथ उसकी बेल्ट पर शिकंजे की तरह जकड़ा हुआ था, मानो

उसे पूरी ताकत से रोके हुए हो। "खींचो!" वह चिल्लाई, उसकी मांसपेशियां तन रही थीं और उसके जूते एक बीम पर टिके हुए थे।
उन्होंने अपनी अटूट इच्छाशक्ति से राज को वापस पुल पर खींच लिया। वह हांफते हुए, बेतहाशा सांस लेते हुए, आँखों में भयानक भय लिए, और टैटू वाले हाथों को अनियंत्रित रूप से कांपते हुए वहीं गिर पड़ा।
"जल्दी करो!" तेनज़िन की आवाज़ तेज़ थी, लेकिन संयमित थी। "दूसरा केबल खराब हो गया है! आखिरी स्पैन को पूरा करो!"
वे भागे। पुल उनके नीचे ऐसे मुड़ा और हिलने लगा जैसे कोई जीवित प्राणी अपनी मृत्यु की पीड़ा में हो। उनके पीछे, और भी तारें बंदूक की गोली की आवाज़ के साथ टूट गईं। तख्ते खाई में गिर पड़े, लुढ़कते हुए खाई में जा गिरे। ढांचा बिखर रहा था। विक के फेफड़े जल रहे थे, उसके पैर कमजोर लकड़ी के सहारे चल रहे थे। बीस मीटर। पंद्रह। दस।
जैसे ही पुल का मुख्य केबल एक अंतिम, प्रलयकारी ध्वनि के साथ टूटा, वे ठोस ग्रेनाइट की चट्टान पर जा गिरे। पूरी संरचना लकड़ी, स्टील और प्रार्थना झंडों के ढेर के रूप में खाई में गिर पड़ी, और दुनिया के अंत जैसी ध्वनि के साथ धुंध से घिरे शून्य में नीचे की ओर लुढ़कती हुई चली गई। गर्जना घाटी की दीवारों में गूंजती रही, लंबी और भयानक।
वे किसी तरह पहुँच गए थे। बस किसी तरह।
हांफते हुए, चट्टानों के सहारे गिर पड़े वे लोग नीचे नदी में गायब होते मलबे को देखते रहे। इतनी ऊंचाई से किसी के बचने की कोई संभावना नहीं थी।
विक ने खाई के उस पार पीछे मुड़कर देखा। दूर किनारे पर मीरा सिंह खड़ी थीं, उनकी आँखों में दूरबीन थी, इतनी दूरी से भी उनके चेहरे पर दृढ़ निश्चय के भाव स्पष्ट थे। हार नहीं—दृढ़ संकल्प। उन्होंने अपना हथियार नीचे किया और रेडियो पर बात की।
हेलीकॉप्टर तुरंत उत्तर की ओर मुड़ गया और वैकल्पिक मार्गों, हेलीपोर्टों या लंबी-लाइन निकासी बिंदुओं की तलाश करने लगा।
"अथक," अन्या ने बुदबुदाते हुए अपने कंधे को रगड़ा जहाँ उसने उसे सहारा दिया था। तेनज़िन बिना रुके उन्हें मठ की ओर जाने वाले अंतिम पहाड़ी रास्ते पर ले गया। चढ़ाई बेहद कठिन थी—प्राचीन प्रार्थना चक्रों और "ओम मणि पद्मे हम" उत्कीर्ण मणि पत्थरों से घिरे जंगलों से होकर गुजरने वाले घुमावदार रास्ते बेहद खड़ी ढलान वाले थे। जब वे

द्रपुंग गोम्पा के भारी लकड़ी के द्वारों तक पहुँचे, तब तक वे सभी अत्यधिक थक चुके थे और भारी पैरों से लड़खड़ाते हुए चल रहे थे।

एक बुजुर्ग भिक्षु प्रवेश द्वार पर इंतजार कर रहे थे—शांत, बेफिक्र, उनके केसरिया वस्त्र बर्फ के बीच स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, मानो सरकारी बलों से भागते हुए फटेहाल भगोड़े इस पवित्र स्थान में रोजाना आते हों।

"आश्रय स्थल," तेनज़िन ने औपचारिक तिब्बती भाषा में कहा, एक घुटने पर बैठकर, हथेलियों को आपस में जोड़ते हुए। "हम गेलुग आतिथ्य के प्राचीन नियम का आह्वान करते हैं। धर्म शुद्ध इरादे से शरण लेने वालों की रक्षा करता है।"

भिक्षु ने उन्हें ऐसी निगाहों से देखा मानो उनकी आत्मा को भेद रही हों, उनमें थकावट, लालच, हताशा और कुछ गहरा भाव था—मुक्ति की झलक जो उनके भीतर संघर्ष कर रही थी। उनकी निगाहें पहले विक पर टिकीं, फिर आन्या पर, और फिर कलाकृतियों को छुपाने वाले थैलों पर। पल अनंत काल में सिमट गए।

अंत में, उन्होंने सिर हिलाया, एक तरफ हटते हुए भीतरी आंगन की ओर इशारा किया। "धर्म सच्चे मन से उसकी खोज करने वालों की रक्षा करता है," उन्होंने टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में उत्तर दिया, उनकी आवाज़ प्रार्थना के झंडों से गुज़रती हवा जैसी थी। "लेकिन शरण का अर्थ परिणामों से मुक्ति नहीं है। यह केवल उन पर विचार करने का समय देता है। अंदर आइए। रिनपोचे आपका इंतज़ार कर रहे हैं।"

उनके पीछे भारी द्वार चरमराते हुए बंद हो गए, मानो तेज़ हवा, पीछा करने वालों और दुनिया से उन्हें बाहर कर दिया हो। कई दिनों में पहली बार वे सुरक्षित थे।

लेकिन विक को भिक्षु के शब्दों का भार बर्फीले हिम की तरह महसूस हुआ। अब परिणामों पर विचार करने का समय था। पहाड़—और अब मठ—सब देख रहे थे।

अध्याय 10

पहिए का घूमना

ड्रेपुंग गोम्पा — तीन दिनों का अभयारण्य

ड्रेपुंग गोम्पा के प्राचीन पत्थर के आलिंगन में तीन दिन का विश्राम थम सी गया। यह मठ पहाड़ की ढलान में तराशे गए ठंडे गलियारों का एक भूलभुलैया था, जिसकी दीवारों पर बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान के दृश्यों को दर्शाने वाले धुंधले भित्तिचित्र बने हुए थे—

मंडल जगत, शांत बुद्ध, क्रोधित देवता, सभी मौन दृष्टि से देख रहे थे। भिक्षुओं ने शांत भाव से चलते हुए उन्हें एक साधारण कक्ष दिया: खुरदरी पत्थर की दीवारें, फर्श पर बिछी चटाइयाँ और एक घी का दीपक जिसकी टिमटिमाती परछाइयाँ थीं। उन्हें काफी हद तक अकेला छोड़ दिया गया, उन्हें गहन शांति के वातावरण में विश्राम करने की अनुमति दी गई, जो उस निरंतर अराजकता के बिल्कुल विपरीत था जिससे वे भागकर आए थे।

दूसरे दिन, जिस वृद्ध भिक्षु ने उन्हें प्रवेश दिया था, वह उनसे मिलने आया। वह ठंडे पत्थर के फर्श पर विक के सामने पालथी मारकर बैठ गया, मानो एक शांत, शाश्वत उपस्थिति हो। कमरे में घी के दीपक की हल्की सी आवाज़ के अलावा सन्नाटा छाया हुआ था। उसने विक को ऐसी आँखों से देखा मानो उसने सदियों की मानवीय मूर्खता और बुद्धिमत्ता को देखा हो।

अंत में भिक्षु ने कोमल, गूंजती हुई आवाज़ में कहा, "तुम बहुत बड़ा बोझ ढो रहे हो। न केवल अपने थैलों में, धातु और चर्मपत्र के उन बोझों में, बल्कि अपने हृदयों में भी। जो तुम पर्वत से चाहते हो, पर्वत ने वह पहले ही दे दिया है। सवाल यह है कि क्या तुम्हारे पास उसे ग्रहण करने की बुद्धि है।"

"मुझे समझ नहीं आ रहा," विक ने जवाब दिया, लंबे समय तक इस्तेमाल न होने के कारण उसकी आवाज़ कर्कश हो गई थी, एक अजीब सी थकावट उसकी हड्डियों में समा गई थी जो शारीरिक थकावट से कहीं अधिक गहरी थी। उसने ब्रह्मशिरा को कसकर पकड़ रखा था, सीसे का गोला उसके हाथों में गर्म था, और वह उसकी हल्की सी स्पंदन महसूस कर रहा था।

“पुराने राजा जिन्होंने अपने खजाने छुपाए,” भिक्षु ने ब्रह्मसिर पर निगाह डालते हुए कहा। “वे चोरों से नहीं डरते थे। वे खुद से डरते थे। अपनी बनाई हुई चीज़ों से। इसलिए उन्होंने न केवल पत्थर और बर्फ के जाल बनाए, बल्कि मानव स्वभाव के ही जाल बनाए। जिस चीज़ को तुम सबसे कसकर पकड़ते हो, वही तुम्हें सबसे पूरी तरह नष्ट कर देगी। उसकी शक्ति के लिए तुम्हारा लालच ही अंतिम जाल है।” वे रुके, उनकी आँखें भेदक थीं। “धर्म चक्र निरंतर घूमता रहता है। यह संतुलन सिखाता है। जीवन और मृत्यु। सृजन और विनाश। अधिकार और मुक्ति।”

भिक्षु के जाने के बाद, विक सीसे के गोले के साथ अकेला बैठ गया। उसके हाथों में वह गोला गर्म और लगभग सजीव सा लग रहा था, एक हल्की, स्थिर कंपन के साथ

जो अब शक्ति से ज़्यादा एक चेतावनी जैसी लग रही थी। इस हताश खोज की शुरुआत के बाद पहली बार, उसे कुछ संदेह जैसा महसूस हुआ। कलाकृति की वास्तविकता के बारे में नहीं, बल्कि उसके उद्देश्य के बारे में। क्या पता असली जाल न तो गिरती बर्फ हो और न ही सशस्त्र पीछा, बल्कि यह हो—वह कपटी निश्चितता कि इस शक्ति को प्राप्त करने से वह किसी तरह पूर्ण हो जाएगा, उसे मान्यता मिल जाएगी, यह साबित हो जाएगा कि उसकी सभी निर्मम गणनाएँ सही थीं? क्या पता यह केवल उस खालीपन को उजागर कर दे जिसे वह भरने की कोशिश कर रहा था?
तीसरे दिन, जब उनकी शरण की अवधि समाप्त होने वाली थी, मठ से एक दूत ने उन्हें सूचित किया: इंस्पेक्टर मीरा सिंह ने अंतिम बातचीत का अनुरोध किया है।
वह अकेली, निहत्थी आई थी; मठ के प्रांगण में प्रवेश करते समय उसकी आकृति पहाड़ों की तेज रोशनी में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। उसके चेहरे पर थकान साफ झलक रही थी, लेकिन उसकी तेज और स्थिर आँखें अटूट दृढ़ संकल्प से भरी हुई थीं। वे मठ के मुख्य प्रार्थना कक्ष में मिले, जो एक विशाल, गूंजता हुआ स्थान था, जहाँ हजारों टिमटिमाते घी के दीयों की खामोश निगाहें थीं, जिनकी छोटी-छोटी लपटें शांत हवा में नाच रही थीं।
"विक्रम राठौर, मैं सात साल से तुम्हारा पीछा कर रही हूँ," मीरा ने बिना किसी भूमिका के कहा, उसकी आवाज़ सन्नाटे को चीरती हुई। "सात साल तक बाल-बाल बचने, बेकार सुराग मिलने और तुम्हारे पीछे छोड़े गए अराजकता के निशान के। क्या तुम जानते हो कि मैंने इस दौरान क्या सीखा है?"
"क्या मैं दौड़ने में बहुत अच्छा हूँ?" विक ने कहा, उसके होठों पर उसकी पुरानी व्यंग्यात्मक मुस्कान की एक झलक थी।
"तुम मुझसे नहीं, खुद से भाग रहे हो। हर अपराध, हर चोरी, हर विश्वासघात—तुम कुछ साबित करने की कोशिश कर रहे हो। कि तुम उन नियमों से ऊपर हो जिन्होंने तुम्हें सेवा करते समय बांध रखा था। कि तुम उस वफादार सैनिक से कहीं बढ़कर हो जिसे उन्होंने त्याग दिया था।" वह थोड़ी देर रुकी, उसकी निगाहें स्थिर और अटल थीं। "लेकिन तुम नहीं हो। तुम बस एक ऐसे इंसान हो जिसने एक चुनाव किया और यह स्वीकार नहीं कर पा रहा कि वह गलत था।"
विक को तीव्र क्रोध का अनुभव हुआ, लेकिन साथ ही एक परेशान करने वाली अनुभूति भी हुई। "इंस्पेक्टर, आपको मेरे फैसलों के बारे में कुछ नहीं पता।"

"मुझे पता है कि तुम रॉ के सबसे बेहतरीन ऑपरेटिव थे," उसने शांत लेकिन दृढ़ स्वर में जवाब दिया। "मुझे पता है कि अफगानिस्तान में आम नागरिकों की जान लेने वाले आदेशों पर सवाल उठाने के बाद तुम्हें बर्खास्त कर दिया गया था। मुझे पता है कि तुम अपील कर सकते थे, बर्खास्तगी के खिलाफ लड़ सकते थे, सिस्टम में बने रह सकते थे और अंदर से ही इसे ठीक करने की कोशिश कर सकते थे। इसके बजाय, तुमने यह मान लिया कि पूरा सिस्टम भ्रष्ट है और खुद वही बन गए जिसके खिलाफ तुमने कभी लड़ाई लड़ी थी। तुमने बीमारी का इलाज बनने के बजाय, बीमारी का लक्षण बनना चुना।"

मीरा के शब्दों ने विक की अपेक्षा कहीं अधिक गहरा आघात पहुँचाया। क्योंकि वे आंशिक रूप से सत्य थे। अफ़गानिस्तान मिशन, जिसने व्यवस्था में उसके विश्वास को चकनाचूर कर दिया था, वही क्षण था जब उसका आंतरिक मार्गदर्शन टूट गया। उसने अपने इस कदम को एक प्रतिक्रिया, एक आवश्यक बुराई बताकर उचित ठहराया था, लेकिन मीरा के शब्दों ने उस पर उसी निराशावाद के आगे घुटने टेकने का आरोप लगाया, जिससे लड़ने का वह दावा करता था।

"आपका मतलब क्या है, इंस्पेक्टर?"

मेरा मतलब यह है कि अभी, इस समय, आपके पास एक विकल्प है। आप भागते रह सकते हैं, लेते रह सकते हैं, हर उस चीज़ को नष्ट करते रह सकते हैं जिसे आप छूते हैं, उस शक्ति की खोज में जो आपको कभी भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं करेगी। या आप रुक सकते हैं। कलाकृतियों को सौंप दें, अपने कर्मों के लिए न्याय का सामना करें, और शायद—बस शायद—उस दुनिया से बदला लेने से कहीं अधिक मूल्यवान कुछ पा लें जिसने आपको निराश किया है।

"तुम मुझसे सब कुछ त्यागने को कह रहे हो," विक ने कहा, ब्रह्मशिरा पर उसकी पकड़ और कस गई।

"मैं आपसे कुछ भी ऐसा छोड़ने के लिए नहीं कह रही जो वास्तव में मायने रखता हो। ये कलाकृतियाँ संग्रहालयों में होनी चाहिए, विद्वानों द्वारा अध्ययन की जानी चाहिए, कानूनों द्वारा संरक्षित होनी चाहिए। ब्रह्मसिर—" उसने सीसे के गोले की ओर देखा, उसके चेहरे पर चिंता थी। "उसे शायद नष्ट कर देना चाहिए। या कम से कम, सबसे सख्त और सुरक्षित प्रोटोकॉल के तहत उसका अध्ययन किया जाना चाहिए। आप जानते हैं कि मैं सही कह रही हूँ। आपने देखा है कि यह क्या कर सकता है, वह पूरी

व्यवस्था किस चीज को रोकने के लिए बनाई गई थी।"
विक ने अपने हाथों में पकड़ी ब्रह्मसिरा पर नज़र डाली। यह एक ऐसा हथियार था जिसे प्राचीन राजाओं ने बनवाया था, जो इसके खतरे को इतनी अच्छी तरह समझते थे कि उन्होंने इसे ऐसे जालों के पीछे छिपा रखा था जो इसे पाने की लालसा रखने वाले किसी भी व्यक्ति को मार डालते थे। जिनमें वे स्वयं भी शामिल थे। भिक्षु के शब्द उसके मन में गूंज उठे: जिस चीज़ को तुम सबसे कसकर पकड़ोगे, वही तुम्हें सबसे पूरी तरह नष्ट कर देगी।
"अन्या का क्या होगा?" उसने पूछा, उसकी आवाज़ इरादे से कहीं ज़्यादा नरम थी।
"अवन्तिका शर्मा। क्या उस पर मुकदमा चलेगा?"
"यह सिर्फ मेरा फैसला नहीं है। लेकिन मैं नरमी बरतने की सिफारिश कर सकता हूं। वह हमारी ही एक सदस्य थी जिससे गलती हुई। समय और जवाबदेही मिलने पर गलतियों को माफ किया जा सकता है। उसका भाग जाना, खुफिया जानकारी चुराना —ये अपराध हैं। लेकिन संपर्क के बाद की उसकी हरकतें, उसकी वफादारी में बदलाव... ये एक जटिल स्थिति का संकेत देते हैं।"
प्रार्थना कक्ष के द्वार से, अन्या ने स्पष्ट और दृढ़ स्वर में कहा, "मेरे लिए बातचीत मत करो, राठौर। मैं अपने फैसले खुद लेती हूँ।"
वह हॉल में दाखिल हुई, उसी सहजता और कुशलता से आगे बढ़ रही थी जिसने उसे RAW के सर्वश्रेष्ठ ऑपरेटिव्स में से एक बना दिया था। उसके हाथों में तिजोरी से बरामद किए गए तीन शेष अस्त्र थे, जिनकी कांस्य-टिन की सतहें हल्की चमक रही थीं। वह विक के पास से गुजरी, उसकी निगाहें एक पल के लिए विक की निगाहों से मिलीं, मानो उनकी साझा यात्रा और अलग-अलग रास्तों की मौन स्वीकृति हो।
"मैंने अपनी छद्म पहचान बनाने में तीन साल लगाए," अन्या ने मीरा को संबोधित करते हुए कहा, लेकिन उसके शब्द विक के लिए भी थे। "तीन साल तक मैं किसी और का रूप धारण करके आपराधिक गिरोहों में घुसपैठ कर उन्हें अंदर से ही नष्ट कर सकी। और तुम्हें पता है मैंने क्या सीखा? हम और उनमें बस यही फर्क है कि हम दिखावा करते हैं कि हमारी हिंसा किसी बड़ी मंशा के लिए है। हम इसे 'राष्ट्रीय सुरक्षा', 'स्थिरता', 'न्याय' कहते हैं। लेकिन कभी-कभी, यह सिर्फ नियंत्रण होता है।"
उसने अपने सामने वेदी पर, ब्रह्मशिरा के बगल में, अस्त्रों को सावधानीपूर्वक रख दिया। "अब मैं दिखावा करना बंद कर चुकी हूँ। लेकिन अब मैं भागना भी बंद कर

चुकी हूँ।"
उसने मीरा की ओर रुख किया, उसके चेहरे पर दृढ़ संकल्प स्पष्ट था। "मैं मुकदमे का सामना करूंगी। परित्याग के लिए, चोरी के लिए, हर चीज के लिए जवाब दूंगी। लेकिन ये—" उसने अस्त्रों और ब्रह्मशिरा की ओर इशारा किया। "इन्हें मैं स्वेच्छा से समर्पित कर रही हूं, एक अपराधी के रूप में नहीं, बल्कि उस व्यक्ति के रूप में जो अंततः समझ गई है कि पांडव क्या जानते थे: कुछ शक्ति इतनी खतरनाक होती है कि किसी के लिए भी उसका प्रयोग करना असंभव है। किसी भी सरकार, किसी भी राष्ट्र, किसी भी व्यक्ति के लिए।"
विक को अपने चारों ओर वह क्षण साकार होता हुआ महसूस हुआ। मीरा द्वारा वर्णित चुनाव, धर्म चक्र का निरंतर घूमना—वह सब वास्तविक और तात्कालिक हो गया था। मीरा द्वारा वर्णित शून्य, वह खालीपन जिसे वह शक्ति से भरने का प्रयास कर रहा था, ब्रह्मशिरा की ध्वनि में प्रतिध्वनित हो रहा था।
वह लड़ सकता था। हरि और तेनज़िन के साथ भागने की कोशिश करता, जितना सामान ले जा सकता था उसे लेकर उन नेटवर्कों में गायब हो जाता जिन्हें बनाने में उसने सालों लगाए थे। भागता रहता, सामान लेता रहता, और यह साबित करता रहता कि नियम उस पर लागू नहीं होते।
या फिर वह रुक सकता है।
ब्रह्मसिरा उसके हाथों में गर्माहट से स्पंदित हो रहा था, और अंततः वह समझ गया कि यह स्पंदन क्या था: कोई शक्ति नहीं जो बेकाबू होने के लिए तैयार थी, बल्कि एक चेतावनी थी। उन राजाओं का अंतिम संदेश जो विश्व-परिवर्तनकारी हथियार बनाने में सक्षम थे और इतने बुद्धिमान थे कि वे जानते थे कि उन्हें दफना देना चाहिए। इसे मात्र अपने पास रखना ही इसका बंदी बन जाना था।
कुछ जीतें वास्तव में हार का छिपा हुआ रूप थीं।
विक ने ब्रह्मसिरा को उनके बीच, अस्त्रों के बगल में, वेदी पर रख दिया। वह एक हल्की सी आवाज़ के साथ स्थापित हुआ, उसकी गूंज मानो शांत हो गई, मानो संतुष्ट हो।
“सोना,” उसने धीरे से कहा, उसकी आवाज़ अभी भी कर्कश थी, लेकिन उसमें एक नया, हल्कापन था। “उसका क्या होता है?”
"सरकार को लौटा दिया गया है," मीरा ने कहा, उनके चेहरे के भाव लगभग न के

बराबर नरम हो गए। "यह ऐतिहासिक संपत्ति है।"
"भले ही मैंने इसे वापस पाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली हो?"
"राठौर, तुमने इसे चुराने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली। इसमें फर्क है।"
विक ने हैरानी से हल्की सी हंसी हंसी, जो शायद ही कभी उसके मुंह से निकलती थी। "तुम सही कह रहे हो। मैंने किया।" उसने प्रार्थना कक्ष में चारों ओर देखा, भित्ति चित्रों और मंत्रों में सदियों से संचित ज्ञान को देखा, फिर उस भिक्षु को देखा, जो रहस्यमय निगाहों से उसे देख रहा था। "यहां के भिक्षु—वे दान से इस स्थान का रखरखाव करते हैं। क्या होगा अगर सोने को दान माना जाए? ऐतिहासिक कलाकृतियों को संरक्षण और अध्ययन के लिए एक धार्मिक संस्था को लौटा दिया जाए?"
मीरा ने इस पर विचार किया, उसकी आँखों में व्यावहारिक गणना की एक झलक दिखाई दी। "इसके लिए दस्तावेज़ीकरण, निगरानी, पारदर्शिता और एक प्रतिष्ठित बोर्ड द्वारा प्रबंधित निधि की आवश्यकता होगी।"
"लेकिन यह कानूनी होगा," विक ने जोर देकर कहा।
"यह कानूनी होगा।"
"तो मैं यही प्रस्ताव रखता हूँ। पूर्ण समर्पण। ब्रह्मशिरा, अस्त्र, ग्रंथ—ये सब उचित संस्थानों को सौंप दिए जाएँ। सोना ड्रेपुंग गोम्पा को एक बंदोबस्ती के रूप में दिया जाए, जिसका प्रबंधन इतिहासकारों और धार्मिक विद्वानों द्वारा इस पवित्र स्थल के संरक्षण और प्राचीन तकनीकों के अध्ययन के लिए किया जाएगा। और मैं—" वह रुका, एक गहरी साँस ली। "मैं अपने सभी अपराधों के लिए मुकदमे का सामना करता हूँ। और मैं पूरी तरह से सहयोग करता हूँ।"
हॉल में सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय घी के दीयों की हल्की फड़फड़ाहट के, जिनकी छोटी-छोटी लपटें विक की आत्मा में चल रही शांत क्रांति को प्रतिबिंबित कर रही थीं।
"क्यों?" मीरा ने आखिरकार पूछा, उसकी आवाज़ में सच्ची जिज्ञासा थी, साथ ही कुछ ऐसा भाव भी था जो उसने पहले कभी नहीं सुना था—शायद सम्मान। "अब क्यों, इन सब के बाद?"
विक ने हिमनद के ढहने के बारे में, प्राचीन जाल के ठीक उसी तरह सक्रिय होने के बारे में, और पांडवों के पहाड़ों में जाने के बारे में सोचा, यह जानते हुए कि वे कभी वापस नहीं लौटेंगे। उसने मीरा के शब्दों के बारे में, और खुद से भागने के बारे में सोचा।

“क्योंकि मैं थक गया हूँ,” उसने सादगी से कहा, उसकी थकान अब मुखौटा नहीं बल्कि एक गहरा सच थी। “खुद से भागते-भागते थक गया हूँ। और शायद इसलिए भी कि वे पुराने राजा मेरी सोच से कहीं ज़्यादा समझदार थे। वे जानते थे कि असली जाल बर्फ और ध्वनि नहीं थी। बल्कि यह विश्वास था कि सत्ता हासिल करने से भीतर का खालीपन भर जाएगा। उन्होंने अपना खजाना यह साबित करने के लिए बनाया था कि यह विश्वास झूठ था।”

मीरा ने धीरे से सिर हिलाया। "मुझे व्यवस्था करनी होगी। कई एजेंसियों के साथ समन्वय करना होगा। इसमें समय लगेगा।"

"मैं कहीं नहीं जा रहा," विक ने शांति के प्राचीन प्रतीक, शांत और निर्मल मठ को देखते हुए कहा। उसे बहुत लंबे समय बाद पहली बार सुकून का अनुभव हुआ।

छह महीने बाद, इंस्पेक्टर मीरा सिंह वसुधारा घाटी में कड़ाके की ठंड से बचने के लिए खुद को पूरी तरह से लपेटे खड़ी थीं। घाटी पूरी तरह बदल चुकी थी। सेराक का धंसाव इतना भीषण था कि शुरुआती सर्वेक्षणों से पता चला कि मूल तहखाना अब तीन सौ मीटर मोटी जमी हुई बर्फ और हिम के नीचे दब गया था। भूवैज्ञानिकों और पुरातत्वविदों ने सावधानीपूर्वक इस नए, अस्थिर भूभाग की खुदाई की, उनका प्रयास अत्यंत श्रमसाध्य था। तहखाने तक पहुँचने में वर्षों लग जाएँगे, यदि वे कभी पहुँच भी पाए। शायद यही उचित था। पहाड़ ने अपने प्रकोप में अपना रहस्य पुनः प्राप्त कर लिया था।

विक की टीम द्वारा बरामद कलाकृतियों का अध्ययन भारत भर के संस्थानों में किया जा रहा था, जो अब सरकार के सख्त नियंत्रण में हैं। अस्त्र ठीक वही साबित हुए जो अन्या ने सिद्धांतित किया था—अत्यंत परिष्कृत ध्वनिक हथियार, जिनके सिद्धांतों को अब आधुनिक भौतिक विज्ञानी उन्नत अनुनादी आवृत्तियों और पदार्थ विज्ञान के प्रयोगों द्वारा समझ पा रहे हैं। ब्रह्मसिरा अभी भी सीलबंद था, उसकी धीमी गूंज पर लगातार नज़र रखी जा रही थी, उसकी वास्तविक सामग्री और परम शक्ति एक रहस्य थी जिसे शायद कभी पूरी तरह से सुलझाया न जा सके, और जिसका प्रयास करना भी बहुत खतरनाक था।

संस्कृत विद्वानों की टीमें इन ग्रंथों का अनुवाद कर रही थीं, जिनमें प्राचीन क्षमताओं के बारे में मूलभूत मान्यताओं को चुनौती देने वाला गणितीय और इंजीनियरिंग ज्ञान प्रकट हो रहा था। इनमें से कुछ को प्रकाशित किया जाएगा, जिससे ध्वनि इंजीनियरिंग से

लेकर पदार्थ विज्ञान तक के क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव आएंगे। कुछ को अत्यधिक गोपनीय रखा जाएगा, क्योंकि उन्हें सार्वजनिक रूप से साझा करने के लिए अत्यधिक संवेदनशील माना जाएगा।

स्वर्ण दान ने ड्रेपुंग गोम्पा का कायापलट कर दिया था। इतिहासकारों, धार्मिक विद्वानों और सरकारी अधिकारियों के एक संयुक्त बोर्ड द्वारा प्रबंधित यह गोम्पा हिमालयी इतिहास, वैदिक इंजीनियरिंग और बौद्ध दर्शन के अध्ययन का एक समृद्ध केंद्र बन रहा था। भिक्षुओं ने इस दान को शांत भाव से स्वीकार किया, मानो वे सदियों से इसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

विक्रम राठौर बारह साल की सजा काट रहा था, जो उसके पूर्ण सहयोग और शांतिपूर्ण समझौते के कारण आजीवन कारावास से कम कर दी गई थी। मीरा कभी-कभी उससे मिलने जाती थी, एक जर्जर मेज पर शतरंज खेलती थी और इस बात पर बहस करती थी कि क्या उसका आत्मसमर्पण प्रायश्चित था या अब तक की उसकी सबसे चालाक चाल। उसे शक था कि यह दोनों ही बातें थीं।

अवन्तिका शर्मा को हल्की सज़ा मिली थी—तीन साल की, जिसमें से अधिकांश समय उन्होंने मुकदमे के दौरान और अपने निरंतर सहयोग के कारण पहले ही काट लिया था। उन्हें रॉ में खुफिया नैतिकता सलाहकार के रूप में एक पद की पेशकश की गई थी, जिसमें उन्हें नए ऑपरेटिव्स को यह सिखाना था कि जिनका आप पीछा कर रहे हैं, वही बन जाने के क्या खतरे हैं। उन्होंने यह पद स्वीकार कर लिया था, और अब उनकी विशेषज्ञता दूसरों को उनकी जैसी गलतियाँ करने से रोकने में सहायक होगी।

राज पटेल अकादमिक जगत में एक तरह से सेलिब्रिटी बन चुके थे, वे युवा इतिहासकार थे जिन्होंने पांडवों के खजाने को खोजने में मदद की थी। वे एक बेस्टसेलर किताब लिख रहे थे, हालांकि मीरा को संदेह था कि वे जो कहानी सुना रहे थे, उसे जनता के लिए काफी हद तक संशोधित किया गया था।

तेनज़िन दोरजे शेरपाओं की तरह पहाड़ों में गायब हो गया था। मीरा को कभी-कभार एक बूढ़े व्यक्ति के बारे में अफवाहें सुनने को मिलती थीं जो विस्मयकारी यात्रियों को राजाओं और उनके खजानों के बारे में रोमांचक कहानियां सुनाता था, लेकिन वह कभी भी उनकी पुष्टि नहीं कर पाई थी।

हरि सिंह ने चुपचाप आत्मसमर्पण कर दिया था और विक के कुछ खतरनाक संपर्कों के खिलाफ गवाही देने के बदले में समझौता कर लिया था। अब वह बाहर था और

निजी कंपनियों के लिए सुरक्षा सलाहकार के रूप में काम कर रहा था, एक ऐसा जीवन जी रहा था जो शायद पहले से कहीं अधिक ईमानदार था, भले ही पूरी तरह से कानूनी न हो।

मीरा खुदाई स्थल से मुड़ गई, हवा उसके बालों को लहरा रही थी। उसने बेस कैंप की ओर लंबी पैदल यात्रा शुरू की, उसके बूटों की चरमराहट विशाल सन्नाटे में गूंज रही थी। उसके पीछे, पहाड़ शांत उदासीनता में खड़े थे, मानो अपने रहस्य छुपाए हुए हों। पांडवों का जाल ठीक उसी तरह कारगर साबित हुआ जैसा उन्होंने योजना बनाई थी—खजाने की तलाश करने वालों को मारकर नहीं, बल्कि उन्हें यह एहसास दिलाकर कि उस खजाने को पाने के बाद वे क्या बन जाएंगे। पर्वत ने उन्हें सिखाया था कि कोई शक्ति इतनी खतरनाक इसलिए नहीं होती कि वह शारीरिक रूप से क्या कर सकती है, बल्कि इसलिए होती है कि वह उसे पाने वालों के बारे में क्या उजागर करती है। पर्वतों को याद था। धर्म का चक्र घूमता रहा। और हिमवत कोष का अंतिम उपदेश तीन हजार वर्षों तक गूंजता रहा, हिमालय की खामोशी में प्रतिध्वनित होता रहा।

अध्याय 11

बुरा अनुभव

तिहाड़ जेल, दिल्ली — कारावास का दूसरा वर्ष

उन दोनों के बीच छोटी सी धातु की मेज पर एक खरोंचों से भरा शतरंज का बोर्ड रखा था, जिसके मोहरे अनगिनत खेलों के कारण घिस चुके थे। विक्रम राठौर अपनी धातु की कुर्सी पर पीछे की ओर झुके बैठे थे, उनकी हथकड़ियों की हल्की सी खनक उस नीरस मुलाकात कक्ष में गूंज रही थी। उनके सामने, इंस्पेक्टर मीरा सिंह हमेशा की तरह पूरी गंभीरता से बोर्ड का अध्ययन कर रही थीं, उनकी उंगलियां रानी पर टिकी थीं, फिर उन्होंने उसे आगे खिसका दिया - चेकमेट।

"राजा फंस गया है," उसने होठों पर हल्की सी मुस्कान लिए कहा। "तुमने फिर से पार्श्व मोर्चे पर अपनी सुरक्षा में ढिलाई बरती है।"

विक बोर्ड को घूर रहा था, हार की अनिवार्यता उसके ऊपर वैसे ही हावी हो रही थी जैसे उसकी सज़ा का जाना-पहचाना बोझ। बारह साल। दो साल हो गए, दस बाकी। उसे इस चाल का अंदाज़ा पहले ही हो जाना चाहिए था। उसे हमेशा चालों का अंदाज़ा

हो जाता था। सिवाय तब जब सबसे ज़्यादा ज़रूरी होता था।
"फंसा हुआ नहीं हूँ," उसने उसकी आँखों में देखते हुए धीरे से कहा। "बस... आत्मसमर्पण का विकल्प चुन रहा हूँ।"
मीरा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "आज दार्शनिक बातें कर रहे हो, राठौर? पहाड़ ने तुम्हें ये सिखाया है?"
उसने तुरंत जवाब नहीं दिया। उसकी निगाहें संकरी, सलाखों वाली खिड़की पर टिक गईं, जहाँ दिल्ली का धुंध से भरा आसमान शीशे पर धंसा हुआ था। कमरे में फ्लोरोसेंट लाइट की हल्की गूंज ही एकमात्र ध्वनि थी, एक नीरस गूंज जो उसे तहखाने की प्रतिध्वनि की याद दिला रही थी—7.83 हर्ट्ज़, पृथ्वी की धड़कन, जो अब जेल की यांत्रिक धड़कन से बदल गई थी।
सच तो यह था कि वह फंसा हुआ था। इन दीवारों, इन जंजीरों, इस सजा से नहीं। असली कैद तो दो साल पहले, ड्रेपुंग गोम्पा में उस आखिरी शतरंज के खेल के बाद वाली रात से शुरू हुई थी। उस रात भिक्षु के शब्दों ने उसे अंदर तक झकझोर दिया था।
पिछली यादें: ड्रेपुंग गोम्पा — दूसरी रात
घी का दीपक टिमटिमा रहा था, जिससे पत्थर के कक्ष में लंबी-लंबी परछाइयाँ पड़ रही थीं। विक जाग रहा था, उसके बगल में रखे उसके थैले से ब्रह्मसिर की हल्की गर्माहट महसूस हो रही थी। बाकी सब सो रहे थे। लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी, प्रार्थना कक्ष में रिनपोचे के शाम के प्रवचन ने उसे भगा दिया था।
"संसार का चक्र," प्राचीन भिक्षु ने मधुर स्वर में कहा, उनकी आवाज़ अगरबत्ती की सुगंध से भरी हवा में गूंज रही थी। "तीन विषों - लालसा, घृणा और अज्ञान - द्वारा संचालित एक चक्र। चोर पहरेदार से नहीं डरता, बल्कि उस खालीपन से डरता है जिसे उसका चुराया हुआ सोना नहीं भर सकता। विजेता हार से नहीं डरता, बल्कि उस सिंहासन से डरता है जो उसकी खोखली आत्मा का प्रतिबिंब है। इससे मुक्त होने के लिए, पहले व्यक्ति को अपने ही हाथों से गढ़ी गई जंजीरों को देखना होगा।"
तब विक ने मुस्कुराते हुए इसे साधुओं की कविता कहकर खारिज कर दिया था। जंजीरें? उसने तो हर बंधन तोड़ दिया था—कानून, सरकारें, नैतिकता खुद। वह कठपुतली नचाने वाला था।
लेकिन उस रात, जब हवा मठ की छतों से होकर सरसरा रही थी, पहला बुरा सपना

आया।
वह वापस तिजोरी में आ गया था। सोना व्यंग्यपूर्ण ढंग से चमक रहा था। अस्त्र अपनी मोहक धुन गुनगुना रहे थे। लेकिन ब्रह्मसिरा... अब उसमें एक अलग ही स्पंदन हो रहा था। शक्ति से नहीं, बल्कि ज्ञान से। ऐसा ज्ञान जिसे केवल वही समझता था—गुप्त प्रतिध्वनित आवृत्तियाँ जो सेनाओं, शहरों, वास्तविकताओं को नष्ट कर सकती थीं। ऐसी आवृत्तियाँ जो उसके मन में सूत्र फुसफुसा रही थीं, वैदिक ध्वनिकी और क्वांटम सिद्धांतों को मिलाकर बने समीकरण, विनाश का एक शस्त्रीकृत संगीत।
उसने विजयी भाव से उसकी ओर हाथ बढ़ाया। लेकिन उसके हाथ मानो किसी भूत की तरह आर-पार हो गए। वह गोला घूमा और उसमें सीसा नहीं, बल्कि एक दर्पण दिखाई दिया। उसकी परछाई उसे घूर रही थी: खोखली आँखें, वर्षों के सोचे-समझे विश्वासघात से जर्जर चेहरा। कराची का मुखबिर, जिसका गला विक ने अपने हाथों से काट दिया था। अफ़ग़ान बच्चा, जो उसी के आदेश पर किए गए ड्रोन हमले में मारा गया। उसका रॉ हैंडलर, जिसे बीते कल की खुफिया जानकारी की तरह भुला दिया गया था।
"तुम आज़ाद हो," उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, उनकी आवाज़ें 7.83 हर्ट्ज़ की एक लय में घुलमिल गईं—एक ऐसी आवृत्ति जो कांच को चकनाचूर कर देती थी, अब उसकी मानसिक शांति को भी चकनाचूर कर रही थी। "तुमने बंधन तोड़ दिया। लेकिन देखो तुमने क्या बना दिया।"
तिजोरी की दीवारें सिकुड़ती गईं, बर्फ नहीं, बल्कि शुद्ध सूचना की सलाखें—अनंत डेटा धाराओं में खुलते स्क्रॉल, मिसाइल साइलो में बदलते अस्त्र, और ब्रह्मसिरा नियंत्रण के एक वैश्विक नेटवर्क में फैलते जा रहे थे। वह भागा, लेकिन ज्ञान उसका पीछा करता रहा, किसी भी भौतिक जंजीर से कहीं अधिक भारी। "यह तुम्हारा पिंजरा है," वह गूंजा। "जिस शक्ति की तुम लालसा करते हो, वह तुम्हें कैद कर रही है।"
वह हांफते हुए, पसीने से तरबतर होकर जागा, ब्रह्मसिरा की गड़गड़ाहट उसके कानों में गूंज रही थी। भिक्षु के शब्द गूंज रहे थे: लालसा, घृणा, अज्ञान। पहली बार, विक ने खुद को छोटा महसूस किया।
Present: Tihar Jail
मीरा की आवाज़ ने उसे वापस होश में ला दिया। "राठौर, होश में आओ। तुम फिर कहीं अंधेरी जगह चले गए हो।"

उसने शतरंज का बोर्ड भुलाकर उसकी निगाहों में देखा। "मठ की तुम्हारी यात्रा के बाद वाली रात। तभी से यह सब शुरू हुआ।"
वह आगे झुकी। "दुःस्वप्न?"
"और भी बुरा। स्पष्टता।" उसने अपनी कनपटी रगड़ी, फ्लोरोसेंट लाइट की झनझनाहट उसकी नब्ज़ के साथ तालमेल बिठा रही थी। "वह साधु... उसने मुक्ति का उपदेश नहीं दिया। उसने मेरा विश्लेषण किया। मुझे वह चक्र दिखाया जिस पर मैं चल रहा था —RAW द्वारा छोड़े गए खालीपन को भरने के लिए सत्ता की लालसा, मुझे धोखा देने वाली व्यवस्था के प्रति घृणा, और इस बात की अज्ञानता कि मैं उससे भी बदतर कैसे बन गया था।"
मीरा ने धीरे से सिर हिलाया। "ब्रह्मसिरा?"
विक की हंसी कड़वी थी। "यह कोई हथियार नहीं, बल्कि एक दर्पण है। उस तहखाने में, मैंने इसे समझा - नक्काशी में छिपे गुप्त संकेत, ऐसी लयबद्ध धाराएँ जो भूगर्भीय कंपन पैदा कर सकती हैं। युद्धों को समाप्त करने का ज्ञान... या उन्हें हमेशा के लिए शुरू करने का। इसे पूरी तरह से केवल मैंने ही देखा। ग्रंथों ने इसकी पुष्टि की। सरकारें इसे हथियार के रूप में इस्तेमाल करेंगी। मैं इसे सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को बेच दूंगा। चाहे कुछ भी हो, दुनिया जलती रहेगी।"
वह और करीब आया, आवाज़ धीमी हो गई। "लेकिन उस ज्ञान को थामे रखना... यह पिंजरा है। गोम्पा के बाद से हर रात, मैं सपने में देखता हूँ कि तिजोरी मेरे दिमाग में फैल रही है। कराची, अफगानिस्तान के भूत—वे ऐसी आवृत्तियों पर गूंजते हैं जो दर्द देती हैं। 7.83 हर्ट्ज़, मेरी खोपड़ी को भेदते हुए। जिस शक्ति का मैंने पीछा किया, वही जेलर बन गई। इन दीवारों के बाहर, मैं इसे आज़ादी से इस्तेमाल कर सकता था, हमेशा के लिए प्रेतवाधित। यहाँ?" उसने सामने की जेल की कोठरी की ओर इशारा किया। "खामोशी। कोई नेटवर्क नहीं, कोई सौदे नहीं। गुनगुनाहट फीकी पड़ जाती है।"
मीरा की आँखों में थोड़ी सी नरमी आई। "तो आत्मसमर्पण हार नहीं थी। यह शरण थी।"
"एकमात्र बंधन जो मुझे खुद से बचाता है।" विक ने खिड़की की ओर देखा, धुंध एक धूसर चादर की तरह फैली हुई थी। "तुम्हें लगता है यह जेल है? ज़रा सोचो, अपने दिमाग में प्रलय का बोझ ढोते हुए, यह जानते हुए कि एक फुसफुसाहट सब कुछ तबाह कर सकती है। पहाड़ ने मुझे सिखाया है: कुछ ज्ञान किसी भी कोठरी से ज़्यादा

सज़ा देते हैं।"
गार्ड ने दरवाजा जोर से पटका। समय समाप्त।
मीरा रुक गई और बोली, "अगले मैच में मैं थोड़ा आराम से खेलूंगी।"
"नहीं," विक ने कहा, उसके अंदर पुराने जोश की एक झलक लौट आई थी। "मुझे अभ्यास की ज़रूरत है। चेकमेट मुझे चुस्त-दुरुस्त रखता है।"
उसके जाने के बाद, विक बोर्ड को घूरता रहा। उसका राजा, कोने में फंसा हुआ, लेकिन फिर भी खड़ा था। बिल्कुल उसकी तरह। हमेशा की तरह, आज रात बुरे सपने आएंगे। लेकिन कंक्रीट और दिनचर्या के इस पिंजरे में, वे सीमित थे। बाहर, दुनिया की डोरियाँ उसके हाथों में थीं, और वे उसे निगल जाएंगे।
सबसे बड़े खजाने वे हैं जिन्हें हम दफन ही रहने देना सीख लेते हैं।